Booster Academy

Way To Success.....

SUBJECT :

मध्यकालीन भारत

BOOSTER NOTES

BOOSTER ACADEMY

भारत पर मुस्लिम आक्रमण

- भारत पर प्रथम मुस्लिम आक्रन्ता अरबी थे।

Note:- भारत में अरबों का प्रवेश सर्वप्रथम मालाबार तट (केरल) से व्यापारियों के रूप में हुआ। अर्थात् भारत में इस्लाम का सर्वप्रथम प्रवेश केरल से हुआ ना कि सिंध से

❖ रावर का युद्ध 20 जून 712

- सिंध का राजा दाहिर v/s अरब आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम।

Note:- राजा दाहिर पराजित व इसकी रानी **रानीबाई** ने दुर्ग की रक्षा करते हुए **'जौहर'** कर लिया, भारतीय इतिहास का यह प्रथम जौहर माना जाता है।

❖ चचनामा (अरबी भाषा) :

- भारत पर अरब आक्रमण का स्त्रोत

Note:- इस पुस्तक की रचना मुहम्मद बिन कासिम के किसी अज्ञात सैनिक द्वारा की गई थी।

Note:- इस पुस्तक का फारसी अनुवाद नासिरूद्दीन कुबाचा के समय **"मुहम्मद अली अबु बक्र कुफी"** के द्वारा किया गया।

- भारत में सर्वप्रथम **जजिया कर** भी मुहम्मद बिन कासिम द्वारा सिंध क्षेत्र में लगया गया।
- अरबों ने भारत में खजूर की खेती एवं ऊंट पालन शुरू किया।
- "हिन्दू" शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अरबों द्वारा ही किया गया।
- अरबों ने सिंधु नदी के किनारे **"महफूजा"** नामक नगर स्थापित किया था।

तुर्क आक्रमण

- गजनी साम्राज्य की स्थापना **अलप्तगीन** ने 962 ई. में की।
- अलप्तगीन का गुलाम सुबुक्तगीन ने 977 ई.में यामिनी वंश की स्थापना की तथा गजनी की गद्दी पर बैठा।

Note:- सुबुक्तगीन प्रथम तुर्क शासक था जिसने भारत पर आक्रमण किया तथा शाही वंश के शासक जयपाल को पराजित किया।

❖ महमूद गजनवी (998-1030)

- सुबुक्तगीन का पुत्र था।

Note:- प्रथम शासक जिसने **सुल्तान** की उपाधि ली।

- उपाधियां – 1. अमीन उल्ल मिलत – मुसलमानों का संरक्षक
  2. यामिन उद् दौला – साम्राज्य का दाहिना हाथ

Note:- महमूद गजनवी ने **खैबर दर्रे** से भारत में प्रवेश किया।

Note:- सर हेनरी इलियट के अनुसार महमूद गजनवी ने भारत पर 17 बार आक्रमण किये जिसमें **16वां आक्रमण 1025 ई.** में **सोमनाथ मंदिर (गुजरात)** पर था।

- इरफान हबीब के अनुसार **"महमूद गजनवी का भारत पर आक्रमण का उद्देश्य धन लूटना था ना कि इस्लाम का प्रचार करना।"**

❖ मुहम्मद गौरी : (शंसबनी वंश का शासक)

- यह गौर साम्राज्य (उत्तरी – पश्चिमी अफगानिस्तान) का शासक था।
- उपाधि – जहां-सोज (विश्व को जलाने वाला)

Note:- मुहम्मद गौरी **गोमल दर्रे** से भारत आया था।

- मुहम्मद गौरी का भारत पर प्रथम आक्रमण 1175 ई. में मुल्तान पर था।

❖ माउण्ट – आबू युद्ध (1178)

- गुजरात का शासक मूलराज IInd v/s मुहम्मद बिन गौरी (पराजित)
  इस युद्ध का नेतृत्व मूलराज IInd
  की विधवा नायिका देवी ने किया।
- मुहम्मद गौरी की भारत में यह पहली पराजय थी।

❖ तराईन के युद्ध

Note:- तराईन के प्रथम युद्ध 1191 में पृथ्वीराज चौहान IIIrd ने मुहम्मद गौरी को पराजित किया एवं तराईन के द्वितीय युद्ध 1192 में मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चाहौन IIIrd को पराजित किया एवं उत्तरी भारत में तुर्क सत्ता की स्थापना की।

- 1194 के चन्दावर के युद्ध में गहडवाल वंश के शासक जयचंद को मुहम्मद गौरी ने पराजित किया।
- 1206 ई. में मुहम्मद गौरी की मृत्यु एवं उसके गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारत में 1206 ई. में **गुलाम वंश** की नींव डाली।
- मुहम्मद गौरी के सिक्कों पर एक तरफ कलिमा खुदा होता था जबकि दूसरी तरफ लक्ष्मी एवं नंदी के चित्र थे। कुछ सिक्कों पर देवनागरी लिपि में **मुहम्मद बिन साम** भी लिखा होता था। इन सिक्कों को **"देहलीवाल सिक्के"** भी कहा जाता है।
- मुहम्मद गौरी के साथ 1192 ई. में मुइनुद्दीन चिश्ती भारत आये थे।
- मुहम्मद गौरी ने **'इक्ता'** परम्परा को शुरू किया तथा इसे एक **संस्था** के रूप में इल्तुतमिश ने शुरू किया।

BOOSTER ACADEMY

दिल्ली सल्तनत (1206-1526)

- तुर्क आक्रमण के बाद भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई। सर्वप्रथम कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसकी नींव डाली और इसे दास वंश अथवा मामलूक वंश कहा गया। कुछ इतिहासकार इसे **इल्बरी वंश** भी कहते हैं।
- 1206 ई. से 1526 ई. तक कुल 5 वंशो ने शासन किया जो क्रमशः मामलूक, खिलजी, तुगलक, सैय्यद और लोदी थे।
- सर्वाधिक समय तक तुगलक वंश (94 वर्ष) और सबसे कम खिलजी वंश (30 वर्ष) तक शासन किया। शासकों में सर्वाधिक समय तक बहलोल लोदी (38 वर्ष) ने शासन किया।

❑ गुलाम / मामलूक वंश (1206-1290 ई.)

❖ कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 -10 ई.)

- गौरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को तराईन के द्वितीय युद्ध के बाद भारतीय क्षेत्र का सूबेदार नियुक्त किया। 1206 ई. तक गौरी के प्रतिनिधि के रूप में शासन किया।
- ऐबक का अर्थ - **''चन्द्रमा का स्वामी''**
- **उपाधियाँ -** मलिक, सिपहसालार, हातिम द्वितीय, लाखबख्श, (दानशीलता, उदारता), कुरान खाँ।
- सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की, ना ही अपने नाम का खुत्बा पढ़वाया।
- 1206 ई. में गौरी की मृत्यु होने पर स्थानीय नागरिकों के अनुरोध पर **लाहौर** को राजधानी बनाकार शासन किया।
- 1208 ई. में गयासुद्दीन महमूद (गौर का उत्तराधिकारी) ने दासता से मुक्त किया तथा सुल्तान स्वीकार किया।
- अपने विरोधियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए।
- **प्रमुख विरोधी -**
  ताजुद्दीन यल्दौज (गजनी)- पुत्री का विवाह
  नासिरूद्दीन कुबाचा (सिंध)- बहिन का विवाह
  इल्तुतमिश - पुत्री का विवाह (बदायूं का गवर्नर)
- **''वजीर''** पद का सृजन किया (फख्र ए मुदव्विर, प्रथम वजीर था)
- हसन निजामी (ताज उल मासिर) व फख्र ए मुदव्विर (अदब उल हर्ब) को संरक्षण दिया।
- 1210 ई. में लाहौर में चौगान खेलते मृत्यु।

❖ आरामशाह (1210-11 ई.)

- कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद उसका पुत्र शासक बना। यह आठ माह तक शासक रहा।
- जून 1211 ई. में युद्ध के मैदान में आरामशाह व विद्रोहियों को परास्त कर इल्तुतमिश शासक बना।

❖ इल्तुतमिश (1211 - 36 ई.)

- **वास्तविक नाम** – अल्तमश
- प्रथम इल्बरी शासक (इल्बरी-तुर्क)
- दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

BOOSTER ACADEMY

- कुतुबुद्दीन के समय यह बदायूँ का गवर्नर था।
- राजधानी को लाहौर से दिल्ली लाया।
- ऐबक का दामाद व गुलाम था।
- **''इक्ता व्यवस्था''** को संस्था का रूप दिया। (शुरू - मुहम्मद गौरी), यह नकद वेतन के बदले भू-स्थानान्तरण था। यह वंशानुगत नहीं था।
- **''तुर्कान - ए- चहलगानी''** का गठन किया, जिसे **'चालीसा दल'** कहते है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख इसामी की पुस्तक **''फुतुह उस सलातीन''** में मिलता है।
- इल्तुतमिश को **''सुल्तान - ए- सईद''**, **'गुलामों का गुलाम'** एवं **'मकबरों का पितामह'** कहा।
- **अरबी पद्धति के दो सिक्के जारी किए।**
  1. **टंका** - चाँदी का सिक्का
  2. **जीतल** - ताँबे का सिक्का
- सिक्कों पर टकसाल का नाम लिखने की परम्परा की शुरूआत की।
- 1229 ई. में खलीफा से अधिकार - पत्र प्राप्त करने वाला दिल्ली सल्तनत का प्रथम वैधानिक सुल्तान था।
- 1221 ई. में ख्वारिज्म शासक जलालुद्दीन मंगबरनी मंगोल शासक चंगेज खाँ से बचने के लिए शरण माँगने आया, इल्तुतमिश ने मंगबरनी को शरण नहीं देकर बुद्धिमत्ता का परिचय दिया और स्वयं के राज्य को मंगोलों से बचा लिया।
- इल्तुतमिश का बड़ा बेटा नासिरूद्दीन महमूद मंगोलों से लडते हुए मारा गया, इसकी स्मृति में दिल्ली में **''मरदसा - ए - नासिरी''** की स्थापना करवायी।
- ग्वालियर अभियाान के दौरान पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी चुना और ग्वालियर विजय के बाद सिक्कों पर रजिया का नाम अंकित करवाया।
- इल्तुतमिश ने सुल्तान के पद को वंशानुगत किया।
- ग्वालियर अभियान के समय इल्तुतमिश ने बलबन को खरीदा था।
- 1236 ई. में इल्तुतमिश की मृत्यु हो गई।

❖ रूक्नुद्दीन फिरोज (1236 ई.)

- अमीरों ने इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद उसके बेटे रूक्नुद्दीन फिरोज को शासक बना दिया। वास्तविक शक्तियाँ इसकी माँ शाह तुर्कान के पास थी। शाह तुर्कान विद्वानों को पुरस्कार देती थी।
- रजिया शुक्रवार को जुम्मे की नमाज के समय लाल वस्त्र (न्याय का प्रतीक) पहन कर शाह तुर्कान के विरूद्ध लोगों से न्याय की माँग की।
- पहली बार दिल्ली की जनता ने उत्तराधिकार के प्रश्न पर स्वयं निर्णय किया और रजिया को शासक घोषित किया।

❖ रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.)

- रजिया जनता के समर्थन से शासिका बनी थी।
- प्रथम व अन्तिम मुस्लिम महिला शासिका थी।

- रजिया दरबार में कुबा (कोट) व कुलाह (टोपी) पहनकर जाया करती थी।
- रजिया के खिलाफ पहला विद्रोह लाहौर के गवर्नर कबीर खाँ ने किया।
- मिन्हाजुद्दीन सिराज की **तबकात ए नासिरी** के अनुसार **''रजिया का महिला होना उसकी असफलता का कारण रहा।''**
- इसामी सलाह देता है कि **''रजिया को सिंहसन पर बैठने के बजाय चरखा सम्भालना चाहिए।''**

❖ बहराम शाह (1240 -1242)

- इसने नए पद **''नायब - ए - मुमालिक''** का सृजन किया।
- प्रथम नायब ए मुमालिक **एतगीन** को नियुक्त किया।
- अब सत्ता के तीन केन्द्र हो गए-सुल्तान, वजीर, नायब
- बलबन को हांसी तथा रेवाड़ी की जागीर प्रदान की।

❖ अलाउद्दीन मसूदशाह (1242-1246 ई.)

- बलबन को अमीर ए - हाजिब नियुक्त किया।

❖ नासिरूद्दीन महमूद (1246-1265 ई.)

- बलबन के सहयोग से शासक बना, वास्तविक शक्ति बलबन के पास थी।
- बलबन ने अपनी पुत्री का विवाह नासिरूद्दीन से किया।
- बलबन को **''उलुग खाँ''** की उपाधि दी और नायब - ए - मुमालिक पद पर नियुक्त किया।
- इसामी के अनुसार कुरान की प्रतिलिपियाँ एवं टोपियाँ बेचकर जीविका चलाता था। साधारण आदतों के कारण इसे **''दरवेश राजा''** कहा है। मिन्हाजुद्दीन सिराज की **''तबकाते नासिरी''** नासिरूद्दीन महमूद को समर्पित है तथा इसे इस पुस्तक में दिल्ली का **"आदर्श सुल्तान"** बताया है।

❖ बलबन (1265 - 1287)

- **मूल नाम -** बहाउद्दीन (इल्बरी - तुर्क)
- बल्बनी वंश का संस्थापक था।
- इल्तुतमिश का गुलाम तथा चालीस दल का सदस्य रहा।
- पालम बावली लेख में बलबन को **विष्णु का अवतार** कहा है।
- **गढमुक्तेश्वर** लेख में बलबन को खलीफा का सहायक कहा है।
- यह रक्त की शुद्धता में विश्वास करता था।
- इसने चालीसा दल का दमन किया।
- बलबन का राजत्व सिद्धांत **''लौह एवं रक्त नीति''** तथा **''प्रतिष्ठा, शक्ति तथा न्याय''** पर आधारित था।
- **इसके अनुसार सुल्तान-** 1. जिल्ल ए इलाही (ईश्वर की छाया)
  2. नियाबत ए खुदाई (ईश्वर का प्रतिनिधि)

BOOSTER ACADEMY

- बलबन का संबंध ईरान के आफरासियाब वंश से था।
- **इसने ईरानी रीति - रिवाज व प्रथाएँ आरम्भ की-**
  1. **सिजदा -** सुल्तान के आगे घुटने टेकना
  2. **पैबोस -** सुल्तान पैर चूमना
  3. **नौरोज -** नववर्ष का त्योंहार
- इसने **"लौह एवं रक्त नीति"** का पालन किया।
- बलबन प्रथम मुस्लिम शासक था जिसने स्वयं को **'जिल्ले इलाही'** कहा।
- बरनी ने बलबन के बारे में कहा था कि **''जब मैं किसी तुच्छ परिवार के व्यक्ति को देखता हूँ तो मेरे शरीर की प्रत्येक नाड़ी क्रोध से उत्तेजित हो जाती हैं।''**
- के. एम.निजामी ने कहा है कि **"बलबन एक उत्तम अभिनेता था और अपने दर्शकों को आधुनिक फिल्मी सितारों की भांति मंत्र मुग्ध रखता था।"**
- बलबन प्रथम सुल्तान था जिसने अपनी **वसीयत** लिखवायी।
- इक्तादारों पर नियंत्रण के लिए **''ख्वाजा''** नामक अधिकारी की नियुक्ति की।
- सामन्तों पर नियंत्रण के लिए **गुप्तचर विभाग/दीवान** ए बरीद की स्थापना की।
- **दीवाने अर्ज** (सैन्य विभाग) की स्थापना की।
- बरनी बलबन की मृत्यु पर लिखता है कि **''बलबन की मृत्यु से दुःखी हुए मलिकों ने अपने वस्त्र फाड डाले और सुल्तान के शव को कब्रिस्तान ले जाते हुए अपने सिर पर धूल फेंकी और चालीस दिन तक बिना बिस्तर के जमीन पर सोये।''**

❖ कैकूबाद (1287-1290 ई.)

- बलबन के अयोग्य पुत्र कैकुबाद को अमीरों ने शासक बनाया।
- यह विलासी प्रवृत्ति का था तथा लकवाग्रस्त हो गया था।

❖ क्यूमर्स

- कैकूबाद को लकवा होने पर अल्पायु में क्यूमर्स को शासक बनाया।
- जलालुद्दीन खिलजी (आरिजे मुमालिक) ने कैकूबाद व क्यूमर्स की हत्या कर दी और खिलजी वंश की नींव डाली।

खिलजी वंश (1290-1320 ई.)

- इस काल की महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि तात्कालिक भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक संरचना में मूलभूत परिवर्तन हुए, प्रशासन में व्यापक स्थानीय भागीदारी बढ़ी। इन परिवर्तनों को संयुक्त रूप से **''खिलजी क्रांति''** कहा जाता है।
- इस समय धर्म का राजनीति से अलगाव, प्रतिभा, योग्यता के आधार पर प्रशासकों का चयन और भारतीय मुसलमानों व मंगोलों को शामिल करना खिलजी क्रांति के महत्वपूर्ण पक्ष है।

BOOSTER ACADEMY

❖ जलालुद्दीन खिलजी (1290-96 ई.)

- 1290 ई. में कैकूबाद द्वारा निर्मित किलुखरी के महल में जलालुद्दीन ने अपना राज्याभिषेक करवाया।
- इसने **''लौह - रक्त नीति''** को त्याग उदारता की नीति (अहस्क्षेप) को अपनाया।
- जलालुद्दीन खिलजी ने ही सर्वप्रथम घोषित किया कि दिल्ली सल्तनत कभी इस्लामिक राज्य नहीं बन सकता।
- 1291 - 92 ई. में रणथम्भौर की असफल घेराबन्दी की। घेरा हटाते हुए कहा कि **''वह मुसलमान के सिर के एक बाल की कीमत ऐसे 100 किलों से ज्यादा समझता है।''**
- दिल्ली के ठगों व चोरों को भोज दिया और नावों द्वारा इन्हें राज्य से बाहर भेजा।
- **''दीवाने वकूफ''** विभाग का गठन किया (व्यय विभाग)।
- इसके समय में अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत में देवगिरी पर आक्रमण किया।
- जलालुद्दीन ने सूफी संत सिद्दी मौला को हाथी के पैरों तले कुचलवा दिया।

❖ अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)

- पालन-पोषण चाचा जलालुद्दीन ने किया और इसी की हत्या कर शासक बना।
- **आरम्भिक नाम -** अली गुरशास्प
- लेनपूल ने अलाउद्दीन को **''सल्तनतकाल का समुद्र गुप्त''** कहा है।
- राज्याभिषेक बलबन के लाल महल में करवाया था।
- बलबन का काल सुदृढ़ीकरण का काल था जबकि अलाउद्दीन खिलजी के समय साम्राज्यवादी युग था।
- दिल्ली कोतवाल अलाउल मुल्क की सलाह का सम्मान करता था। **व अलाउद्दीन के दो उद्देश्य -**
  1. नये धर्म की स्थापना
  2. विश्व विजय
- बयाना के काजी मुगीस (मुगीसुद्दीन) के साथ इसका संवाद प्रसिद्ध है।
- इसने राजनीति को धर्म से अलग किया।
- स्वयं को **''जिल्ले इलाही''** घोषित किया। (प्रथम बलबन)
- स्वयं ने **'सिकन्दर सानी'** या **'सिकन्दर द्वितीय सानी'** की उपाधि ग्रहण की।
- 1304 ई. सीरी को राजधानी बनाया।
- कुतुबमीनार के पास अलाई दरवाजे का निर्माण करवाया।
- इसका गुम्बद वैज्ञानिक विधि से बना प्रथम गुम्बद था।
- अलाउद्दीन खिलजी को **''गुम्बद निर्माण का पिता''** कहा जाता है।
- इसने दिल्ली में सीरी फोर्ट का निर्माण करवाया तथा इसमें हजारों खम्भों (सितुन) वाले महल का निर्माण करवाया।
- इसने अमीर खुसरो तथा अमीर हसन देहलवी को संरक्षण प्रदान किया।
- 1316 ई. में मृत्यु।

BOOSTER ACADEMY

❖ **प्रमुख सेनापति**

1. जफर खाँ - (मंगोलों से लड़ता मारा गया)
2. नुसरत खाँ - (रणथंभौर अभियान में मारा गया)
3. उलूग खाँ
4. अलप खाँ

❖ **अन्य सेनापति**

1. **मलिक काफूर -** (दक्षिण अभियान का नेतृत्व)
2. **गाजी मलिक -** (मंगोलों को पराजित किया)

- अलाउद्दीन के समय सर्वाधिक मंगोल आक्रमण हुए। मंगोलों के विरूद्ध **''युद्ध व रक्त''** की नीति अपनाई।
- सेनापति जफर खान मंगोलों के विरूद्ध अभियान में मारा गया।
- जफर खान की मृत्यु पर अलाउद्दीन ने कहा कि **''बिना अपमानित हुए उससे छुटकारा मिल गया।''**

❑ **अलाउद्दीन के उत्तर भारत के अभियान**

❖ **गुजरात अभियान (1299 ई.)**

- अलाउद्दीन का प्रथम अभियाान था।
- उलूग खाँ एवं नुसरत खाँ ने इस अभियान का नेतृत्व किया।
- बघेल शासक कर्ण देव द्वितीय पराजित हुआ। इसकी पत्नी कमला देवी से अलाउद्दीन ने विवाह कर **''मल्लिका ए जहाँ''** की उपाधि दी।
- इस अभियान में नुसरत खाँ ने मलिक काफूर को एक हजार दीनार में खरीदा। इसलिए इसे **''हजार दीनारी''** भी कहते है।

सन्	राज्य	पराजित शासक
1. 1299 ई.	गुजरात	कर्ण – द्वितीय
2. 1301 ई.	रणथम्भौर	हम्मीर देव
3. 1303 ई.	चित्तौड़	राणा रतन सिंह
4. 1308 ई.	सिवाना	शीतलदेव
5. 1311 ई.	जालौर	कान्हडदेव

- **दक्षिण अभियानों** का नेतृत्व **मलिक काफूर** ने किया।
- अलाउद्दीन खिलजी के दक्षिण भारत अभियान:- अमीर खुसरों की **खजाइन उल फुतुह** व बरनी की **तारीख - ए - फिरोजशाही** से मिलता है।

Note:- अलाउद्दीन ने दक्षिण राज्यों को जीतकर राजस्व लिया और साम्राज्य में नहीं मिलाया। अधिराजत्व की नीति अपनाई न कि प्रभुसत्ता की।

BOOSTER ACADEMY

दक्षिणी राज्य

देवगिरी के यादव	वारंगल के काकतीय	द्वारसमुद्र के हॉयसल	मदूरै के पाण्ड्य
(1306-07 ई.)	(1303 ई.)	(1310 ई.)	(1311 ई.)
रामचन्द्रदेव	(1308 ई.)	वीर वल्लाल तृतीय	वीर पाण्ड्य
	प्रतापरूद्र देव		
	(लहर देव)		

❖ विद्रोह के दमन हेतु चार सुधार किए-

1. अमीरों की सम्पत्ति - आय, भूमि अनुदान जब्त किए।
2. गुप्तचर प्रणाली का गठन।
3. अमीरों के वैवाहिक सम्बन्ध, मेल-मिलाप, उत्सवों के आयोजन से पूर्व सुल्तान की अनुमति आवश्यक।
4. दिल्ली में मद्य निषेध

❖ प्रशासनिक सुधार:-

- **दीवान ए रियासत** नामक विभाग का गठन, व्यापार व बाजार नियंत्रण के लिए।
- **बरीद ए मुमालिक** नामक गुप्तचर अधिकारी के अधीन गुप्तचर प्रणाली का पुर्नगठन किया। (मुन्ही या मुन्हीयान-गुप्तचर)

❖ सैन्य सुधार:-

- नियमित सेना का गठन। पहला सुल्तान जिसने स्थायी सेना का गठन किया।
- सेना को नगद वेतन देना शुरू किया।
- घोड़े दागने की प्रथा व सैनिकों का हुलिया नोट करना शुरू किया।
- मुर्रत्तब :- निरीक्षण करके नियुक्त किये गये सैनिकों को मुर्रत्तब कहते थे।
- अलाउद्दीन ने सेना की नित्य कवायद (ड्रिल/परेड) शुरू की।

❖ आर्थिक सुधार:-

- **मसाहत -** भूमि पैमाइश करवाई, जिसे मसाहत कहा। (इकाई - बिस्वां)
- भू राजस्व कर में वृद्धि कर इसे **50 प्रतिशत** तक कर दिया।
- अधिकांश भूमि को खालसा भूमि में परिवर्तित किया।
- **दीवान ए मुस्तखराज विभाग** का गठन जो बकाया भू-राजस्व वसूलता था।
- **दो नए कर लगाए-**

1. **चरी/चराई कर -** पशुओं पर कर
2. **घरी कर -** आवास कर

BOOSTER ACADEMY

- पहला सुल्तान जिसने राजस्व की नकद अदायगी शुरू की।
- इक्ता व्यवस्था को समाप्त किया।

❖ बाजार सुधार:-

- **अलाउद्दीन के बाजार नियंत्रण की जानकारी के स्त्रोत:-**
  (1) जियाउद्दीन बरनी की तारीख-ए-फिरोजशाही
  (2) अमीर खुसरो की खजाइन-उल-फुतुह
  (3) इसामी की फुतुह-उस-सलातीन
  (4) इब्न बतूता के रेहला
  (5) शेख नासिरुद्दीन की खायरूल मजलिस
- दीवान ए रियासत नामक नए विभाग का गठन किया। यह विभाग व्यापार व बाजार नियंत्रण का काम करता था।
- **बाजार को 3 भागों में विभाजित किया -**
  1. सराय ए अदल (कपड़े व अन्य निर्मित वस्तुएँ)
  2. मण्डी (खाद्यान्न/अनाज बाजार)
  3. घोडे, मवेशी व दासों का बाजार
- **बाजार सुधार में निम्नलिखित अधिकारियों को नियुक्त किया:-**
  (1) दीवाने रियासत
  (2) शहना ए मण्डी-पुलिस अधिकारी (बाजार मूल्य नियंत्रण व माप तौल की जाँच करना)
  (3) बरीद ए – मण्डी
- बरनी ने लिखा है कि **"अनाज मंडी में कीमतों का स्थायित्व इस युग का एक आश्यर्च था।"**
- **"एक ऊँट एक जीतल का था, लेकिन यह एक जीतल था जिसके पास।"** – बरनी

❖ शियाबुद्दीन उमर (1316 ई.)

- मलिक काफूर इसका संरक्षक था।
- मुबारक शाह खिलजी द्वारा मलिक काफूर की हत्या कर दी और स्वयं शासक बन गया।

❖ मुबारक शाह खिलजी (1316 - 1320 ई.)

- स्वयं को **''खलीफा''** घोषित किया।
- मलिक काफूर की हत्या कर शासक बना।
- यह महिलाओं के कपड़े पहनता था।
- इसे **''घोषणाओं का बादशाह''** कहा जाता है।
- इसने निजामुद्दीन औलिया के अभिवादन को अस्वीकार किया।

BOOSTER ACADEMY

❖ खुशरव शाह (1320 ई.)

- मुबारक की हत्या कर शासक बना। यह गुजरात का हिन्दू था जिसने मुस्लिम धर्म स्वीकार किया।
- इसने स्वयं को **''पैगम्बर को सेनापति''** घोषित किया।
- निजामुद्दीन औलिया को 5 लाख टंका भेंट स्वरूप दी।

तुगलक वंश (1320 - 1414 ई.)

- ये कौरानी/करौना तुर्क शाखा से थे।
- करौना, तुर्क व मंगोल की मिश्रित जनजाति थी।
- तुगलक किसी जाति का नाम नहीं था बल्कि यह गयासुद्दीन का नाम था। इतिहासकारों ने इसे तुगलक वंश का नाम दिया है।

❖ गयासुद्दीन तुगलकः-

- **अन्य नाम -** गाजी मलिक, यह तुगलक वंश का संस्थापक था।
- प्रथम सुल्तान जिसने अपने नाम के साथ गाजी शब्द जोडा।
- प्रथम सुल्तान जिसने सिंचाई हेतु नहरों का निर्माण करवाया।
- गयासुद्दीन ने अलाउद्दीन के विपरीत उदारता की नीति अपनाई। बरनी इसे **''रस्मेमियाना''** कहता है।
- अलाउद्दीन ने दक्षिण में केवल राज्यों से अधीनता स्वीकार करवाई, जबकि गयासुद्दीन ने उन्हें सल्तनत में मिलाना शुरू कर दिया।
- सूफी सन्त निजामुद्दीन औलिया के साथ विवाद हो गया। जिस पर औलिया ने बंगाल से लौटते हुए गयासुद्दीन से कहा कि **''हनूज दिल्ली दुरस्त''**। (दिल्ली अभी दूर है)
- गयासुद्दीन की डाक व्यवस्था उत्कृष्ट थी। डाक पहुँचाने के प्रत्येक 3/4 मील पर घुड़सवार होते थे।

❖ मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351 ई.)

- **वास्तविक नाम -** जौना खाँ, अब्दुल मुजाहिद
- दिल्ली सल्तनत का सर्वाधिक विद्वान शासक, विरोधाभासों से युक्त व विवादित शासक था।
- बलबन के लाल महल में इसका राज्यारोहण हुआ।
- इसके समय अन्तिम मंगोल आक्रमण तरमाशीरिन के नेतृत्व में हुआ। (1327 ई.)
- इसने **''दीवान ए सियासत''** नामक विशेष अदालतों का गठन किया।
- राजमुन्द्री अभिलेखों में जौना खां को **"दुनिया का खान"** कहा गया है।
- **मुहम्मद बिन तुगलक के प्रमुख प्रयोग:-**

योजनाएँ	समय
1. दोआब कर वृद्धि	1325 ई.
2. देवगिरि को राजधानी बनाना	1327 ई.

3. सांकेतिक मुद्रा चलाना	1329 ई.
4. खुरासान अभियान	1332 - 34 ई.
5. कराचिल अभियान	1332 - 34 ई.

❖ दोआब कर वृद्धि:-

- इसने दोआब क्षेत्र में राजस्व बढाकर 1/2 (आधा) कर दिया।
- जिस समय कर वृद्धि की गई, उसी दौरान अकाल पड़ गया जिससे जनता कर अदा नहीं कर पायी।
- यह प्रथम सुल्तान था जिसने अकाल संहिता बनाई।
- फसलों की चक्रावर्तन (Rotation) पद्धति को अपनाया।
- **दीवान ए अमीर कोही/दीवान ए कोही** नामक कृषि विभाग का गठन किया।
- सौन्धार/तकावी (अग्रिम कृषि ऋण) प्रदान किए गए।

❖ राजधानी परिवर्तन:-

- देवगिरी को नयी राजधानी बनाया और दौलताबाद नाम रखा। यह प्रयोग विफल रहा।

राजधानी परिवर्तन के सम्बन्ध में प्रमुख कथन

बरनी	सल्तनत केन्द्र में स्थित
इब्नबतूता	सुल्तान को गालियों भरे पत्र मिलते थे।
लेनपूल	दौलताबाद को **''गुमराह शक्ति का स्मारक चिन्ह''** कहा।

- इसामी इसे **''काफिर''** और बरनी **''नाकाम परियोजनाओं का कर्त्ता-धर्त्ता''** बताता है।

❖ सांकेतिक मुद्रा

- चाँदी के टंके के स्थान पर काँसे के टंके चलाये और इनका मूल्य बराबर रखा। इस काँसे की मुद्रा के चलन से राजकोष रिक्त हो गया।
- बरनी लिखता है कि **"प्रत्येक हिन्दू का घर टकसाल बन गया था।"**
- बरनी ने तांबे का, फरिश्ता ने कांसे/पीतल का प्रयोग सांकेतिक मुद्रा में बताया है।
- एडवर्ड थामस ने मुहम्मद बिन तुगलक को **"धनवानों का राजकुमार" (प्रिंस ऑफ मोनियर्स / Prince of Moneyers)** कहा है।

❖ खुरासान अभियाान

- मुहम्मद बिन तुगलक, मंगोल शासक तरमाशीरिन और फारस के शाह ने मिलकर खुरासान के सैयद के विरूद्ध अभियान की योजना बनाई। 3,70,000 सैनिकों की सेना तैयार कर उसे अग्रिम वेतन दिया। यह अभियान बाद में रद्द हो गया।

BOOSTER ACADEMY

❖ कराचिल अभियान: (हिमाचल प्रदेश)

- मलिक खुसरों के नेतृत्व में अभियान किया गया, खराब मौसम के कारण सभी सैनिक मारे गए।

❖ अन्य तथ्य

- 1351 ई. में मुहम्मद बिन तुगलक की थट्टा (सिन्ध) में मृत्यु हो गयी।
- यह धार्मिक दृष्टि से सहिष्णु शासक था। हिन्दू त्योंहारों में भाग लेता था, होली इसका पंसदीदा त्योंहार था।
- प्रथम सुल्तान जो जैन मन्द्रिरों के दर्शन हेतु माउण्ट आबू गये थे।
- यह प्रथम सुल्तान था जिसने सती प्रथा पर रोक लगाई थी।
- बदायूंनी मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु पर लिखता है कि **"सुल्तान को उसकी प्रजा से व प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिल गई।"**
- **एलफिन्सटन** का मानना है कि मुहम्मद बिन तुगलक में **पागलपन का अंश** विद्यमान था। हैवेल, एडवर्ड थामस और स्मिथ ने भी इस मत का समर्थन किया है।
- **1328 ई.** के संस्कृत में रचित सरबन शिलालेख (Sarban inscription) में उसे पृथ्वी के **"सभी सम्राटों में मुकुट का मोती"** कहा गया है।
- अफ्रीकी यात्री इब्नबतूता इसके काल में भारत आया। इब्नबतूता मोरक्को का निवासी था, 1333 ई. में भारत आया। इसकी यात्रा वृतांत **''रेहला''** में है। इसे सुल्तान ने राजदूत बनाकर चीन भेजा।

❖ फिरोज तुगलक (1351-1388 ई.)

- मुहम्मद बिन तुगलक का चचेरा भाई था।
- प्रथम सुल्तान जिसने राज्य का चरित्र इस्लामिक घोषित किया।
- फिरोज तुगलक ने सीमा विस्तार की जगह कल्याणकारी नीतियों को अपनाया।
- यह धार्मिक कट्टरवादी था इसे मध्यकालीन भारत का **''कल्याणकारी निरंकुश''** कहा जाता है। इसने **ब्राह्मणों पर भी जजिया** कर लगाया।
- इलियट व एलफिन्सटन ने फिरोज को **'सल्तनत युग का अकबर'** कहा है।
- नहरों द्वारा सिंचित भूमि पर हाब -ए-शर्ब (सिंचाई कर) लगाया।
- इसने सर्वप्रथम मुस्लिम महिलाओं को दिल्ली के बाहर स्थित मजारों पर जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।
- फिरोज ने सैनिक पद व जागीर वंशानुगत कर दी। वृद्ध व अक्षम सैनिक अपने पुत्र, दामाद या एजेन्ट को भी अपने स्थान पर सेना में भेज सकता था।
- फिरोज राजकीय सिपाहियों को राज्य के राजस्व अधिकारियों से अपना वेतन प्राप्त करने के लिए इतलाक नामक हुण्डी देता था। इतलाक नामा लगान से वेतन प्राप्त करने वाला नियुक्त पत्र होता था, जिसे फिरोज तुगलक ने चलाया। जब कोई सैनिक इतलाक नामा लेकर लगान वसूल करने वाले राज्य के कर्मचारियों के पास जाता था, तो उसे लगान का 50 प्रतिशत हिस्सा दिया जाता था।
- **अफीफ** के अनुसार सुल्तान ने एक घुड़सवार को एक टंका दिया ताकि व सेनापति को **रिश्वत** देकर अपना घोड़ा पास करवा सके।

- फिरोजाबाद (दिल्ली) में नक्षत्रशाला और समय सूचक उपकरण जलघड़ी का विकास किया, इतिहास एवं चिकित्सा शास्त्र का यह ज्ञाता था, उसे **''सल्तनत का जयसिंह''** भी कहा जाता है।
- इसने शहरीकरण पर जोर दिया तथा 300 शहरों की स्थापना की।
- **प्रमुख स्थापित शहर:-**

  1. फिरोजशाह कोटला
  2. हिसार फिरोजा
  3. फिरोजाबाद
  4. फिरोजपुर
  5. फतेहाबाद
  6. जौनपुर (मुहम्मद बिन तुगलक की याद में)

- इसने लगभग 1200 उद्यानों का निर्माण करवाया।
- **इसके काल में नहरों का निर्माण सर्वाधिक हुआ। जैसे-**

उलुगखानी नहर दिल्ली (यमुना) से हिसार तक

राजवाही नहर (सतलज से घग्घर)

↓

सबसे लम्बी नहर (150 मील)

- शिकार व मनोरंजन के लिए **"कुश्क-ए-शिकार"** नामक महल का निर्माण करवाया।
- अपनी आत्मकथा फारसी में **''फुतुहात-ए-फिरोजशाही''** नाम से लिखी।
- बरनी व शम्से सिराज ने एक ही नाम **''तारीखे फिरोजशाही''** नाम से दो किताबें लिखी।
- **नए विभागों की स्थापना की:-**

- दीवान ए इस्तिहाक → पेंशन
- दार उल सफा → चिकित्सा विभाग → दफ्तर ए रोजगार → बेरोजगारों के लिए
- दीवान ए बन्दगान → दास विभाग → फिरोज तुगलक के दास रखने का शौक था, उसके पास 1,80,000 दास थे।
- दीवान ए खैरात → अनाथ व विधवा महिलाओं के लिए दान विभाग
- शोहरत ए आम/लोक निर्माण विभाग → नये नहरों के निर्माण के लिए

BOOSTER ACADEMY

- फिरोज तुगलक के आर्थिक सुधारों का श्रेय उसके मंत्री **''खान ए जहाँ तेलंगानी''** को जाता है। यह तेलंगाना का ब्राह्मण था। इसका वास्तविक नाम **''मलिक मकबूल'' था, ''खान ए जहां तेलंगानी''**, इसे उपाधि दी गई।
- **फिरोज तुगलक के अभियान:-**
- फिरोजशाह के सिन्ध पर प्रथम अभियान के समय यह कहावत प्रसिद्ध हो गई थी कि **"देखो शेख प्रथा" (सूफी इब्राहीम शाह आलम) का कमाल, एक तुगलक (मुहम्मद बिन तुगलक) तो मर गया, दूसरे को जरा संभाल।"**
- टोपरा (अम्बाला) और मेरठ से अशोक के स्तम्भों को दिल्ली लाया।
- हौजखास में अपने प्रधानमंत्री **''खाने जहाँ तेलंगानी''** (मलिक मकबूल) का मकबरा बनवाया। इसमें बना मकबरा दिल्ली में निर्मित प्रथम **अष्टभुजाकार मकबरा** है।

❑ नासिरूद्दीन मुहम्मद शाह तुगलक

- इसके समय सल्तनत पालम से दिल्ली तक थी।
- जौनपुर, गुजरात तथा मालवा पूर्णतः स्वतंत्र हो गए।
- नए विभाग-**वकील ए सुल्तान** का गठन किया।
- इसके समय 1398 ई. में समरकन्द शासक तैमूर लंग का आक्रमण हुआ था।
- यह तुगलक वंश का अन्तिम शासक था।
- तैमूर की आत्मकथा - **''तुजुक ए तैमुरी''** (मलफूजात ए तिमूरी)

सैय्यद वंश (1414-1451 ई.)

- ये स्वयं को पैगम्बर मुहम्मद साहब का वंशज मानते थे। ये शिया थे,

❖ खिज्र खाँ (1414-1421 ई.)

- यह सैय्यद वंश का संस्थापक था।
- सुल्तान की उपाधि धारण न कर **''रैय्यत ए आला''** (किसानों का नेता) की उपाधि से संतुष्ट रहा।

❖ मुबारक शाह (1421-34 ई.)

- शाह/सुल्तान की उपाधि धारण की
- **''याहिया बिन सरहिन्दी''** को संरक्षण दिया (रचना-तारीखे मुबारकशाही)
- यमुना किनारे **''मुबारकबाद''** नगर बसाया।

❖ मुहम्मद शाह (1434-1445 ई.)

- खान ए जहाँ/खान ए खाना की उपाधि धारण की।
- मोहम्मदाबाद नगर बसाया।

BOOSTER ACADEMY

❖ अलाउद्दीन आलम शाह (1445-51 ई.)

- सैय्यद वंश का अन्तिम शासक जिसने बहलोल लोदी को स्वेच्छा से शासन सौंपकर स्वयं बंदायूँ की जागीर से संतुष्ट रहा।

लोदी वंश (1451-1526 ई.)

- प्रथम अफगान वंश तथा सल्तनत का अन्तिम वंश था।

❖ बहलोल लोदी (1451-89 ई.)

- इसका जन्म सिजेरियन (सर्जरी) तकनीकी से हुआ।
- सुल्तान बनने से पूर्व सरहिन्द का सूबेदार था।
- **''गाजी''** की उपाधि धारण की।
- राजत्व सिद्धांत में **''समानों में प्रथम''** की नीति अपनाई (First Among Equals) अमीरों को **''मसनद-ए-अली''** कहकर पुकारता था।

❖ सिकन्दर लोदी (1489-1517 ई.)

- बहलोल लोदी की मृत्यु के बाद उसका पुत्र निजाम खाँ **''सुल्तान सिकन्दर शाह''** के नाम से शासक बना।
- 1504 ई. में आगरा नगर की स्थापना की।
- 1506 ई. में ही आगरा को राजधानी बनाया।
- यह **''गुलरूखी''** नाम से फारसी कविताएँ लिखता था।
- गुप्तचर प्रणाली को सुदृढ़ किया, अमीरों पर नियंत्रण स्थापित किया और सुल्तान के पद को पुनः गरिमामय बनाया।
- सिकन्दर लोदी कहा करता था कि **''यदि मैं अपने गुलाम को भी पालकी में बिठा दूँ तो मेरे आदेश पर मेरे सरदार उसे कंधों पर बैठा कर ले जायेंगे।''**
- इसने सिकन्दरी गज को प्रचलित किया।
- एकमात्र सुल्तान जिसने खुम्स में हिस्सा नहीं लिया।
- इसके समय संगीत के ग्रन्थ **''लल्जत-ए-सिकन्दरशाही''** की रचना हुई। **''फरहंग-ए-सिकन्दरी''** की रचना हुई जो कि आयुर्वेद ग्रंथों का फारसी अनुवाद था।
- सिकन्दर लोदी का मकबरा खैरपुर (दिल्ली) में है।

❖ इब्राहिम लोदी (1517-1526 ई.)

- प्रमुख कथन -**''मेरे अमीर मेरे शाही खेमे का सम्मान करते हैं''**
- **''राजा का कोई सम्बंधी नहीं होता''**
- सल्तनत तथा लोदी वंश का अन्तिम शासक था।

BOOSTER ACADEMY

पानीपत का प्रथम युद्ध (21 अप्रैल 1526 ई.)
इब्राहिम लोदी v/s बाबर **(विजयी)**

- **''तारीख ए-जहांनी''** के अनुसार इब्राहिम लोदी सल्तनत काल का प्रथम व अन्तिम सुल्तान था जो युद्ध भूमि में मारा गया।
- **''तारीख ए जहांनी''** के लेखक नियामतउल्ला है। इस ग्रंथ में अफगानों का इतिहास मिलता है।
- बाबर को भारत आक्रमण के लिए आमंत्रण इब्राहिम लोदी के चाचा दौलत खाँ लोदी (पंजाब गवर्नर) व अमीन खाँ लोदी ने दिया था।
- बाबर ने पानीपत में इब्राहिम लोदी का ईंटों का मकबरा बनवाया। बाबर ने इब्राहिम लोदी को **कंजूस और अनपरखा सूरमां** कहा।

❑ दिल्ली सल्तनत का प्रशासन

- सल्तनत सैद्धान्तिक रूप से धर्म प्रधान थी क्योंकि खलीफा के महत्व को शासन संचालन में स्वीकार किया गया जबकि व्यवहार में सल्तनत धर्म प्रधान नहीं थी।
- सर्वप्रथम इल्तुतमिश ने खलीफा से मान्यता प्राप्त की।
- मुबारकशाह खिलजी ने स्वयं को खलीफा (अमीर उल मोमिनिन) घोषित किया। जबकि सैय्यद वंशी शासकों ने स्वयं को पैगम्बर मुहम्मद का वंशज माना।
- इल्तुतमिश ने रजिया को उत्तराधिकारी घोषित कर वंशानुगत शासन नियम को लागू किया।

अमीरों का स्वर्णकाल → **लोदी काल**
वजीरों का स्वर्णकाल → **तुगलक काल**
साहूकारों का स्वर्णकाल → **मुहम्मद बिन तुगलक**

❖ राजा/सुल्तान का राजस्व सिद्धांत:-

- केन्द्रीकृत, वंशानुगत, निरंकुश एवं राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था थी।
- इल्तुतमिश के काल में सुल्तान का कद अमीरों से ज्यादा ऊपर नहीं था।
- बलबन के समय राजत्व उच्च कुलीनता, रक्त की शुद्धता और प्रतिष्ठा पर आधारित था। बलबन का मानना था कि सुल्तान संसार में नायब-ए-खुदाई (ईश्वर का प्रतिनिधि) होता है।
- **स्वयं को जिल्ले इलाही घोषित करने वाले शासक:-**
  बलबन (सर्वप्रथम), अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद बिन तुगलक।
- अलाउद्दीन सुल्तान को कानून से ऊपर मानता था, उसके अनुसार **''सुल्तान के शब्द ही कानून है।''**
- लोदियों का राजत्व **''समानों में प्रथम''** (कुलीनतंत्रीय) था। लेकिन सिकन्दर लोदी ने सुल्तान की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया।

केन्द्रीय प्रशासनः-

- सुल्तान को महत्वपूर्ण सलाह देने के लिए **''मजलिस ए खलवत''** (मंत्री परिषद) होती है।

- **प्रमुख अधिकारी**

मुस्तौफी ए मुमालिक	महालेखा परीक्षक
मुशरिफ ए मुमालिक	महालेखाकार
काजी उल कुजात	न्याय विभाग प्रमुख
सद्र उस सुदूर	धर्म विभाग का प्रधान
अमीर ए दाद	बड़े नगरों के न्यायाधीश
वकील ए दर	शाही महल की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला
बरबक	शाही दरबार की प्रक्रियाओं का प्रमुख
अमीर ए मजलिस	उत्सवों एवं दावतों का प्रबन्धकर्त्ता
अमीर ए बहर	जलमार्ग एवं नौकायनों का प्रबन्धक
अमीर ए हाजिब	सुल्तान का निजी सहायक
दीवान ए वजारत	राजस्व विभाग
दीवान ए रसालत	विदेश/धार्मिक विभाग
दीवान ए इंशा	पत्राचार विभाग
शहना ए पील	हस्तिशाला प्रमुख
मुहतसिब	लोगों का आचरण पर नजर

❖ प्रान्तीय प्रशासनः-

- प्रान्तों को **इक्ता** कहा जाता था।
- भारत में इक्ता व्यवस्था की शुरूआत मुहम्मद गौरी ने शुरू की जबकि इसे संस्थागत या ठोस रूप इल्तुतमिश ने दिया।
- इक्ता सैनिकों व अधिकारियों को वेतन के बदले दी जाने वाली जागीरें होती थी, यह वंशानुगत नहीं होते थे। यह मुख्यतः **''स्थानान्तरणीय भू राजस्व अधिन्यास''** थे।
- इक्ता का प्रधान इक्तेदार, वलि, मुक्ती, नाजिब, नायब आदि नामों से जाना जाता था।

❖ स्थानीय प्रशासनः-

प्रान्त/इक्ता

↓

शिक/जिला → प्रमुख शिकदार

↓

परगना → मुंसिफ – राजस्व विभाग का अधिकारी, **आमिल** मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

↓

ग्राम → चौधरी, खुत, मुकद्दम

BOOSTER ACADEMY

❖ राजस्व व्यवस्था

- **उश्र-** तुर्की मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमिकर
- **खराज -** गैर-मुस्लिमों से लिया जाने वाला भूमिकर
- **जकात -** मुसलमानों पर धार्मिक कर
- **जजिया -** गैर मुसलमानों से धार्मिक/राजनैतिक कर (स्त्रियाँ, बच्चे, बुजुर्ग, भिखारियों व ब्राह्मणों से जजिया नहीं लेते थे।)
- सर्वप्रथम जजिया मुहम्मद बिन कासिम ने 712 ई. में सिन्ध से वसूला।
- फिरोज तुगलक ने ब्राह्मणों से भी जजिया वसूला।
- **खम्स/खुम्स -** युद्ध लूट से प्राप्त खजाना।
- पूर्व में यह राज्य को 20 प्रतिशत व सैनिकों को 80 प्रतिशत मिलता था।
- अलाउद्दीन खिलजी व मुहम्मद बिन तुगलक ने राज्य का हिस्सा (4/5)/80 प्रतिशत व सैनिकों का हिस्सा (1/5)/20 प्रतिशत कर दिया।
- **मसाहत -** भूमि की पैमाइश को
- **जरीबाना -** भूमि सर्वेक्षण शुल्क

❖ सैन्य प्रशासन

- **हश्म ए कल्ब -** केन्द्रीय सेना
- **हश्म ए अतरफ -** प्रान्तीय सेना
- **सवार ए कल्ब -** घुड़सवार लेना
- बलबन ने सर्वप्रथम किला निर्माण पर ध्यान दिया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने नियमित सेना का गठन किया।
- शाही अंगरक्षकों व शाही गुलामों की सेना को **खासखेल** कहा जाता था।
- **सरखेल – सिपाहसालार – अमीर – मिलक – खान – सुल्तान।**
  - ✓ सरखेल – 10 घुड़सवारों का प्रमुख
  - ✓ सिपाहसलार – 10 सरखेलों का प्रमुख (100 घुड़सवार)
  - ✓ अमीर – 10 सिपाहसलारों का प्रमुख (1000 घुड़सवार)
  - ✓ मलिक – 10 अमीरों का प्रमुख (10000) घुड़सवार
  - ✓ खान – 10 मलिकों का प्रमुख (100000) घुड़सवार
  - ✓ दस घुड़सवारों की टुकड़ी को सरखेल कहते थे।

BOOSTER ACADEMY

❖ न्याय व्यवस्था –

- फौजदारी मामलों में हिन्दुओं व मुसलमानों हेतु समान कानून होता है जबकि दीवानी मामलों में हिन्दुओं व मुसलमानों हेतु अलग-अलग कानून थे।
- **सर्वोच्च न्यायाधीश** – सुल्तान
- **प्रधान न्यायाधीश** - काजी उल कुजात/सद्र उस सूदूर
- **काजी का सहायक** – मुफ्ती
- **मुफ्ती** - कानून की व्याख्या करते थे और इस आधार पर काजी न्याय करते थे।
- मुजतहिद इस्लामी कानूनों की व्याख्या करने वाले विधिवेत्ता होते हैं।
- इस्लामी धर्म शास्त्र को **''फिकह''** कहा जाता था।
- **इस्लामी कानून के चार स्त्रोत हैं-**

1. **कुरान** - मुस्लिम कानूनों का प्रमुख स्त्रोत
2. **हदीस** - पैंगम्बर के कथनों व कार्यों का वर्णन
3. **इजमा** - मुजतहित द्वारा व्याख्यापित कानून
4. **कयास** - तर्क द्वारा कानून की व्याख्या

❖ उद्योग - व्यापार – तकनीकी

- तुर्कों के आगमन के साथ ही नवीन प्रौद्योगिकी भी भारत आई, जिससे भारत में विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन हुआ। मोहम्मद हबीब इसे **''नगरीय क्रांति''** कहते है।
- चरखे का प्रथम साहित्यिक प्रमाण इसामी की **''फुतुह-उस-सलातीन''** में मिलता है।
- **''रहट''** का प्रथम उल्लेख बाबरनामा में मिलता है।

❑ सल्तनत कालीन स्थापत्य

- सल्तनत काल में इण्डो-इस्लामिक शैली का विकास हुआ। यह भारतीय तथा इस्लामिक शैली का मिश्रित रूप था।

शैलियाँ	विशेषताएँ	अलंकरण	निर्माण सामग्री
हिन्दू स्थापत्य	धरण/शहतीर छज्जे स्तम्भ व कोष्ठक	देवी-देवताओं की मूर्तियाँ फूल-पत्ती, बेल-बूंटों का चित्रण,घण्टियों का चित्रण	बड़े-बड़े पत्थरों का प्रयोग
मुस्लिम स्थापत्य	मेहराब, मीनार, गुम्बंद	कुरान की आयतें, ज्यामितीय संरचनाएँ	छोटे पत्थरों का प्रयोग, चुना, पत्थर, गारे का प्रयोग

BOOSTER ACADEMY

❑ इण्डो -इस्लामिक स्थापत्य में विभिन्न राजवंशों का योगदानः-

❖ गुलाम वंश (मामलूक वंश) के काल में स्थापत्य का विकासः-

- दिल्ली सल्तनत की स्थापना के समय हिन्दू इमारतों को तुडवाकर ही इस्लामिक इमारतों का स्वरूप दिये जाने का प्रयास किया गया।
- इस समय स्थापत्य की किसी विशिष्ट शैली का विकास दिखायी नहीं देता है। **जैसे-**

✓ **कुव्वत-उल - इस्लाम मस्जिदः दिल्ली -**

- कुतुबुद्दीन ऐबक के द्वारा दिल्ली मे 27 जैन व हिन्दू मंदिरों को तुडवाकर उनके अवशेषों पर कुव्वत उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण करवाया - 1197, **सल्तनतकाल की प्रथम मस्ज्दि।**

✓ **कुतुब मीनार- दिल्लीः-**

- वास्तुकार एवं पर्यवेक्षक - फजल इब्न अबुल माली।
- कुतुबुद्दीन ऐबक के द्वारा 1199 ई. कुव्वत उल- इस्लाम मस्जिद की परिसर में कुतुबमीनार का निर्माण प्रारम्भ करवाया।
- इस मीनार का नामकरण प्रसिद्ध चिश्ती संत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम किया गया।
- फिरोजशाह तुगलक के काल में इसकी चौथी मंजिल के क्षतिग्रस्त हो जाने पर इसका जीर्णोद्वार करवाया। इसके अतिरिक्त मुहम्मद बिन तुगलक, सिकन्दर लोदी एवं मेजर स्मिथ के द्वारा भी इसका जीर्णोद्वार करवाया गया।

✓ **ढाई दिन का झोपडा (अजमेर):-**

- चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ द्वारा निर्मित संस्कृत पाठशाला को तुडवा कर कुतुबुद्दीन ऐबक ने ढाई दिन का झोपडा नामक मस्जिद बनवाई। यहॉ सूफी संत पंजाबशाह का ढाई दिन का उर्स लगता है, इस कारण यह इमारत ढाई दिन के झोपडा नाम से जानी जाती है।

✓ **सुल्तानगढ़ी का मकबरा (दिल्ली) :-**

- इल्तुतमिश के द्वारा अपने पुत्र नासिरूद्दीन महमूद की याद में भूरे पत्थर तथा संगमरमर से सुल्तानगढ़ी किलेनुमा मकबरे का निर्माण करवाया। यह मकबरा अष्टकोणीय चबूतरे पर निर्मित है।
- यह सल्तनत काल का **पहला मकबरा** माना जाता है।
- इल्तुमिश ने नागौर में आतारकिन का दरवाजा बनाया।

❖ खिलजी काल में इण्डों-इस्लामिक स्थापत्य का विकासः-

- खिलजी वंश की स्थापना के साथ ही विशुद्ध इस्लामिक शैली का निर्माण भी प्रारंभ हो जाता है।
- अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा सीरी नाम से नवीन राजधानी नगर की स्थापना की और इसे इमारतों से सुसज्जित किया। अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा सीरी किला, हौज-ए-अलाई, अलाई मीनार, अलाई-दरवाजा, जम्मैयत खाना मस्जिद, जैसी इमारतों का निर्माण करवाया।

BOOSTER ACADEMY

❖ अलाई दरवाजाः दिल्लीः-

- **अलाई दरवाजा** विशुद्ध इस्लामिक स्थापत्य की पहली इमारत है **घोडे की नाल जैसे मेहराब** का प्रयोग हुआ है।
- सल्तनतकालीन इमारतों में **संगमरमर का पहली बार प्रयोग अलाई दरवाजे** में हुआ।
- अलाई दरवाजे का गुबंद भारत में सही वैज्ञानिक विधि से बना हुआ प्रथम गुम्बद है मार्शल ने लिखा है कि **"अलाई दरवाजा इस्लामी स्थापत्य कला के खजाने का सबसे सुन्दर हीरा है"।**

❖ तुगलक कालीन में इण्डो-इस्लामिक स्थापत्य कला का विकास-

- तुगलक कालीन इमारतों में इमारतों को अलंकरण के स्थान पर सादगी एवं मजबूती देखने को मिलती है। इस समय ढलवाँ दीवारों का निर्माण, इमारतों में छज्जे का अत्यधिक प्रयोग, अष्ट भुजाकार संगमरमर के श्वेत गुबंद जैसी विशेषतायें देखने को मिलती है।
- तुगलक सुल्तानों ने लाल पत्थरों के स्थान पर सस्ते बलुआ पत्थरों का उपयोग किया, तुगलक कालीन इमारतें विशाल किन्तु अत्यधिक सादगी पूर्ण है।

➢ तुगलकाबाद का किला -दिल्ली

- इस किले का निर्माण गयासुद्दीन तुगलक के द्वारा करवाया गया। इस किले में 52 दरवाजे है।

❖ सैय्यद तथा लोदी काल में स्थापत्य का विकासः-

- तुगलक वंश के पतन के साथ ही विकेन्द्रीकरण के नये दौर का प्रारंभ हुआ।

❖ सिकन्दर लोदी का मकबराः- दिल्ली

- इस मकबरे का निर्माण इब्राहिम लोदी के द्वारा 1517 ई. में करवाया गया। यह अष्टकोणीय मकबरा है एवं बगीचे के मध्य में स्थित है जिसके चारो कोनों पर बुर्ज बनाई गई है।

❖ मोठ की मस्जिद: दिल्ली (निर्माण- मियां भुवाँ) –

- यह चतुष्कोणीय इमारत है और लोदी काल की सबसे उत्कृष्ट इमारत मानी जाती है। इस इमारत में दिन में पाँच नमाजों के प्रतीक के रूप में पाँच मेहराबों का निर्माण किया गया है।

❑ सल्तनतकालीन साहित्य

❖ तहकीकात-उल-हिन्द / किताबुल -हिन्दः- अलबरूनी

- अलबरूनी महमूद गजनवी के साथ भारत आया।
- अलबरूनी ख्वारिज्म (फारस) के खींवा नगर का निवासी था, अलबरूनी ने बनारस में संस्कृत सीखी।
- अबलबरूनी संस्कृत, अरबी, फारसी का विद्वान एवं त्रिकोणमति का विशेषज्ञ था।
- अलबरूनी प्रथम मुस्लिम भारतविद् (इण्डोलॉजिस्ट) थे।

BOOSTER ACADEMY

- **''तहकीक ए हिन्द''** पुस्तक अलबरूनी ने **अरबी** भाषा में लिखी। इसका अरबी से अंग्रेजी में अनुवाद एडवर्ड सचाउ ने 1888 **ई.** में किया। इसे **''किताबुल हिन्द''** भी कहा जाता है।
- किताबुल हिन्द को **ग्यारहवीं शताब्दी के भारत का दर्पण** भी कहा जाता हैं।
- इस पुस्तक में तत्कालीन उत्तरी भारत की भौगोलिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक अवस्था का पता लगता है।
- अलबरूनी भारत की जाति व्यवस्था एवं इसकी कठोरता का उल्लेख करता है, और कहता है कि भारत में अन्तर्जातीय विवाह नहीं होते थें एवं विधवाओं का मुडंन कर दिया जाता है।
- अलबरूनी उल्लेख करता है कि - **''भारतीयों को दृढ विश्वास है कि इनके धर्म जैसा ना तो कोई धर्म है और ना ही इनके ज्ञान -विज्ञान जैसा कहीं का ज्ञान-विज्ञान है।"**

❖ तबकात - ए- नासिरी:- मिनहाजुद्दीन सिराज

- रजिया के पतन के बार में मिन्हाज लिखता है कि **''उसके सभी गुण किस काम क क्योंकि वह स्त्री थी।''**

❖ जियाउद्दीन बरनी

- **जन्म -** 1285 में बरन (बुलन्द शहर) में।
- बरनी औलिया के शिष्य थे बरनी ने **इतिहास को विज्ञान की रानी** कहा।
- एकमात्र इतिहासकार जिनका अन्तिम समय में सामाजिक बहिष्कार हो गया था।

❖ जियाउद्दीन बरनी की पुस्तकें

- **फतवा -ए- जहॉदारी:-** इसमें आदर्श सुल्तान के गुणों का उल्लेख एवं इस्लामिक राजतंत्रीय दर्शन का वर्णन।
- **तारीख -ए- फिरोजशाही –**
  - ✓ बलबन से फिरोज शाह तुगलक तक के दिल्ली सुल्तानों का वर्णन ।
  - ✓ अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण व्यवस्था का उल्लेख ।
  - ✓ मोहम्मद बिन तुगलक की योजनाओं की जानकारी दी गई।

❖ अमीर खुसरों (तोता ए – हिन्द)

- **जन्म-** 1253 **ई.** इटावा जिला(U.P.)।
- हिन्दवी भाषा, (हिन्दी + उर्दु भाषा) कव्वालियों का जनक।
- दिल्ली के आठ सुल्तानों के शासनकाल का प्रत्यक्षदर्शी
- अलाउद्दीन खिलजी का दरबारी कवि।
- चिश्ती सूफी संत निजामुद्दीन औलिया का शिष्य।
- जबान ए हिन्दवी (उर्दू/रेख्ता) में सर्वप्रथम रचना खुसरों ने की थी।
- सितार व तबले का आविष्कार।

BOOSTER ACADEMY

- अलाउद्दीन के चित्तौड़ अभियान में शामिल।
- **'राजकीय मुकुट का प्रत्येक मोती गरीब किसान की अश्रुपुरित आंखों से गिरी हुई रक्त की घनीभूत बूँद है'** - अमीर खुसरों।
- **''विद्या के क्षेत्र में दिल्ली बुखारा के समकक्ष थी, भारत के ब्राह्मण अरस्तु के समान प्रतिभाशाली थे' - अमीर खुसरों।**

❖ अमीर खुसरों की पुस्तकें:- (सभी फारसी भाषा में)

- **किरान -उस-सादेनः-** बुगरा खाँ एवं कैकूबाद के मध्य वार्तालाप (बलबन पुत्र)
- **नूह सिपेहर:-** भारत की भौगोलिक व्यवस्था का वर्णन
- **मिफ्ताह -उल- फुतुह:-** जलालुद्दीन खिलजी के सैन्य अभियानों की जानकारी
- **खजाइन -उल-फुतुह:-** अलाउद्दीन खिलजी के सैन्य अभियानों की जानकारी (तारीख - ए- अलाई)
- **आशिका:-** खिज्र खॉ एवं देवल रानी की प्रेम कथा
- **तुगलकनामा:-** प्रारम्भिक तुगलक शासकों का विवेचन

❖ रेहला

- **रचयिता -** इब्नबतूता (मोरक्को, अफ्रीकी यात्री)
- **यह 1333 ई.** में भारत आया (मोहम्मद बिन तुगलक के समय)
- रेहला में मुहम्मद बिन तुगलक के व्यक्तित्व व चरित्र, तत्कालीन समाज, अर्थ व्यवस्था, सैनिक प्रणाली, तुगलक द्वारा राजधानी परिवर्तन, न्याय व्यवस्था, डाक व्यवस्था आदि की जानकारी मिलती है यह जानकारी अधिक प्रामाणिक है क्योंकि रेहला की रचना भारत से बाहर मोरक्कों में की गई। अतः इसे न सुल्तान का कोई भय था न ही कोई लालच।
- इब्नबतूता ने ढोल की आवाज के साथ महिला **के सती होने** का उल्लेख करता है।

BOOSTER ACADEMY

भक्ति आन्दोलन

- भक्ति का प्रथम उल्लेख **''श्वेताश्वर उपनिषद''** में मिलता है, परन्तु भक्ति का विस्तृत उल्लेख भगवत् गीता में मिलता है। जहां पर भक्ति को मोक्ष का साधन बताया है।

नोट:- भक्ति आन्दोलन उद्भव दक्षिण भारत में हुआ जो 7वीं शताब्दी में अलवार व नयनार संतो द्वारा हुआ।

❑ दक्षिणी भारत में भक्ति आन्दोलन

- अलवार संत (विष्णु भक्त) - 12 संत, एकमात्र महिला संत अण्डाल
- नयनार संत (शैव भक्त) (63 संत)
- दक्षिणी भारत में भक्ति आन्दोलन
- 7वीं शताब्दी (प्रथम भक्ति चरण)

Note:- मध्यकालीन भारत में (13-16वीं) शताब्दी के मध्य भक्ति आन्दोलन का पुर्नजन्म हुआ अर्थात द्वितीय भक्ति चरण।

- भक्ति आन्दोलन की पृष्ठभूमि आदि गुरू **शंकराचार्य** ने तैयार की तथा भक्ति आन्दोलन के जनक **रामनुजचार्य** माने जाते है।

❑ शकंराचार्य (प्रछन्न बौद्ध)

- **जन्म -** 788 ई. (केरल)
- **मृत्यु -** 820 (बद्रीनाथ)
- **प्रथम गुरू -** गोविन्द योगी
- **उपाधि -** परमहंस
- **दर्शन -** अद्वैतवाद (बाह्य जगत/संसार मिथ्या है। जबकि ब्रह्म ईश्वर ज्ञान ही सत्य है।) अर्थात शंकराचार्य ज्ञानमार्गी थे।

आदिगुरू शंकराचार्य द्वारा स्थापित पीठ

पीठ	स्थान
1. ज्योर्तिषपीठ (विष्णु)	बद्रीनाथ (उत्तराखण्ड)
2. गोवर्धनपीठ (बलराम व शुभद्रा)	पुरी (उडीसा)
3. शारदापीठ(कृष्ण)	द्वारिका (गुजरात)
4. श्रृंगेरीपीठ (शिव)	मैसूर (कर्नाटक)

BOOSTER ACADEMY

भक्ति युग

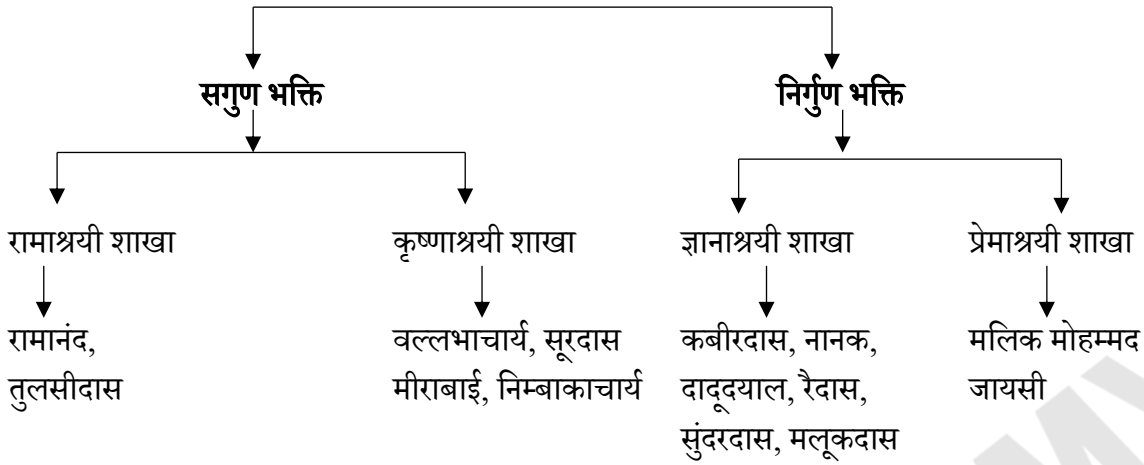

❑ रामानुजचार्य:- वैष्णव भक्त

- सगुण भक्ति संत
- **जन्म -** पेराम्बदूर (तमिलनाडू) (1017-1137)
- **गुरू -** यतिराज से सन्यास धर्म में दीक्षा ली।

नोटः- शैव अनुयायी चोल शासक कुलोतुंग प्रथम के विरोध के कारण रामानुजचार्य को श्रीरंगम छोड़ना पडा तथा फिर उन्होंने अपना केन्द्र तिरूपति को बनाया।

- रामानुजचार्य ने ज्ञान के स्थान पर **भक्ति को मोक्ष** का साधन बताया।
- रामानुजचार्य ने शुद्रों को भागवत दर्शन एवं मोक्ष के अधिकार दिए।

Note:- रामानुजचार्य को दक्षिण भारत में विष्णु का अवतार कहा जाता है।

- रामानुजचार्य का दर्शन **''विशिष्टद्वैतवाद''** (ब्रह्म, ईश्वर, व जगत तीनों सत्य है।)
- **प्रमुख पुस्तकें** – वेदान्तसार, बह्मसूत्र भाष्य, न्याय कुलीश, वेदांतदीप आदि।

❑ निम्बार्क (12 वीं सदी के संत)

- सगुण भक्ति संत
- जन्म - वेल्लारी (कर्नाटक)
- ये रामानुजचार्य के समकालीन थे।
- इनको सुदर्शन का अवतार भी कहा जाता है।
- **निम्बार्क का दर्शन:-** द्वैताद्वैत अर्थात **''ईश्वर, जगत एवं आत्माओं में समानता होते हुए भी परस्पर विभिन्नता है।''** अतः इस दर्शन को **''भेदाभेद दर्शन''** भी कहते है।
- इन्होंने राधाकृष्ण की भक्ति की तथा वृन्दावन में अपना आश्रम स्थापित किया।

Note:- राजस्थान में निम्बार्क सम्प्रदाय की पीठ **''सलेमाबाद''** (अजमेर) में है।

- निम्बार्क का अधिकांश समय वृन्दावन में बीता था तथा ये अवतारवाद में विश्वास करते थे।
- दशश्लोकी की सिंद्धांत की रचना की।

❑ मध्वाचार्य:- (आनन्द तीर्थ)

- **जन्म -** 1199 (उडपी) दक्षिणी भारत
- इन्हें **वायु का अवतार** भी कहा जाता है।
- इन्होंने शंकराचार्य एवं रामानुजचार्य के दर्शनों का विरोध किया।
- ये लक्ष्मीनारायण (विष्णु) के उपासक थे।
- **दर्शन - द्वैतवाद** (ईश्वर व जीव पृथक-पृथक है।)
- मध्वाचार्य ने ब्रह्म सम्प्रदाय की स्थापना भी की थी।
- मध्वाचार्य के शिष्य **"शिष्य जयतीर्थ"** ने इनके उपदशों को **"सूत्रभाष्य"** में संकलित किया।

❑ रामानंद (15वीं शताब्दी)

- **जन्म-** इलाहाबाद के कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में।
- **गुरू -** राघवानंद (धर्म की शिक्षा ली थी)
- इन्होंने अपने उपदेश हिन्दी भाषा में दिये।

नोटः- ये उत्तरी भारत के प्रथम महान् संत थे, इन्होंने विष्णु के स्थान पर राम की भक्ति को प्रधानता दी।

नोटः- रामानंद जी ने सभी वर्गों को उपदेश दिया तथा सभी जातियों को समान मानते थे, परन्तु इन्होंने कभी भी जाति- प्रथा का विरोध नहीं किया।

नोटः- रामानंद भक्ति आन्दोलन के पहले संत थे जिन्होंने महिलाओं को भी अपनी शिष्या बनाया (पदमावती व सुरसीर प्रमुख शिष्या)

- रामानंदी/रामावती सम्प्रदाय के केन्द्र- गलता(जयपुर), रैवासा (सीकर)
- रामानंद जी के 12 शिष्य थे जो विभिन्न जातियों के थे अर्थात्- रैदास/रविदास (दलित), कबीर (जुलाहा), धन्ना (जाट), पीपा(राजपूत), सघंना (कसाई), सेना(नाई) आदि।
- रामानंद ने **आनन्दभाष्य** नाम से ब्रह्मसूत्र पर टीका लिखी।
- रामानंद का एक दोहा सिक्खों के **आदिग्रन्थ** में भी संकलित है।

❑ कबीर (1398-1518)

- जुलाहा दम्पति (नीरू व नामा) को वाराणसी के लहरतारा तालाब के किनारे मिला।
- **कबीर का अर्थ -** महान्

नोटः- निर्गुण भक्ति संत एवं एकेश्वरवादी

- हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रवर्तक
- कबीर ग्रहस्थ संत थे। कबीर ने सती प्रथा व बाल विवाह का विरोध किया।
- कबीर ने जाति प्रथा, छुआ-छुत आदि का विरोध किया।
- **''पाहन पूजै हरि मिले तो मैं पुजु पहार, तातै तो चकिया भली पीस खाये संसार'' – कबीर।**
- कबीर के कुछ दोहे आदि ग्रन्थ में संकलित है।

- कबीर की शिक्षाएं उनके शिष्य भागदास ने **''बीजक''** में संग्रहित थी।
- सबद, रमैनी, साखी, मंगल, होली, रेख्ता आदि कबीर की रचनाएं है।

नोट:- कबीर की कुछ रचनाओं को **''उलंटबासी''** के नाम से भी जाना जाता है।

- कबीर की मृत्यु **''मगहार''** में हुई तथा इनकी मृत्यु के बाद धर्मदास कबीर पंथ की गद्दी पर बैठा।

नोट:- धर्मदास व कबीर के संवादों का संकलन **''अमरमूल''** ग्रन्थ में मिलता है।

नोट:- मलूकदास कबीर के प्रमुख अनुयायी थे, इनका जन्म खत्री परिवार इलाहाबाद में हुआ।

❑ रविदास/रैदास

- **जन्म -** वाराणसी में
- रामानंद के शिष्य, दलित थे।
- निर्गुण ब्रह्म के उपासक
- कबीर ने इसे **''संतो का संत''** भी कहा।
- मीराबाई एवं रानी झालीबाई इनकी शिष्या थी।
- **रैदास के कथन - ''मन चंगा तो कढ़ौती में गंगा'', ''हरि सब में है, सब में हरि है।''**
- रैदास ने रायदास सम्प्रदाय की स्थापना की।
- अवतारवाद का खण्डन किया।

❑ दादू (1544-1603)

- **जन्म -** 1544 ई. अहमदाबाद में
- दादू के गुरू कबीर के पुत्र **''कमाल''** थे।
- निर्गुण भक्ति परम्परा के संत
- दादू कबीर पंथी एवं अकबर के समकालीन थे।
- दादू के अनुसार सभी स्त्री - पुरूष ईश्वर के समक्ष भाई - बहिन है।
- दादू ने मूर्तिपूजा, कर्मकाण्ड एवं जातिवाद का विरोध किया।
- दादू ग्रहस्थ जीवन को अच्छा मानते थे इनके अनुसार आध्यात्मिक उन्नति हेतु ग्रहस्थ जीवन उपयुक्त है।
- दादू के उपदेश दादूवाणी में संकलित है।
- दादू की शिक्षा – **विनयशील बनो तथा अहम से मुक्त रहो।**

नोट:- दादू के अनुसार ''बिना गुरू के ईश्वर का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता।''

- दादू पंथ की मुख्य गद्दी/पीठ नरायणा (जयपुर) में है। दादूपंथ को मानने वाले राजस्थान में ही मिलते है।
- आमेर शासक भगवंतदास दादू से प्रभावित थे तथा इन्होंने ही दादू का परिचय अकबर से करवाया था।
- अकबर ने विचार विमर्श हेतु 1585 ई. को फतेहपुर सीकरी में दादू को आमंत्रित किया था।
- **दादू पंथ के सत्संग स्थल -** अलख दरीबा।

BOOSTER ACADEMY

- **दादू पंथ के प्रार्थना स्थल** – दादूद्वारा
- दादू परम्परा में 152 शिष्य मुख्य थें जिनमें 100 शिष्य एकान्तवासी थे तथा 52 शिष्य ''बावन स्तम्भ'' कहलाये थे तथा 52 स्थानों पर ही दादूद्वारे बनाये गये थे।

  दादूपंथ की पाँच शाखाएँ

  1. खालसा 2. विरक्त 3. उत्तरोद 4. खाकी 5. नागा (इस शाखा की स्थापना सुन्दरदास ने की थी तथा इस शाखा के लोग सेना में ज्यादा भर्ती होते थे।)
- **दादू के शिष्य**
  - ✓ फरीद, मोहम्मद काजी
  - ✓ **गरीबदास** - दादू की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठे
  - ✓ सुन्दरदास
  - ✓ बखना जी
  - ✓ **रज्जब जी** - ये हमेशा दूल्हे के वेश में ही रहते थे। **''ये संसार वेद है, तथा सृष्टि कुरान है।''** इनका दार्शनिक मत था कि "जितने मनष्य है उतने ही अधिक संप्रदाय है।"

❒ वीरभान

- जन्म – 1543, नारनौल (हरियाणा)
- सतनामी संप्रदाय की स्थापना।
- एकेश्वरवादी विचारधारा
- सतनामियों के धर्म की पुस्तक **"पोथी"** है।

❑ सूरदास (कृष्ण भक्त तथा सगुण संत)

- **जन्म** - रूकनात गांव (आगरा)
- सूरदास ने वल्लभाचार्य से शिक्षा प्राप्त की थी।
- सूरदास अकबर (1556-1605) तथा जहांगीर (1605-27) के समकालीन थे।
- भ्रमर गीतों की रचना की
- **सूरदास की रचनाएँ- 1. सूरसागर 2. सूर सारावली 3. साहित्य लहरी**
- सूरदास को अष्टमार्ग/पुष्टिमार्ग का जहाज भी कहा जाता है।

❑ वल्लभाचार्य (1479-1531)

- **अग्नि का अवतार**
- सगुण भक्ति परम्परा के संत
- ये मूलतः तेलगांना के ब्राह्मण थे।
- इनका जन्म वाराणसी में हुआ तथा वाराणसी में गंगा नदी में जल समाधि द्वारा अपनी देह त्यागी।

नोट:- वल्लभाचार्य ने विजयनगर में कृष्ण देवराय के समय वैष्णव पंथ की स्थापना की।

- वल्लभाचार्य व उनके अनुयायी कृष्ण के बाल स्वरूप (श्रीनाथ जी) की पूजा करते थे तथा मूर्तिपूजा को महत्व देते थे।
- वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने वृन्दावन में श्रीनाथ जी का भव्य मन्दिर बनवाया तथा **''श्रीनाथ जी की प्रतिमा''** स्थापित करवायी।
- औरंगजेब के समय यह प्रतिमा सिहाड गांव (नाथद्वारा,राजसमंद) में प्रतिस्थापित करवायी गई।
- वल्लभाचार्य ने **''पुष्टिमार्ग पंथ''** की स्थापना की
- वल्लभाचार्य ने **''रूद्र सम्प्रदाय''** की स्थापना की।
- वल्लभाचार्य का दर्शन **''शुद्वादैतवाद''** था।
- वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ को अकबर ने **''गोकुल व जैतपुरा''** की जागीर थी।
- **विट्ठलनाथ द्वारा अष्टछाप मण्डल की स्थापना की गई, इसमें आठ कवि थे। अर्थात्**

1. सूरदास	2. कुम्भनदास
3. परमान्नदास	4. कृष्णदास
5. छीत स्वामी	6. गोविन्द स्वामी
7. नंददास	8. चतुर्भुजदास

- विट्ठलनाथ ने **"चौरासी वैष्णव वार्ता"** पुस्तक की रचना की।

❑ चैतन्य महाप्रभु (1486-1533)

- **जन्म -** 1486 (नदिया जिला, बंगाल)
- **बचपन का नाम -** निमाई, वास्तविक नाम- विश्वम्भर
- विद्या प्राप्ति के बाद **''विद्यासागर''** की उपाधि प्राप्त की।
- दो बार विवाह किया, परन्तु 24 वर्ष की आयु में सन्यास ले लिया।
- चैतन्य ने बंगाल में गौडीय वैष्णव धर्म की स्थापना की इसे **मध्य गौडीय सम्प्रदाय/अचिन्त्य भेदाभेद सम्प्रदाय** भी कहते है।
- चैतन्य ने गोसाई संघ की स्थापना की।
- इन्होंने **मूर्तिपूजा का विरोध नहीं किया** तथा सभी को कृष्ण की भक्ति के योग्य माना, परन्तु निम्न वर्ग एवं मुसलमानों को मंदिर में प्रवेश योग्य नहीं माना।
- चैतन्य ने भक्ति में नृत्य व गायन को महत्व दिया।
- चैतन्य महाप्रभु को **''कृष्ण का अवतार''** भी माना गया है।
- चैतन्य महाप्रभु ने भक्ति में **कीर्तन प्रथा व ''जोडी करताल''** को प्रसिद्ध बनाया।
- चैतन्य महाप्रभु समाज सुधारक नहीं थे।

❑ तुलसीदास

- **जन्म -** राजापुर गांव (बांदा जिला, U.P.)
- **पत्नी** – रत्नावली

- इनका **''आइने अकबर''** में उल्लेख नहीं है। जबकि ये अकबर व जहांगीर के समकालीन थे।
- इन्होंने अकबर के समय अवधी भाषा में **''रामचरितमानस''** ग्रन्थ लिखा। (1575)
- **अन्य रचनाएँ-** जानकी मंगल, रामज्ञा प्रश्न, गीतावली, दोहवली, वैराग्य संदीपनी, कवितावली, विनयपत्रिका, बरवै रामायण, सतसई आदि।

❑ मीराबाई

- **जन्म -** 1498 (कुडकी गांव-पाली)
- **मृत्यु -** 1546 द्वारिका (गुजरात)
- **पिता -** रतन सिंह राठौड़
- **विवाह -** भोजराज (सिसोदिया वंश के राणा सांगा के पुत्र)
- मीरा बाई की तुलना प्रसिद्ध सूफी महिला संत **''रबिया''** से की जाती है।
- भोजराज की मृत्यु के बाद ये कृष्ण भक्ति में लीन हो गई थी।
- **मीरा के गुरू -** जीव गोस्वामी, रैदास
- मीराबाई के भक्ति गीतों को **''पदावली''** कहा जाता है।
- **मीराबाई की रचनाएँ -** राग गोविन्द, नरसी का मायरा

❑ शंकरदेव

- ये असम के चैतन्य महाप्रभु कहलाते थे।
- ये एकेश्वरवादी संत थे, इन्होंने विष्णु एवं उनके अवतार कृष्ण की भक्ति करते थे।
- इन्होंने **''एकशरण सम्प्रदाय'' (महापुरूषीय संप्रदाय)** की स्थापना की थी तथा सन्यास को नकारा व ग्रहस्थ जीवन पर जोर दिया।
- इन्होंने महिला सहयोगी देवियों (राधा, सीता) आदि के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया।
- शंकर के उपदेशों को **''भगवती धर्म''**(गीता व भगवत पुराण पर आधारित थे।) कहकर सम्बोधित किया जाता है।
- शंकर की मुख्य रचना **''कीर्तनघोष''** थी।
- शंकर मूर्तिपूजा विरोधी थे, एकमात्र वैष्णव संत थें जिन्होंने मूर्ति के रूप में कृष्ण पूजा का विरोध किया।
- शंकर ने आध्यात्मिक ज्ञान प्रचार के लिए मठ/सत्र तथा नामोधरा (प्रार्थना स्थल) के महत्व को बढावा दिया।

❑ महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन

- महाराष्ट्र धर्म वैष्णवादी भक्ति परंपरा से निकली मध्यकालीन भक्ति आंदोलन की एक शाखा थी। सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में अत्यधिक उदारवादी यह आंदोलन अपना एक स्वतंत्र और अलग लक्षण विकसित किया।
- विठोबा की पूजा, **विठोबा जिन्हें कृष्ण का अवतार** माना जाता था। इस आंदोलन का मुख्य केन्द्र पंढरपुर के मुख्य देवता विठोबा थें इसलिए इस आंदोलन को पढंरपुर आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है।

BOOSTER ACADEMY

❖ **संप्रदाय विभाजन:-** महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन मुख्य रूप से 2 संप्रदायों में विभक्त था।

1. धारकारी संप्रदाय - इसमें राम की पूजा की जाती थी। इस संप्रदाय के प्रमुख संत रामदास थे धारकरी संप्रदाय के अनुयायी सांसारिक कार्य करते हुए भी ईश्वर को समर्पित रहते थे।

2. वारकरी संप्रदाय - विष्णु के रूप में विट्ठल (विठोबा) की उपासना की जाती थी। इस संप्रदाय के केन्द्र पढंरपुर था।

- **विठोबा पंथ के 3 महान गुरू: 1. ज्ञानेश्वर (ज्ञानदेव) 2. नामदेव 3. तुकाराम थे।**

❑ नामदेव (1270-1350 ई.)

- **जन्म/स्थल:** 1270 ई. को महाराष्ट्र के पंढरपुर में।
- **विशेष:** आरंभ में ये डाकू थे। इनका संबंध वारकरी संप्रदाय से था।
- **दार्शनिक मत:** नामदेव ने ब्राह्मणों की प्रभुसत्ता को चुनौती दी तथा जाति प्रथा का विरोध करते हुए सभी जाति के लोगों को अपना शिष्य स्वीकार किया। अपने अनुयायियों व शिष्यों के मध्य उन्होंने ईश्वर के प्रति बिना शर्त प्रेम और समर्पण का उपदेश दिया।
- **रचनाएं-** गीतात्मक पद गुरूग्रंथ साहिब में संकलित है। इन्होंने अनेक भक्तिपरक मराठी गीतों की रचना की जो अभंगों के रूप में प्रसिद्ध है।
- **विशेष -** नामदेव ने कहा था- **"एक पत्थर की पूजा होती है, तो दूसरों को पैरों तले रौंदा जाता है। यदि एक भगवान हैं, तो दूसरा भी भगवान है।"**

❑ ज्ञानेश्वर या ज्ञानदेव (1270-96 ई.)

- **जन्म स्थल-** 1271 ई. को महाराष्ट्र के आलिंदी ग्राम में
- **संप्रदाय : - वारकरी**
- **दार्शनिक मत:** इन्होंने महाराष्ट्र में भागवत धर्म की आधारशिला रखी तथा वारकरी पंथ को बढ़ावा दिया। ज्ञानेश्वर वारकरी संप्रदाय में विष्णु का 11वां अवतार माना जाता है।

❑ तुकाराम (1598-1650 ई.)

- **जन्म स्थल:** 1598 ई. को पूना के देही में
- **समकालीन:** शिवा जी
- **संस्थापक:** वारकरी संप्रदाय
- **दार्शनिक मत:** उनका कहना थ कि **''ईश्वर का न तो कोई नाम है न कोई रूप है और न ही कोई रहने का स्थल है।''**
- **विशेष:-** शिवाजी तुकाराम के प्रति बहुत श्रद्धा रखते थे शिवाजी द्वारा दिए गए उपहारों की भेंट को इन्होंने स्वीकार नहीं किया। इनके उपदेश अभंगों में मौजूद है।

BOOSTER ACADEMY

❑ रामदास

- **संप्रदायः** धारकरी
- इन्होंने **परामर्श संप्रदाय** की स्थापना की थी ये शिवाजी के समकालीन थे, शिवाजी पर इनका प्रभाव था। रामदास का उपदेश था कि **"अच्छे राजा का यह कर्तव्य है कि वह निर्धनों की रक्षा करें, असहायों की सहायता करे और प्रजा के कल्याण पर ध्यान दे।"**
- **विशेषः-** इन्होंने कृष्णा नदी के किनारे राम का एक मंदिर बनवाया। दशबोध/दासबोध रामदास की प्रमुख रचना है। इन्हें धारकरी संप्रदाय का प्रमुख संत माना जाता है।

सिक्ख गुरू

1. गुरू नानक (1469-1538 ई.)

- जन्म – 15 अप्रैल 1469 को तलवन्डी (वर्तमान ननकाना – पाकिस्तान) में हुआ।
- सिक्ख धर्म के संस्थापक।
- निर्गुण भक्ति संत।
- अवतारवाद व कर्मकांड का विरोध एवं हिंदू - मुस्लिम एकता पर बल दिया।
- सिकन्दर लोदी, बाबर, हुमायूँ के समकालीन।
- बगदाद, तिब्बत, श्रीलंका आदि की यात्राऐं।
- मरदाना इनका प्रिय शिष्य था।
- नानक ने लंगर (सामूहिक भोज) की प्रथा शुरू की।
- 1538 ई. में करतारपुर (पंजाब, पाकिस्तान) में मृत्यु।

2. अंगद (1538-1552)

- गुरूमुखी लिपि के जनक

3. अमरदास (1552-1574)

- 22 गद्दियों का निर्माण।

4. रामदास (1574-81)

- अमृतसर के संस्थापक

5. अर्जुनदास (1581-1606)

- आदिग्रंथ का संकलन
- अमृतसर में हरमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) का निर्माण
- जहांगीर ने इन्हें फांसी दी।

BOOSTER ACADEMY

6. हरगोविंद (1606-45)

- अकाल तख्त की स्थापना
- सिक्खों को लडाकू प्रजाति में बदला।

7. हरराय (1645-61)

- उत्तराधिकार युद्ध (मुगलों) में भाग लिया अपने पुत्र रामराय को मुगल दरबार में भेजा।

8. हरिकृष्णा (1661-64)

- अल्पव्यवस्क अवस्था में ही मृत्यु

9. गुरू तेग बहादुर (1664-75)

- औरंगजेब द्वारा फांसी

10. गोविंद सिंह (1675-1708)

- खालसा सेना का गठन (1699)
- धर्माचार हेतु "पाहुल" प्रथा का प्रवर्तन।

सूफी आन्दोलन

- सूफी का अर्थ है पवित्रता।
- आरम्भ-ईरान में (7-8वीं शताब्दी)
- यह इस्लाम में सुधारवादी आन्दोलन था।
- यह **सूफीमत या तसव्वुफ** के नाम से भी जाना जाता है।
- यह **एकेश्वरवादी** विचारधारा है।
- प्रथम ज्ञात सूफी संत **हसन बसरी थे।**
- प्रथम महिला सूफी संत – **राबिया।**
- **सूफी सिलसिला दो वर्गों में विभाजित है।**

सूफी सिलसिला

बा-शरा
जो शरीयत को मानते है। Ex.
♦चिश्ती सिलसिला
♦सुहरावर्दी सिलसिला

बे-शरा
जो शरीयत को नहीं मानते Ex.
♦कलंदर

BOOSTER ACADEMY

- भारत में इस्लामी रहस्यवाद की प्रथम पाठ्यपुस्तक फारसी भाषा में **''कश्फ उल-महजूब''** की रचना गजनी के निकट हुजविरी के निवासी **अबुल हसन अल हुजविरी** ने लाहौर में की।

❑ सूफी शब्दावली-

- **वली -** सूफी संत के उत्तराधिकारी
- **मलफूजात -** सूफी संतो के विचारों के कथन।
- **मकतूबात -** सूफी संतों के पत्रों का संकलन
- **खानकाह -** सूफी सन्तों का निवास स्थान।
- **जमायतखाना -** खानकाह से बड़ा स्थान।
- **विलायत -** आध्यात्मिक क्षेत्र जो राज्य नियंत्रण से मुक्त।
- **बैयत -** शिष्यता ग्रहण करने का कार्यक्रम।
- **बका-** मोक्ष
- **तजकिरा -** जीवनियों का स्मरण।
- **खिरका -** सूफी संतों के अंगवस्त्र।
- **उर्स -** पीर की आत्मा का ईश्वर से मिलन।

❑ प्रमुख सूफी सम्प्रदाय एवं भारत में उनके संस्थापक

सिलसिला	संस्थापक	स्थान
1. चिश्ती	ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती	अजमेर
2. सुहरावर्दी	शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी	मुल्तान
3. फिरदौसी	शेख बदरूद्दीन समरकंदी	बिहार
4. सत्तारी	शाह अब्दुल्ला सत्तारी	जौनपुर
5. कादिरी	शाह नियामतुल्ला व नासिरूद्दीन मु. जिलानी	उच्छ
6. नक्शबन्दी	ख्वाजा बाकी बिल्लाह	उच्छ

- **भारत में आगमन का क्रम –**

चिश्ती - सुहरावर्दी - फिरदौसी - सत्तारी - कादिरी - नक्शबंदी

❖ चिश्ती सम्प्रदाय

- **मूल संस्थापक -** ख्वाजा अब्दुल चिश्ती
- **भारत में संस्थापक -** ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती
- योग पद्धति को सर्वप्रथम चिश्ती सम्प्रदाय ने स्वीकार किया।
- विलायत नामक संस्था स्थापित की, जो राज्य के नियंत्रण से बाहर थी (आध्यात्मिक संस्था)
- भारत में प्रथम चिश्ती सूफी **सखी सरवर** थे।

BOOSTER ACADEMY

❖ चिश्ती सम्प्रदाय के प्रमुख संत

- ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती
- शेख हमीदुद्दीन नागौरी
- ख्वाजा कुतुबुद्दीन गंज ए-शंकर
- निजामुद्दीन औलिया
- नासिरूद्दीन चिराग - ए- दिल्ली

❖ ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती

- भारत में चिश्ती सम्प्रदाय के संस्थापक।
- 1192 ई. मु. गौरी के साथ भारत आये।
- इनके गुरू उस्मान हारूनी थे।
- ये अद्वैत दर्शन में विश्वास रखते थे।
- गौरी ने **"सुल्तान-उल-हिन्द"** की उपाधि दी।
- इन्हें **गरीब नवाज** भी कहा।
- ये पृथ्वीराज चौहान तृतीय के समकालीन थे।
- अजमेर दरगाह का निर्माण प्रारम्भ इल्तुतमिश ने करवाया।
- **दरगाह में तीन दरवाजे हैं।**
  1. **मुख्य दरवाजा** – निजाम दरवाजा, इसे हैदराबाद के निजाम ने बनवाया।
  2. **शाहजहाँनी दरवाजा** – इसे मुगल सम्राट शाहजहां ने बनवाया।
  3. **बुलन्द दरवाजा** – सुल्तान महमूद खिलजी ने बनवाया।
- मु. बिन तुगलक पहला सुल्तान जो ख्वाजा की दरगाह आया।
- अकबर 1562 ई. में प्रथम बार ख्वाजा दरगाह आया तथा 1580 ई. तक कुल 14 बार आया।
- अकबर ने खाना पकाने के बर्तन (देग) भेंट की।
- मुगल शहजादी जहाँआरा 1643 में चिश्ती दरगाह आयी।
- ख्वाजा के कथनों का संग्रह - **''दलैल अल अरफिन''**

❖ शेख हमीदुद्दीन नागौरी

- नागौर के सुवल गांव में आकर बसे।
- एकमात्र चिश्ती सूफी जिन्होंने शाकाहार अपनाया।
- केवल कृषि से जीविका चलाते थे।
- ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने **"सुल्तान - उत – तरीकीन" की उपाधि दी।**
- इनके सम्मान में **इल्तुतमिश ने अतारकिन का दरवाजे** का निर्माण करवाया।

BOOSTER ACADEMY

❖ ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी

- ख्वाजा साहब के शिष्य थे।
- दिल्ली में बसने वाले प्रथम संत।
- इन्होंने इल्तुतमिश द्वारा प्रदत्त **''शेख उल इस्लाम''** के पद को अस्वीकार कर दिया।
- शेख उल इस्लाम का पद सर्वप्रथम इल्तुतमिश ने **शेख नज्मुद्दीन सुगरा उर्फ शेख नक्शवी** को दिया।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने इनके सम्मान में **कुतुबमीनार** का निर्माण करवाया।

❖ शेख फरीदुद्दीन गंज - ए- शकर

- बख्तियार काकी के शिष्य थे।
- ये **बाबा फरीद** के रूप में प्रसिद्ध हुए।
- इनके कारण चिश्ती सम्प्रदाय भारत में लोकप्रिय हुआ।
- ये बलबन के दामाद थे।
- इनके वचन **गुरूग्रन्थ साहिब** में संकलित है।
- इन्हें **पंजाबी भाषा का प्रथम कवि** माना जाता है।
- बाबा फरीद **चिल्ल ए माकूस** का अभ्यास करते थे।
- **इनकी मृत्यु पश्चात् चिश्ती सम्प्रदाय 2 भागों में बँट गया।**
  1. **साबिरी उपशाखा** - अलाउद्दीन साबिर
  2. **निजामी उपशाखा** - निजामुद्दीन औलिया
     - ✓ **खानकाह - अजोधन - (पंजाब)**
     - ✓ **मजार - पाक पाटन (पंजाब)**

❖ निजामुद्दीन औलिया

- बाबा फरीद के शिष्य थे।
- **वास्तविक नाम** - मु. बिन अहमद बिन दानियल अल बुखारी
- **प्रमुख शिष्य** - नासिरूद्दीन (चिराग - ए - दिल्ली) तथा अमीर खुसरों
- अमीर खुसरो ने **कौल** का प्रचलन किया।
- (कव्वाली के शुरू व अन्त में गाया जाता है।)
- मुबारक खिलजी **''मैं उस व्यक्ति को 1000 टंके दूँगा''** जो औलिया का सिर लाकर देगा।
- औलिया **अविवाहित व ब्रह्मचारी** थे।
- **गयासुद्दीन तुगलक** ने औलिया की लोकप्रियता के कारण दिल्ली छोड़ने का आदेश दिया। औलिया ने गयासुद्दीन से कहा - **''हुनुज दिल्ली दुरस्त''**
- औलिया ने दिल्ली से सात सुल्तानों का शासन देखा किन्तु किसी के दरबार में नहीं गये।
- अलाउद्दीन ने औलिया से मिलने की अनुमति माँगी तो औलिया ने **"कहा मेरे मकान में दो दरवाजे हैं। यदि सुल्तान एक दरवाजे से अन्दर आयेगा तो मैं दूसरे दरवाजे से बाहर चला जाऊँगा।"**

BOOSTER ACADEMY

- औलिया को **महबूब - ए - इलाही** कहा जाता था।
- अनुयायी द्वारा दिया गया नाम **सुल्तान - उल – मशेख।**
- इन्होंने योग अपनाया इसलिए **योगी सिद्ध** कहे जाते थे।
- औलिया ने **सुलह-ए-कुल** का सिद्धान्त दिया।
- मु. बिन तुगलक ने उनकी कब्र पर मकबरा बनवाया।
- औलिया ने **रहतुल कुलुब** लिखी।
- अमीर हसन सिज्जी ने इनकी **मलफुजात** लिखी।

↓

फवायद-उल-फवाद

(औलिया की वार्तालाप का वर्णन)

❖ नासिरूद्दीन चिराग-ए-दिल्ली

- **जन्म-** अयोध्या (अवध)
- इन्होंने **तौहिद - ए- वजूदी** की रचना की।
- इनकी 100 वार्ताओं का वर्णन **खैर - उल - मजलिस** में है जिसकी रचना **हमीद कलन्दर** ने की।

❖ अन्य चिश्ती सन्त

- **सैयद मुहम्मद गेसूदराज** - इन्हें **बन्दा नवाज** भी कहते थे।
  - किताब - **मिराज उल आशिकिन**
  - केन्द्र - गुलबर्गा (कर्नाटक)
- **बुरहानुद्दीन गरीब** - **औलिया के शिष्य**
  - प्रथम सूफी संत जिन्होंने द. भारत में सूफीवाद फैलाया।
  - बुरहानपुर शहर इन्हीं के नाम पर।
- **शेख अब्दुल कुद्दूस गंगोही** - लोदी व बाबर कालीन।
  - चिश्ती साबिरी शाखा के संत।
  - कविताएँ - **''अलख''**
  - पुस्तक - **''रश्दनामा''**
- बंगाल शासक हुसैनशाह का **सत्यपीर आन्दोलन** चिश्ती सम्प्रदाय से प्रभावित था।
- जहाँगीर का जन्म **शेख सलीम चिश्ती** की कुटिया (फतेहपुर सीकरी) में हुआ।
- औरंगजेब के समय **शेख कलीमुल्ला** के नेतृत्व में चिश्ती सिलसिले को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया गया।

❑ सुहरावर्दी सम्प्रदाय

- **स्थापना -** शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी (बगदाद)
- **प्रमुख केन्द्र** – मुल्तान, पंजाब व सिंध क्षेत्र
- सूर्य को ईश्वर का रूप माना है।
- इसमें गद्दीनवीशी का वंशानुगत सिद्धांत भी दिखाई देता है।

BOOSTER ACADEMY

- ये सम्प्रदाय **विलासिता का जीवन** व्यतीत करते थे **तथा सक्रिय राजनीति** में भाग लेते थे।
- **शिहाबुद्दीन के शिष्य - शेख बहाउद्दीन जकारिया, जलालुद्दीन तबरीजी।**

- **शेख बहाउद्दीन जकारिया**
  - ✓ भारत में सुहरावर्दी सम्प्रदाय का प्रचार किया।
  - ✓ इल्तुतमिश ने इन्हें शेख अल इस्लाम की उपाधि दी।
  - ✓ इनकी खानकाह में फकीरों का प्रवेश करना मना था।
  - ✓ इन्होंने कहा **''धन हृदय में रोग है, परन्तु हाथ में औषधि के समान है।''**

- **जलालुद्दीन तबरीजी**
  - ✓ इन्होंने बंगाल में सुहरावर्दी सम्प्रदाय को लोकप्रिय बनाया।

- **सैय्यद जलालुद्दीन सुर्ख पोश बुखारी**
  - ✓ ऐसा कहा जाता है इन्होंने 36 बार मक्का की यात्रा की। अत: इन्हें **"जहांनिया जहांगश्त"** भी कहा जाता है।

- **शेख मूसा -** सदैव स्त्री की वेशभूषा में रहते थे।
- शाहदौला दरियायी - **''जिनको न दे मौला, उसको दे दौला''**
- **आगे चलकर सुहारवर्दी दो भागों में बँट गया**

सुहरावर्दी

सत्तारी सम्प्रदाय/तैफुरी सम्प्रदाय	फिरदौसी सिलसिला
स्थापना - शाह अब्दुल्ला सत्तार (जौनपुर)	**स्थापना -** शेख बदरूद्दीन, शेख सरफुद्दीन याहिया मुनीरी (बिहार)

- सत्तारी सिलसिले के संत गौंस ने हुमायूँ की सफलता की घोषणा की। तथा कहा था कि **"सफलता की दुल्हन शीघ्र ही विवाह के मंच पर कदम रखेगी।"**
- **शिष्य** – हुमायूँ, तानसेन।

❑ कादिरी सम्प्रदाय

- **स्थापना -** शेख अब्दुल कादिर जिलानी।
- यह इस्लाम का प्रथम रहस्यवादी पंथ है।

❖ प्रमुख संत

BOOSTER ACADEMY

- **सैय्यद नासिरूद्दीन मुहम्मद जिलानी -** कच्छ में प्रभाव।
- शाह नियामत उल्ला।
- **शेख मीर मुहम्मद मियां मीर -** इस सम्प्रदाय के भारत में सबसे प्रसिद्ध संत।
  - ✓ इन्होंने अमृतसर में स्वर्णमंदिर की नींव रखी थी।
  - ✓ शिष्य **- गुरू अर्जुन देव।**
- **मुल्ला शाह बदख्शी -** मियां मीर के शिष्य
  - ✓ **जीवनी – साहिबिया**
  - ✓ **जहाँआरा व दारा शिकोह भी इनके अनुयायी थे।**

❑ नक्शबंदी सम्प्रदाय

- यह सबसे कट्टरवादी सिलसिला था।
- शरीअत के कानूनों पर बल दिया।
- नक्शबन्दी के अलावा सभी ने यौगिक प्राणायाम को अपनाया।

❖ ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्दी

- नक्शबंदी सम्प्रदाय के संस्थापक (बगदाद)

❖ ख्वाजा बाकी बिल्लाह

- भारत में नक्शबंदी सम्प्रदाय के संस्थापक।

❖ शेख अहमद फारूख सरहिन्दी

- अकबर की नीतियों का विरोध किया।
- मकतूबात - ए- रब्बानी - पत्रों का संकलन।
- इसे इस्लाम का **धर्म सुधारक और नव जीवनदाता** कहा जाता है।
- जहाँगीर ने इन्हें जेल में डलवा दिया।
- बाबर नक्शबंदी नेता अब्दुल्ला अहरार का शिष्य व अनुयायी था।
- औरंगजेब शेख अहमद सरहिन्दी के पुत्र **"मीर मासूम"** का शिष्य था।
- नक्शबंदी के अलावा सभी सूफी सम्प्रदायों ने यौगिक मुद्राओं व प्राणायाम को अपनाया।
- नक्शबंदी सम्प्रदाय के अनुसार मनुष्य का ईश्वर से सम्बंध प्रेमी और प्रेमिका का सम्बंध नहीं है। अपितु गुलाम व मालिक की भांति है।
- **अन्य नक्शबंदी संत :-** अब्दुल लतीफ, ख्वाजा महमूद, मिर्जा मजहर जानेजाना आदि।

BOOSTER ACADEMY

विजयनगर साम्राज्य

❑ स्थापना

- काकतीय वंश के सामंत संगम के पुत्र हरिहर व बुक्का ने 1336 ई. में तुंगभ्रदा नदी के दक्षिणी तट पर विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की।
- **उद्देश्य**-शक्तिशाली हिन्दू राज्य की स्थापना करना।
- मो. बिन तुगलक हरिहर व बुक्का को बंदी बना कर दिल्ली ले गया व इस्लाम ग्रहण करवाया।
- दोनों भाइयों ने गुरू माधव विधारण के सहयोग से पुनः हिन्दू धर्म स्वीकार किया।
- माधव विधारण्य व इनके भाई सायण (वेदों के प्रसिद्ध भाष्यकार) की सहायता से विजयनगर शहर की स्थापना की।
- विजयनगर का वर्तमान नाम हम्पी है। हम्पी भग्नावशेषों को सर्वप्रथम मैकेन्जी ने 1800 में खोजा।

❑ चार वंश

राज्य	संस्थापक
1. संगम वंश (1336-1485 ई.)	हरिहर एवं बुक्का
2. सालुव वंश (1485-1505 ई.)	नरहरि सालुव
3. तुलुव वंश (1505-1570 ई.)	वीर नरसिंह
4. अराविडु वंश (1570-1649 ई.)	तिरूमल

संगम वंश (1336-1485)

❖ हरिहर प्रथम (1336-1356 ई.)

- 1336 ई. में हम्पी (हस्तिनवती) राज्य की नींव डाली। जो विजयनगर साम्राज्य बना।
- विजयनगर को राजधानी बनाया।
- मदुरा पर विजय प्राप्त की।
- इसे एक समुद्र का स्वामी कहा जाता था।

❖ बुक्का (1356-1377 ई.)

- हरिहर का भाई था।
- इसे तीन समुद्रों का स्वामी कहते थे।
- पुत्र कंपा की सहायता से मदुरा को विजयनगर में मिलाया।
- बुक्का ने **"वेदमार्ग प्रतिष्ठापक"** की उपाधि धारण की।
- इसने दक्षिण में वैदिक संस्कृति को प्रसारित किया (सायण की सहायता से)
- बहमनी व विजयनगर के मध्य युद्ध रायचूर दोआब **(हीरे व लोहे की खाने) - (कृष्णा व तुंगभद्रा के बीच)**
- पत्नि गंगादेवी ने **"मदुरैविजयम"** की रचना की।

BOOSTER ACADEMY

❖ हरिहर द्वितीय (1377-1404 ई.)

- सर्वप्रथम महाराजधिराज व राजपरमेश्वर की उपाधि धारण की।

पुस्तक	लेखक
एतरेय ब्राह्मण	सायण
सर्वदर्शन संग्रह	माधवचार्य
हरिविलास	श्रीनाथ

❖ देवराय प्रथम (1406-1422 ई.)

- तुंगभद्रा नदी पर बाँध बनवाया तथा नहरों का निर्माण करवाया।
- प्रथम इटली यात्री निकोलो कोण्टी 1420 में विजयनगर आया।
- सेना में मुसलमानों की भर्ती सर्वप्रथम देवराय प्रथम ने की।

❖ देवराय द्वितीय (1425-1446 ई.)

- वंश का सबसे शक्तिशाली शासक।
- इसे अभिलेखों में गजबेटकर (हाथियों का शिकारी) कहा।
- मुसलमानों को जागीरें दी।
- 2000 तुर्क धनुर्धारियों की नियुक्ति की।
- फारसी राजदूत **"अब्दुर्रज्जाक"** ने विजयनगर की यात्रा की।
- दहेज प्रथा को अवैधानिक घोषित किया।
- **इसने 2 ग्रन्थ लिखे-**
- महानाटक सुधानिधि।
- वादरायण के ब्रह्मसूत्र पर टीका।

❖ मल्लिकार्जुन (1446-1465)

- इसे **"प्रौढ देवराज"** भी कहा जाता था।
- चीनी यात्री **"माहुआन"** 1451 में विजयनगर आया।

❖ विरूपाक्ष द्वितीय (1465-1485)

- अन्तिम संगम वंश शासक था।

BOOSTER ACADEMY

सालुव वंश (1485-1505 ई.)

- स्थापना - 1485 में नरसिंह सालुव ने।
- प्रथम बलापहार कहा जाता था।
- सेनापति नरसा नायक को अपने अल्पवयस्क पुत्र इम्माड़ि नरसिंह का संरक्षक बनाया, लेकिन मौका पाकर नरसा स्वयं शासक बन गया।

तुलुव वंश (1505-1570 ई.)

- 1505 में नरसा नायक पुत्र वीर नरसिंह ने इम्माड़ि नरसिंह की हत्या की एवं स्वयं शासक बना।
- इसे **"द्वितीय बलापहार"** कहा जाता था।
- 1509 में मृत्यु के बाद कृष्ण देवराय शासक बना।

❖ कृष्णदेवराय (1509-29 ई.)

उपाधियाँ

1. अभिनव भोज।
2. आन्ध्र भोज।

- सबसे महान शासक।
- 1509 -10 ई. में बीदर के सुल्तान मुहम्मद शाह ने बीजापुर के आदिलशाह के साथ विजयनगर पर आक्रमण किया परन्तु पराजित हुआ व आदिलशाह मारा गया।
- कृष्णदेवराय ने गुलबर्गा व बीदर पर आक्रमण कर बहमनी सुल्तान महमूद शाह को कारागार से मुक्त करा कर बीदर की गद्दी पर बैठाया।
- कृष्णदेवराय ने **"यवनराज स्थापनाचार्य"** का विरूद्ध धारण किया।
- गोलकुण्डा के संस्थापक सुल्तान कुली कुतुबशाह को पराजित किया।
- पुर्तगालियों को भटकल (कर्नाटक) में किला बनाने की अनुमति दी।
- मां नगला देवी की स्मृति में नागपुर नगर की स्थापना की।
- पत्नि की याद में हॉस्पेट नगर की स्थापना की।
- इसका राजदरबार **"भुवन विजय"** था।
- कृष्ण देवराय का दरबारी संगीतकार लक्ष्मी नारायण था, जिसकी पुस्तक **"संगीत सूर्योदय"** थी।

❖ प्रमुख ग्रंथ

- आमुक्त माल्यद (तेलगु)
- उषा परिणय (संस्कृत)
- जम्बावती कत्याण (संस्कृत)

BOOSTER ACADEMY

➢ इसके दरबार में अष्ट दिग्गज थे।

- ✓ अल्लासीन पेडन्ना (तेलगु कविता का पितामह) – स्वरोचित सम्भव / मनुचरितम् तथा हरिकथासागर
- ✓ तेनाली रामाकृष्ण - पुस्तक-पांडुरंग महाकाव्य
- ✓ धूर्जटि - कालहस्मि महाकाव्य
- ✓ नन्दि तिम्भन – पारिजातहरण
- ✓ भड्डमूति – नरसभूपालियम
- ✓ अय्यलराज – रामाभ्युदयम्
- ✓ पिगलिसूर - गरूड़ पुराण
- ✓ मादय्यगरि मल्ल - राजशेखरचरित

❖ अच्युतदेवराय (1529-1542 ई.)

- रामराय के साथ संयुक्त शासन किया।
- महामण्डलेश्वर नामक अधिकारी की नियुक्ति की।
- पुर्तगाली व्यापारी "नूनिज" ने इसी समय यात्रा की।

❖ सदाशिव (1542-1570 ई.)

- तुलुव वंश का अन्तिम शासक।
- वास्तविक शक्ति रामराय के हाथों में थी।
- 1558 में रामराय ने बीजापुर व गोलकुण्डा के साथ मिलकर अहमदनगर को लूटा। यह तालीकोटा युद्ध का कारण बना। बीजापुर, गोलकुण्डा, अहमदनगर और बीदर ने एक संयुक्त संघ बनाया, जिसका नेतृत्व बीजापुर के अली आदिलशाह ने किया।

❖ तालीकोटा/राक्षस तगंडी/ बन्नी हट्टी का युद्ध (जनवरी, 1565 ई.)

- विजयनगर (रामराय) बनाम बीजापुर (नेतृत्व), अहमदनगर, गोलकुंडा, बीदर।
- बरार ने भाग नहीं लिया।
- विजयनगर साम्राज्य का वैभव समाप्त हो गया।

❑ आरवीडु वंश (1570-1649 ई.)

- तालीकोटा के युद्ध के बाद रामायण के भाई तिरूमल ने विजयनगर के स्थान पर वैनगोडा के अपनी राजधानी बनाया।
- तिरूमल ने तुलुव वंश के सदाशिव को पददस्थ कर 1570 में आरवीडु वंश की नींव डाली।

BOOSTER ACADEMY

❑ विजयनगर साम्राज्य के शासक एवं वंश

संगम वंश (1336-1485ई.)	सालुव वंश (1485-1505 ई.)	तुलुव वंश (1505-1570ई.)	आरवीडु वंश (1570-1649ई.)
1. हरिहर प्रथम	1. नरसिंह सालुव	1.वीर नरसिंह	1.तिरूमल
2. बुक्का प्रथम		2.कृष्णदेवराय	2.वेंकट द्वितीय
3. हरिहर द्वितीय		3. अच्युतदेवराय	
4. देवराय प्रथम		4.सदाशिव	
5. देवराय द्वितीय			
6. मल्लिकार्जुन			

❑ विजय नगर प्रशासन

❖ प्रशासनिक व्यवस्थाः

- दैवीय सिद्धांत को मानते थे।
- केन्द्रीकृत निरंकुश शासन व्यवस्था।
- छोटे अधिकारी कार्यकर्ता।
- बडे अधिकारी दंडनायक।
- राज्याभिषेक मंदिरों में किया जाता था।

❖ प्रान्तीय प्रशासन

- केवल शाही परिवार के लोग गर्वनर बनते थे।
- **नायकर प्रथा -** अधिकारियों को सेवा के बदले भूमि देना।
- **आयंगर व्यवस्था -** गाँवों के प्रशासन हेतु नियुक्त 12 व्यक्ति।

भूमि के प्रकार

❖ अमरम्

- यह भूमि नायकों को दी जाती थी।
- इस पर नायकों का स्वामित्व नहीं होता था।

❖ ब्रह्मदेव, देवदेय, मठापुर भूमिः

- क्रमशः ब्रह्मदेव, मंदिरों व मठों को दान की गई भूमि।

BOOSTER ACADEMY

❑ सामाजिक स्थितिः

- **ब्राह्मण का कार्य** – प्रशासनिक
- **बेसबाग** – दास
- **वीर पंचाल** – कारीगर
- महिलाओं की स्थिति अच्छी थी।
- सती प्रथा का प्रचलन था (विदेशियों के अनुसार)
- वेश्यावृत्ति का प्रचलन था।
- देवदासी प्रथा प्रचलित थी।
- वीणा विजयनगर साम्राज्य का सर्वाधिक प्रसिद्ध व लोकप्रिय संगीत वाद्य था।

❑ स्थापत्य कला

- **द्रविड़ शैली के आधार पर विजयनगर साम्राज्य का स्थापत्य विकसित हुआ। जिसकी विशेषताएं निम्नलिखित थीं :**
  1. मण्डप के अतिरिक्त कल्याण मण्डप (इसमें देवताओं और देवियों का विवाह होता था।) व अस्मान मण्डप का प्रयोग।
  2. अलंकृत स्तंम्भों का प्रयोग।
  3. एक ही चट्टान को काटकर स्तंम्भ और जानवर की आकृति बनायी जाती थी।
  4. गोपुरम पर विशेष जोर दिया।
- कृष्णदेव राय ने हजारा एवं विट्ठलस्वामी के मंदिर का निर्माण किया। उन्होंने अम्बाराम में तदापती और पार्वती का मंदिर, कांचीपुरम में बरदराज और एकम्बरनाथ के मंदिर का निर्माण कराया।
- विजयनगर काल में निर्मित कमल मंदिर पर इस्लामी प्रभाव स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है।
- विजयनगर काल में चित्रकला की स्वतंत्र शैली भी विकसित हुई। विजयनगर की चित्रकला लिपाक्षी कला के नाम से जानी जाती है। इस चित्रकला के विषय रामायण एवं महाभारत से लिये गये है।
- विजयनगर काल में नृत्य और संगीत को मिलाकर एक शैली विकसित हुई। यह यक्षणी शैली के नाम से जानी जाती है।

❑ विजयनगर व बहमनी साम्राज्य में आये विदेशी यात्री

यात्री	समय	देश	शासक
1. इब्नबतूता	14 वीं सदी	मोरक्को	हरिहर प्रथम
2. निकोलो कोन्टी	1420-21	इटली	देवराय प्रथम
3. अब्दुर्रज्जाक	1443 ई.	फारस	देवराय द्वितीय
4. ऐथेनिसियस	1470 ई.	रूस	मु. तृतीय बहमनी
5. डुआर्ट बारबोसा	1515-16 ई.	पुर्तगाल	कृष्णदेवराय
6. डोमिगोज पायस	1520 ई.	पुर्तगाल	कृष्णदेवराय
7. फर्नांडीस नूनिज	1535 ई.	पुर्तगाल	अच्युतदेवराय
8. सीजर फ्रेडरिक	1567 ई.	इटली	सदाशिव

BOOSTER ACADEMY

मुगल काल (1526-1707 ई.)

- तैमूर द्वारा स्थापित मध्य एशिया का साम्राज्य 14वीं शताब्दी में विघटित हो गया और राज्य कई टुकड़ों में बँट गया। बाबर भी तैमूर का वंशज था जो भारत में मुगल राज्य का संस्थापक बना।

मुगल शासक	मूल नाम	शासनकाल
1. बाबर	जहीरूद्दीन	(1526-30 ई.)
2. हुमायूँ	नासिरूद्दीन	(1530-40 ई., 1555-56 ई.)
3. अकबर	जलालुद्दीन	(1556-1605 ई.)
4. जहाँगीर	सलीम	(1605-1627 ई.)
5. शाहजहाँ	शिहाबुद्दीन	(1627-1658 ई.)
6. औरंगजेब	मुहीउद्दीन	(1658-1707 ई.)

❑ बाबर (1526-30 ई.)

- पिता तैमूर वंशज व माता मंगोल वंशज थी।
- जन्म – फरगना (उज्बेकिस्तान)।
- बाबर तुर्की नस्ल के चगताई वंश का था।
- आमतौर पर इसे **"मुगल वंश"** कहा गया।
- **1504 ई.** में काबुल व गजनी को जीता तथा **1507 में** **"बादशाह"** की उपाधि धारण की।

❖ बाबर के भारत आक्रमण के कारण

1. धन प्राप्ति की लालसा।
2. उजबेक हमलों का भय।
3. भारत में कोई बड़ी केन्द्रीय शक्ति नहीं थी।

❖ बाबर के आक्रमण के समय भारत में राजनीतिक स्थिति

- भारत आक्रमण के समय बाबर काबुल का शासक था।
- बाबरनामा में दो हिन्दू राज्य मेवाड़ (राणा सांगा) व विजयनगर (कृष्णदेवराय) का उल्लेख मिलता है। कृष्णदेवराय को तात्कालिक भारत का सबसे शक्तिशाली शासक बताया।
- **बाबरनामा में पाँच मुस्लिम राज्यों का उल्लेख मिलता है।**
  - ✓ दिल्ली-इब्राहिम लोदी।
  - ✓ मालवा-महजूद खिलजी द्वितीय।
  - ✓ गुजरात-मुजफ्फर खान द्वितीय।
  - ✓ बंगाल - नुसरत खाँ।
  - ✓ बहमनी साम्राज्य- कल्लीमुला शाह
- **1519 ई.** में बाजौर और भेरा के किले को जीता। इस युद्ध में बाबर ने पहली बार बारूद का प्रयोग किया। बाजौर व भेरा को भारत प्रवेश द्वार कहा जाता था।

BOOSTER ACADEMY

❖ पानीपत का प्रथम युद्ध

- **तिथि** – 21 अप्रैल 1526
- **स्थिति** – पानीपत **(हरियाणा)** में स्थित है।
- **युद्धकर्ता** – मुगल बाबर एवं अफगान (इब्राहिम लोदी)
- यह बाबर का भारत पर **पाँचवा** आक्रमण था। इस युद्ध में **"तुलुगमा युद्ध पद्धति"** तथा तोप की **"उस्मानी पद्धति"** का प्रयोग किया।
- **विशेष** – इब्राहिम लोदी दिल्ली सल्तनत का एकमात्र सुल्तान था जो कि रणक्षेत्र में मरा, इब्राहिम लोदी के साथ ग्वालियर का शासक विक्रमजीत भी मारा गया था। युद्ध विजय के बाद बाबर निजामुद्दीन औलिया व बख्तियार काकी की दरगाह पर गया था।
- तोपची-अली एवं मुस्तफा।
- पानीपत की जीत के बाद बाबर ने कहा-**"काबुल की गरीबी अब और नहीं।"**
- जीत पर काबुल में चाँदी के **"शाहरूखी"** सिक्के दान किए। इसलिये इसे **"कलन्दर"** भी कहा जाता था।

❖ खानवा का युद्ध (17 मार्च, 1527 ई.) (भरतपुर)

- सांगा की पराजय हुई, बाबर ने इस युद्ध में जिहाद का नारा दिया तथा **"तमगा कर"** को समाप्त किया।
- खानवा विजय के बाद बाबर ने **"गाजी"** की उपाधि धारण की।

❖ चन्देरी का युद्ध (29 जनवरी, 1528 ई.)

- मेदिनीराय की पराजय हुई, मेदिनीराय को मालवा के राजाओं का निर्माता कहा जाता था।
- शेरशाही सूरी ने इस युद्ध में बाबर की तरफ से भाग लिया था।
- इस युद्ध में बाबर ने राजपूतों के सिरों की मीनार बनायी।

❖ घाघरा का युद्ध (6 मई, 1529)

- बंगाल व बिहार की लोहानी अफगान सेना को पराजित, किया, जिसका नेतृत्व महमूद लोदी कर रहा था। महमूद लोदी के साथ नुसरतशाह एवं शेरशाह सूरी थे।
- मध्यकाल का प्रथम युद्ध जो जल व थल पर लड़ा गया। (उभयचरी युद्ध)।
- यह बाबर का अन्तिम युद्ध था।
- **26 दिसम्बर 1530 ई.** को आगरा में बाबर की मृत्यु हो गई। पहले आगरा में और बाद में काबुल में दफनाया।
- बाबर की बेटी गुलबदन बेगम के अनुसार इब्राहिम लोदी की माँ ने बाबर को जहर दिया था। **(रचना-हुमायूँनामा)**
- बाबर ने तुर्की भाषा में आत्मकथा **"तुजुक - ए -बाबरी"** (बाबरनामा) लिखी। इसमें भारत को तीन अभिशाप बताये।
  1. गर्मी
  2. धूल
  3. लू

- भारत को कारीगरों का देश, 3 प्रकार की जलवायु और फलों में आम व पशुओं में हाथी को सर्वोत्तम बताया। गंगा नदी का उल्लेख करता है।
- बाबर भारतीय सैनिकों के बारे में कहता है कि **"वे मरना जानते हैं लड़ना नहीं।"**
- बाबर फारसी में **"मुबईयान"** नाम पद्य शैली का जन्मदाता था।
- **बाबर ने "रिसाल ए-उसज" / खत ए – बाबरी** की रचना की।

❑ हुमायूँ (1530-1556 ई.)

- **बाबर का सबसे बड़ा पुत्र था, इसने बाबर के आदेशानुसार अपने भाईयों के मध्य राज्य का बटँवारा कर दिया।**
  1. **कामरान** - काबुल व कंधार
  2. **अस्करी** – सम्भल
  3. **हिन्दाल** – मेवात
- **राज्य का बँटवारा हुमायूँ की असफलता का प्रमुख कारण बना।**

❖ 1535 ई. में गुजरात अभियान

- मन्दसौर के युद्ध में बहादुरशाह को पराजित किया।
- हुमायूँ गुजरात में सफलता प्राप्त करने वाला प्रथम शासक था।
- कालान्तर में पुर्तगालियों ने बहादुरशाह को 1537 में समुद्र में डुबा कर मार डाला।

❖ चौसा का युद्ध (29 जून 1539)

- शेर खाँ ने हुमायूँ को बंगाल से लौटते वक्त पराजित किया।
- पराजय का मुख्य कारण भाईयों व सैनिक सहायता का नहीं मिलना था।
- हुमायूँ ने गंगा नदी में कूदकर **"निजाम"** नामक भिश्ती की सहायता से जान बचाई। इस समय भिश्ती ने चमड़े के सिक्के चलाए और हुमायूँ ने भिश्ती को एक दिन के लिए दिल्ली का बादशाह बनाया।
- शेर खाँ ने **"शेरशाह"** की उपाधि धारण की।

❖ कन्नौज/बिलग्राम का युद्ध (17 मई,1540 ई.)

- शेरशाह के सामने हुमायूँ की निर्णायक हार हुई।
- इस समय कामरान सहायता करने आया परन्तु नेतृत्व करने के लिए मतभेद होने से वह बिना लड़े चला गया।
- हुमायूँ भागकर अमरकोट शासक वीरसाल के पास शरण लेता है। **शेख अली अकबर जामी (अकबर का नाना)** की बेटी हमीदा बानों बेगम से विवाह करता है, इसने अकबर को अमरकोट में जन्म दिया।
- 1541 ई. में मालदेव ने शेरशाह के विरूद्ध सहायता का प्रस्ताव भेजा लेकिन हुमायूँ के पुस्तकालयाध्यक्ष **"मुल्ला सुर्खे"** के मना करने पर प्रस्ताव ठुकरा दिया।

BOOSTER ACADEMY

- **1545 ई.** में हुमायूँ ने फारस के शाह तहमाश्प प्रथम की सहायता से भाई अस्करी को पराजित कर कन्धार पर अधिकार कर लिया।
- हुमायूँ को बैरम खाँ तहमाश्प के दरबार में मिला।
- **1547 ई.** को काबुल आक्रमण के समय कामरान ने 5 वर्षीय अकबर को किले पर लटका दिया ताकि हुमायूँ तोप न चलाए। कामरान को हुमायूँ ने पराजित कर अन्धा करवा दिया।

❖ मच्छीवाड़ा का युद्ध (लुधियाना / पंजाब) (15 मई 1555)

- हुमायूँ ने पंजाब के सिकन्दर सूर के सेनापति तातार खाँ को पराजित कर सम्पूर्ण पंजाब पर मुगलों की जीत स्थापित की।

❖ सरहिन्द विजय (22 जून 1555)

- सिकन्दर सूर को पराजित किया, मुगल सेना का नेतृत्व बैरम खाँ ने किया।
- सरहिन्द की विजय ने हुमायूँ को फिर भारत का शासक बनाया।
- **1556 ई.** को दीनपनाह के **"शेरमण्डल पुस्तकालय"** की सीढ़ियों से गिरकर हुमायूँ की मृत्यु हो गई।
- हुमायूँ की मृत्यु 17 दिन गुप्त रखी गई, इस समय हुमायूँ के हमशक्ल **"मुल्ला बेकसी"** को सिंहासन पर बिठाया।
- लेनपूल ने हुमायूँ के बारे में कहा कि **"वह जीवनभर ठोकरें खाते रहा और अन्त में ठोकर खाकर ही उसकी मृत्यु हो गई।"**
- हुमायूँ ने दिल्ली में **"दीनपनाह"** नगर बसाया इसमें शेरमण्डल पुस्तकालय बनाया, हुमायूँ को पुस्तकों में बहुत रूचि थी। वह सैन्य अभियान के दौरान भी अपने साथ पुस्तकालय लेकर चलता था। उसे भूगोल व खगोलशास्त्र में गहरी रूचि थी।
- इसने हरम की औरतों के लिए मीना बाजार प्रारम्भ किया।
- इसका ज्योतिष में बहुत विश्वास था वह सात दिन सात रंग के कपड़े पहनता था।

❑ सूर वंश (1540-1555 ई.)

- द्वितीय अफगान वंश

❑ शेर खाँ/शेरशाह सूरी (1540-1545 ई.)

- भारत में सूर राजवंश का संस्थापक था।
- जन्म-बैजवाडा, होशियारपुर।
- बचपन का नाम - **फरीद खाँ।**
- प्रारंभिक शिक्षा – **जौनपुर में**
- दक्षिण बिहार के सूबेदार बहार खाँ लोहानी ने शेर मारने के कारण फरीद को **"शेर खाँ"** की उपाधि दी।

- शेर खाँ ने चन्देरी के युद्ध (1528 ई.) में मेदिनीराय के खिलाफ बाबर की तरफ से भाग लिया था। इस युद्ध के समय बाबर ने हुमायूँ को शेरशाह के बारे में सावधान रहने की चेतावनी दी थी।
- 1539 ई. में चौसा के युद्ध तथा कन्नौज/बिलग्राम के युद्ध (1540 ई.) में हुमायूँ को पराजित कर उत्तर भारत पर आधिपत्य स्थापित किया।
- चौसा के युद्ध के बाद शेर खाँ ने **"शेरशाह"** की उपाधि धारण की।
- 1544 ई. में मारवाड़ के मालदेव से **गिरि - सुमेल का युद्ध** किया। जैता- कूम्पा के नेतृत्व में राजपूत सेना ने प्रतिरोध किया। बमुश्किल यह युद्ध शेरशाह ने जीता। इस पर शेरशाह कहता है कि **"मैं मुट्ठी भर बाजरे के लिए हिन्दुस्तान की बादशाहत खो देता।"**
- 1545 ई. में शेरशाह कांलिजर का अभियान करता है। कालिंजर शासक कीरत सिंह को पराजित करता है। यह शेरशाह का अन्तिम अभियान था।
- इस अभियान में **"उक्का"** नामक प्रक्षेपास्त्र चलाते समय घायल हो गया और उसकी मृत्यु हो गयी।

❑ इस्लाम शाह सूर (1545 - 1554 ई.)

- शेरशाह सूरी का उत्तराधिकारी उसका पुत्र इस्लाम शाह सूर था। मारवाड़ के मालदेव की पुत्री लालबाई का विवाह इस्लामशाह के साथ हुआ था।
- इसने मानगढ़ किले का निर्माण करवाया।
- इस्लाम शाह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र फिरोजशाह 12 वर्ष की आयु में ही शासक बना लेकिन इसके मामा मुबारिज खाँ ने इसकी हत्या कर स्वयं शासक बन गया।
- मुबारिज खाँ **"मुहम्मद आदिल शाह"** के नाम से गद्दी पर बैठा। इसने रेवाड़ी के नमक व्यापारी हेमू को अपना वजीर बनाया। हेमू को आदिल शाह ने **"विक्रमादित्य"** की उपाधि दी।

❖ प्रमुख सुधार

- शेर शाह सूरी को प्रशासक के रूप के **"अकबर का अग्रगामी"** कहा जाता है।
- बंगाल को 47 सरकारों में बाँटा और शक्तियों का विभाजन किया।
- **सरकार: दो अधिकारियों की नियुक्ति की-**
  1. **मुंसिफ ए मुंसिफान** - राजस्व अधिकारी
  2. **शिकदार ए शिकदारान** - प्रशासनिक अधिकारी
- **परगना**
  शिकदार - प्रशासनिक शक्ति
  मुंसिफ - राजस्व अधिकारी
  फोतदार - खजांची
- नये पद का सृजन - अमीन ए बंगला / अमीर ए बंगाल

❖ भू - राजस्व सुधार

- शेरशाह की राजस्व व्यवस्था मुख्यतः **रैय्यतवाड़ी** थी।
- भू - राजस्व निर्धारण के लिए रई/रे अथवा फसल दरों की सूची तैयार करवाई।
- भूमि की पैमाईश करवाई, जिसमें **"सिकन्दरी गज"** का प्रयोग किया।

❖ न्यायिक सुधार

- शेरशाह न्याय की सकेन्द्रता में विश्वास करता था।
- स्थानीय उत्तरदायित्व के सिद्धांत को लागू किया।
- न्यायिक व्यवस्था अत्यधिक कठोर थी।
- अब्बास खाँ शेरवानी कानून व्यवस्था के बारे में कहता है कि **"यदि एक बुढ़िया हीरे जवाहरात से भरी टोकरी अपने सिर पर लेकर जाए तो किसी की हिम्मत उसे लूटने की नहीं होती।"**

❖ स्थापत्य

- पटना शहर बसाया।
- जी.टी. रोड़ का पुनः निर्माण करवाया।
- 1700 सरायों का निर्माण करवाया, कानूनगों ने इन्हें **"साम्राज्य की धमनियाँ कहा।"** ये डाक व गुप्त सूचनाएँ भेजने का काम करती थी।
- रोहतासगढ़ किले का निर्माण करवाया।
- लाल दरवाजे/ खूनी दरवाजे का निर्माण करवाया।
- **किला ए कुहना मस्जिद** का निर्माण पुराने किले (दिल्ली) के अन्दर करवाया।
- सासाराम में स्वयं का/शेरशाह सूरी का मकबरा बनवाया, यह झील के मध्य बना है। कनिंघम ने इसे ताजमहल से भी सुन्दर बताया।
- कानूनगो शेरशाह को **"धूल में खिला फूल"** कहते है।

❖ दरबारी

1. **टोडरमल** - इसके दरबार में था।
2. **मलिक मोहम्मद जायसी -** रचना पद्मावत।
3. **अब्बास खाँ शेरवानी-** रचनाएँ- तारीख ए शेरशाही, तोहफा ए – अकबरशाही

BOOSTER ACADEMY

अकबर (1542-1605 ई.)

- **जन्म - 15 अक्टूबर 1542 ई.** अमरकोट के राणा वीरसाल के किले में।
- बचपन का नाम – जलालुद्दीन।
- सर्वप्रथम **1551 ई.** में गजनी का सूबेदार नियुक्त, बाद में लौहार का भी।
- हुमायूँ की मृत्यु के समय अकबर कलानौर में था। कलानौर (गुरदासपुर पंजाब) में ही अकबर का राज्याभिषेक ईंटों के सिंहासन पर **14 फरवरी, 1556 ई.** में हुआ, अकबर की इस समय 13 वर्ष 4 माह आयु थी।
- अकबर ने शंहशाह की उपाधि की।
- **1555 ई.** में बैरम खाँ को हुमायूँ ने संरक्षक नियुक्त किया। अकबर ने बैरम खाँ को अपना वजीर नियुक्त किया तथा खान - ए- खाना की उपाधि दी।

❖ पानीपत का दूसरा युद्ध (5 Nov.1556 ई.)

अकबर — बनाम — आदिलशाह सूर

↓ — ↓

सेनापति - बैरम खाँ — सेनापति (हेमू)

↓

विजय

- **पानीपत एकमात्र युद्ध -** जिसमें अकबर ने जिहाद का नारा दिया - **"गाजी"** की उपाधि धारण की।
- अकबर के सेनापति पीर मुहम्मद के व्यवहार से परेशान होकर बैरम खाँ ने विद्रोह किया। तिलवाडा़ के युद्ध **(1560 ई.)** में बैरम खाँ को पराजित कर **तीन प्रस्ताव रखेः-**
  1. कालपी एवं चन्देरी की सूबेदारी।
  2. बादशाह का व्यक्तिगत सलाहकार।
  3. मक्का धार्मिक यात्रा पर जाए।
- बैरम खाँ मक्का चला गया लेकिन पाटन (गुजरात) में मुबारक खाँ लौहानी ने हत्या कर दी।
- अकबर ने बैरम खाँ की विधवा पत्नी सलीमा बेगम से विवाह किया।
- बैरम खाँ के पुत्र अब्दुर रहीम ने **"खान - ए- खाना"** का पद ग्रहण किया।

अटला जैल/ पेटिकोट सरकार: (1560-1562 ई.)

- अकबर पर हरम का प्रभाव था।

1. माहम अनगा - (धाय माँ/प्रथम महिला प्रधानमंत्री)
2. जीजी अनगा - (माहम अनगा की पुत्री)
3. आधम खाँ - (माहम अनगा का पुत्र)
4. शम्सुद्दीन अतका खाँ - (जीजी अनगा का पति)

- 1562 ई. में अकबर ने आधम खाँ की हत्या करवा दी। इस सदमें में माहम अनगा की मृत्यु हो गई। इस प्रकार अकबर 1562 ई. में हरम के प्रभाव से मुक्त हुआ।

BOOSTER ACADEMY

❖ अकबर के प्रमुख अभियान

अभियान	मुगल सेनापति	पराजित शासक/ विशेष तथ्य
1. मालवा (1561 ई.)	आधम खाँ	बाजबहादुर – संगीतज्ञ,अकबर को नगाड़ा सिखाया
2. गोण्डवाना (1564 ई.)	आसफ खाँ	वीरनारायण (दुर्गावती के संरक्षण में)
3. आमेर (1562 ई.)		भारमल ने अधीनता स्वीकारी, पुत्री हरखा बाई का विवाह अकबर से
4. मेवाड़ (1568 ई.)	बादशाह अकबर	महाराणा उदयसिंह, जयमल-फत्ता मारे गए (अकबर ने आगरा के मुख्य द्वार पर हाथी पर सवार मूर्तियाँ लगाई) - फूलकँवर ने जौहर किया।
5. रणथम्भौर (1569 ई.)	भगवान दास व अकबर	सुरजनराय हाड़ा
6. गुजरात, प्रथम अभियान (1572 ई.)	मिर्जा अजीज कोका	मुजफ्फर खाँ तृतीय, सीकरी का नाम-फतेहपुर सीकरी, बुलन्द दरवाजे का निर्माण।
7. गुजरात, दूसरा अभियान (1573 ई.) -स्मिथ के अनुसार	बादशाह अकबर, गुजरात का द्वितीय अभियान	मुहम्मद हुसैन मिर्जा, दुनिया का सबसे द्रुतगामी अभियान था।
8.बिहार व बंगाल (1574 ई.)	मुनीम खाँ	दाउद खाँ (अन्तिम अफगान शासक) बंगाल - बिहार का विलय 1576 ई.
9. काबुल (1581 ई.)	मानसिहं व अकबर	हाकिम मिर्जा, बहिन बख्तुन्निसा को काबुल का गर्वनर बनाया।
10. कश्मीर (1586 ई.)	भगवानदास व कासिम खाँ	युसुफ खाँ
11. सिन्ध (1591 ई.)	अब्दुर्रहीम खान - ए - खाना	जागी बेग
12. उड़ीसा (1590-91 ई.)	मानसिंह	निसार खाँ
13. अहमदनगर (1595-97 ई.) (1597 ई.)	शहजादा मुराद व अब्दुर्रहीम खानखाना, अबुल फजल व दानियाल	सुल्तान बहादुर निजामशाह - संरक्षिका - चांदबीबी ने संधि (1596), बरार मुगलों को दिया। 1633 ई. शाहजहाँ ने अहमदनगर का मुगल साम्राज्य में विलय।
14. असीरगढ़ (1601 ई.)		मीरन बहादुर, असीरगढ़ का किला **"सोने की कुन्जियों से खोला"** असीरगढ़ का नाम **"धनदेश"** रखा।

- दक्षिण का सम्राट – **अकबर**
- दक्कन का सम्राट- **औरंगजेब**

BOOSTER ACADEMY

❖ अकबर के नौ रत्न

- बीरबल (मित्र)/महेशदास
- राजा मानसिंह (सेनापति)
- अब्दुल रहीम खान ए – खाना (कवि/सेनापति)
- अबुल-फजल (कवि)
- फैजी (कवि)
- मुल्ला दो प्याजा
- हकीम हुमांम
- राजा टोडरमल (वित्त विशेषज्ञ)
- तानसेन (संगीतज्ञ)
- 1562 ई. - दास प्रथा की समाप्ति
- 1563 ई. - तीर्थ कर समाप्त
- 1564 ई. - जजिया कर समाप्त
- 1569 - 70 ई. - फतेहपुर सीकरी की स्थापना
- 1575 ई. - मनसबदारी व्यवस्था प्रारम्भ
- 1575 ई. - इबादत खाने का निर्माण (फतेहपुर सीकरी)
- 1577 ई.- सिजदा व पैबोस प्रथा शुरू की।
- 1578 ई. - इबादतखाने को सभी धर्मों के लिए खोला।
- 1579 ई. - महजर की घोषणा।
- 1580 ई. - टोडरमल द्वारा आइने दहसाला लागू।
- 1582 ई. - दास प्रथा पूर्णतः समाप्त।
- 1582 ई. - दीन-ए- इलाही की घोषणा।
- 1583 ई. - ईलाही सवत् चलाया।
- प्रारम्भ में अकबर रूढ़िवादी था और बाद में उदारवादी हो गया।
- अकबर की धार्मिक नीति "सुलह ए कुल" की नीति थी। (सभी के साथ शान्तिपूर्ण)।
- "सुलह ए कुल" धार्मिक सहिष्णुता, उदारवादी सांस्कृतिक दृष्टिकोण एवं राजनीतिक उदारवाद था।

BOOSTER ACADEMY

❖ इबादत खाना: (1575 ई.)

- अकबर ने धर्म - दर्शन पर बहस/चर्चा के लिए फतेहपुर सीकरी में 1575 ई. **"इबादत खाने"** का निर्माण करवाया। 1578 ई. में इसमें सभी धर्मों का आमंत्रित किया। 1582 ई. में इसे पूर्ण रूप से बन्द भी कर दिया।
- चर्चा का दिन बृहस्पति होता था और इसमें अद्वैतवाद का प्रसार हुआ।

धर्म	धर्म गुरू जो इबादत खाने में शामिल हुए
हिन्दू धर्म	पुरूषोत्तम व देवी पण्डित
इसाई धर्म	रूडोल्फ, एक्वाबीवा, मोन्सरेट, एनरिक्वेज
पारसी धर्म	दस्तूर मेहर जी राणा
जैन धर्म	हरि विजय सूरी, जिनचन्द्र सूरी, विजयसेन सूरी शान्ति चन्द्र, भानूचन्द्र उपाध्याय

* किसी भी बौद्ध भिक्षु ने इसमें भाग नहीं लिया।

❖ महजर: (1579 ई.)

- 1579 ई. में अकबर द्वारा महजर जारी।
- मजहर एक प्रकार का घोषणापत्र था जिसमें अकबर को धार्मिक मामलों में सर्वोच्च बना दिया।
- इसका प्रारूप **"शेख मुबारक"** ने तैयार किया, लेकिन जारी करने की प्रेरणा शेख मुबारक के पुत्र अबुल फजल व फैजी ने दी थी।
- महजर द्वारा उलेमाओं के प्रभाव को कम किया और राजत्व की गरिमा को बढ़ाया।
- वुल्जले हेग व स्मिथ ने महजर को **"अचूक आज्ञापत्र"** कहा है।

❖ दीन ए इलाही (1582 ई.)

- 1582 ई. में सभी धर्मों में सामंजस्य के लिए एक राष्ट्रीय धर्म की स्थापना की। इसे **"दीन - ए - इलाही / तौहिद - ए- इलाही"** कहा गया। (दैवीय एकेश्रवाद)
- यह सुलह - ए - कुल की नीति से प्रेरित थे।
- प्रधान पुरोहित - **"अबुल फजल"**
- कुल अनुयायी – 18
- हिन्दुओं में केवल बीरबल ने इसे स्वीकार किया।
- स्मिथ ने दीन ए इलाही को **"अकबर की मूर्खता का प्रतीक"** कहा।

❖ महत्वपूर्ण तथ्य

- अकबर ने फारसी परम्पराएँ यथा पैबोस, सिजदा तथा अन्य परम्पराएं **जैसे** - तुलादान व झरोखा दर्शन प्रारम्भ की।
- हुमायूँ द्वारा प्रारम्भ मीना बाजार को राजधानी में लगाना प्रारम्भ किया।

BOOSTER ACADEMY

- **भोजनालय केन्द्रों का निर्माण –**
  - ✓ **हिन्दू** – धर्मपुरा
  - ✓ **मुसलमान** – खैरपुरा
  - ✓ **जोगी** - जोगीपुरा
- 1587 ई. में विधवा - विवाह को कानूनी मान्यता दी।
- अकबर ने सती प्रथा व शिशु वध को रोकने का प्रयास किया।
- बाल विवाह को रोकने के लिए **"तुरबंग"** नामक अधिकारी की नियुक्ति की।
- अकबर को **"नश्तालीक"** लेखन कला पसंद थी। अकबर अनपढ़ था।
- राल्फ फिंच अकबर के दरबार में आने वाला पहला अंग्रेजी व्यापारी था।
- 25 अक्टूबर, 1605 ई. को पेचिश/अतिसार के कारण अकबर की मृत्यु हो गई।
- जहाँगीर ने सिकन्दरा में बौद्ध विहार शैली में अकबर के मकबरे का निर्माण करवाया, इसमें गुम्बद नहीं है लेकिन चार मीनारें है।

❖ अकबर राजपूत सम्बन्ध

- अकबर द्वारा राजपूत नीति अपनाकर साम्राज्य को आधार प्रदान किया।

❖ राजपूत नीति के प्रमुख तत्व:

1. राजपूतों के साथ वैवाहिक संबंध

- ✓ आमेर के कच्छवाहा शासक भारमल (हरखाबाई)
- ✓ मारवाड़ के मोटाराजा उदयसिंह
- ✓ बीकानेर के कल्याण मल
- ✓ जैसलमेर के हरराय

2. राजपूत शासको/ राजकुमारों को मनसबदारी तथा गवर्नरो के रूप में नियुक्ति।
3. राजपूत शासकों को पूर्ण आन्तरिक स्वतंत्रता।

❖ अकबर - प्रताप सम्बन्ध

- **अकबर द्वारा भेजे गए संधि हेतु क्रमशः प्रस्तावक:-**

1. 1572 ई. जलाल खाँ
2. 1573 ई. मानसिंह
3. 1573 ई. भगवन्त दास
4. 1573 ई. टोडरमल

BOOSTER ACADEMY

❖ हल्दीघाटी का युद्ध 18/21 जून 1576 ई.

(रक्त तलाई का युद्ध)

महाराणा प्रताप	बनाम	अकबर
↓		↓
हकीम खाँ सूर		मानसिंह
पूंजा (भील सेना)		आसफ खाँ

- **हल्दीघाटी युद्ध को विभन्न नामों से जाना जाता है।**
  खमनौर का युद्ध - **अबुल फजल**
  गोगुन्दा का युद्ध - **बदायूँनी**
  मेवाड़ की थर्मोपल्ली- **कर्नड टॉड**
- झाला बीदां व मन्ना ने राजचिह्न धारण कर युद्ध किया और प्रताप को युद्ध मैदान से निकाला।
- मिहत्तर खाँ ने अकबर के आने की अफवाह फैलायी और मुगल सेना को प्रेरित किया।
- मानसिंह का हाथी – **मरदाना**
  अकबर का हाथी - **हवाई**
  प्रताप का हाथी - **राम प्रसाद**
  प्रताप का घोड़ा - **चेतक**

- अकबर ने प्रताप के हाथी **"रामप्रसाद"** का नाम बदलकर **"पीर प्रसाद"** किया।
- चेतक की समाधि-बलीचा गाँव
- यह युद्ध अनिर्णायक रहा।

❖ अकबर द्वारा भेजे गए सैनिक अभियान।

- **1577 से 1580 ई.** के मध्य तीन अभियान शाहबाज खाँ द्वारा।
- **1580-81 ई.** अब्दुल रहीम खानेखाना।
- **1584 - 85 ई.** जगन्नाथ कच्छावाहा (अन्तिम अभियान)

❖ दिवेर युद्ध (1582 ई.)

- कर्नल टॉड ने इसे **"मेवाड़ का मैराथन"** कहा।
- मुगलों के विरूद्ध प्रताप की प्रथम निर्णायक विजय ।
- यहाँ नियुक्त मुख्तियार सुल्तान खाँ मारा गया।
- **19 जनवरी, 1597 ई.** प्रताप की मुत्यु, बाडोली (उदयपुर) - 8 खम्भों की प्रताप की छतरी।

BOOSTER ACADEMY

❑ जहाँगीर (1605-1627 ई.)

- अन्य नाम - सलीम, शेखु बाबा (शेख सलीम चिश्ती की कुटिया में जन्म)
- माता - हरखूबाई/ मरियम उज्जमानी (आमेर राजा भारमल की पुत्री)

जहाँगीर पत्नियाँ एवं पुत्र

- **प्रथम विवाह मानबाई**
  - आमेर राजा भगवन्तदास की पुत्री, मानसिंह की बहिन
  - पुत्र-खुसरो-जहाँगीर ने अंधा कर दिया
  - मानबाई ने आत्महत्या कर ली
- **जगत गोसांई /जोधा बाई/मलिका एं -जहाँ**
  - मारवाड़ राजा उदयसिंह की पुत्री
  - पुत्र- खुर्रम (शाहजहाँ)
- **करमसी** (राजपूत पत्नी)
- **मेहरून्निसा** (नूरजहाँ)
- **चौथे पुत्र शहरयार का जन्म एक रखैल से**
- **साहिबा ए जमल**
  - पुत्र – परवेज

- शासक बनते ही 12 घोषणाएँ - **आइन - ए- जहाँगीरी** (प्रशासन सम्बन्धी नियम)।
- जहाँगीर ने न्याय की जंजीर (जहाँगीर ए अदली) लगवाई जिससे 66 घंटियां लगी थी।

❖ जहाँगीर कालीन विद्रोह

1. खुसरों का विद्रोह (1606 ई.)

- इसको मामा मानसिंह व मिर्जा अजीज कोका का समर्थन।
- **सिक्खों के 5 वें गुरू अर्जुन देव से आशीर्वाद प्राप्त किया।**
- जहाँगीर ने अर्जुनदेव को मुत्युदण्ड दे दिया, तब से सिक्ख - मुगल संघर्ष प्रारम्भ होता है।
- भैरोवाल युद्ध में जहाँगीर ने खुसरों को पराजित कर अन्धा करवा दिया।
- 1622 ई. में खुर्रम (शाहजहँ) ने खुसरों की हत्या कर दी।
- इस विद्रोह के समय जहाँगीर ने कहा कि **"राजा का कोई संबंधी नहीं होता है।"**

2. शाहजहाँ का दक्कन विद्रोह (1622 ई.)

- अब्दुर्रहीम खाने खाना के सहयोग से।
- महाँवत खाँ तथा परवेज ने इसका दमन किया।
- शाहजहाँ को दक्षिण में बालाघाट की जागीर दी।

3. महाँवत का विद्रोह (1626 ई.)

- नूरजहाँ के रूष्ट व्यवहार के कारण, जहाँगीर को कश्मीर में बन्दी बना लिया।
- नूरजहाँ ने जहाँगीर को मुक्त करवा दिया।

BOOSTER ACADEMY

❖ जहाँगीर का साम्राज्य विस्तार

1. मुगल - मेवाड़ संधि (1615 ई.)

- जहाँगीर के सैनिक अभियानों के दबाब व रणनीति से राणा अमरसिंह व मुगलों के मध्य संधि हुई।

शर्तें-

- ✓ मेवाड़ का राजकुमार दरबार में पेश होगा, राजा नहीं।
- ✓ प्रथम राजकुमार कर्ण सिंह मुगल दरबार में गयें, इन्हें 5000 का मनसब दिया।
- ✓ चित्तौड़ किला इस शर्त पर लौटाया कि उसकी मरम्मत नहीं करवायी जायेगी।
- ✓ वैवाहिक सम्बन्धों पर जोर नहीं दिया गया।

2. दक्षिण विजय (1617 ई.)

- अहमदनगर जीतने का असफल प्रयास किया, अहमदनगर में **"मलिक अम्बर"** वजीर था।
- मलिक अम्बर **"गुरिल्ला पद्धति"** का जनक था। मराठों को इसने प्रशिक्षण दिया था।
- अहमदनगर विजय के बाद जहाँगीर ने खुर्रम को **"शाहजहाँ"** की उपाधि दी।

3. काँगड़ा विजय (1620 ई.)

- विक्रमादित्य को पराजित किया, **"जिहाद"** का नारा दिया।
- यह विजय जहाँगीर के लिए कलंक मानी जाती है।

❖ नूरजहाँ जुंटा (1611 - 1622 ई.)

- मेहरून्निसा, नूरजहाँ का वास्तविक नाम, जहाँगीर ने **"नूर ए-जहाँ"** की उपाधि दी।
- **जुटां के सदस्य:**
  - ✓ पिता – गयासबेग, उपाधि एतमाद - उद – दौला।
  - ✓ माता -अस्मत बेगम
  - ✓ भाई - आसफ खाँ
  - ✓ शाहजहाँ
- सभी शक्तियाँ नूरजहाँ के पास थी, नूरजहाँ शाही फरमानों पर हस्ताक्षर करती थी। यह झरोखा दर्शन देती थी।
- नूरजहाँ ने बेटी लाड़ली बेगम का विवाह शहजादा शहरयार से करवा दिया।
- नूरजहाँ के भाई आसफ खाँ ने अपनी पुत्री अर्जुमन्दबानो बेगम (मुमताज) का विवाह खुर्रम से कर दिया।
- यह दोनों अपने दामाद को बादशाह बनाना चाहते थे, इससे नूरजहाँ जुंटा में दरार पड़ गई।
- नूरजहाँ की माँ अस्मत बेगम ने इत्र बनाने की विधि का आविष्कार किया।

BOOSTER ACADEMY

❖ जहाँगीर एंव यूरोपीय

- **1608 ई.-** कैप्टन हॉकिन्स भारत आया (हैक्टर जहाज से)
- **1609 ई. -** आगरा में जहाँगीर से मिला, 400 का मनसब दिया।
  तुर्की भाषा में बात की, व्यापारिक रियायतें नहीं मिली।
- **1615 ई. -** टॉमस रॉ भारत आया।
- **1616 ई. -** अजमेर में टॉमस रॉ जहाँगीर से मिला व व्यापारिक रियायतें प्राप्त की।
- **1627 ई.** में लाहौर में मृत्यु।

❑ शाहजहाँ (1627-1658 ई.)

- बचपन का नाम - खुर्रम, जन्म 1592 ई. लाहौर में।
- माता - जगत गोसाई (जोधाबाई)।

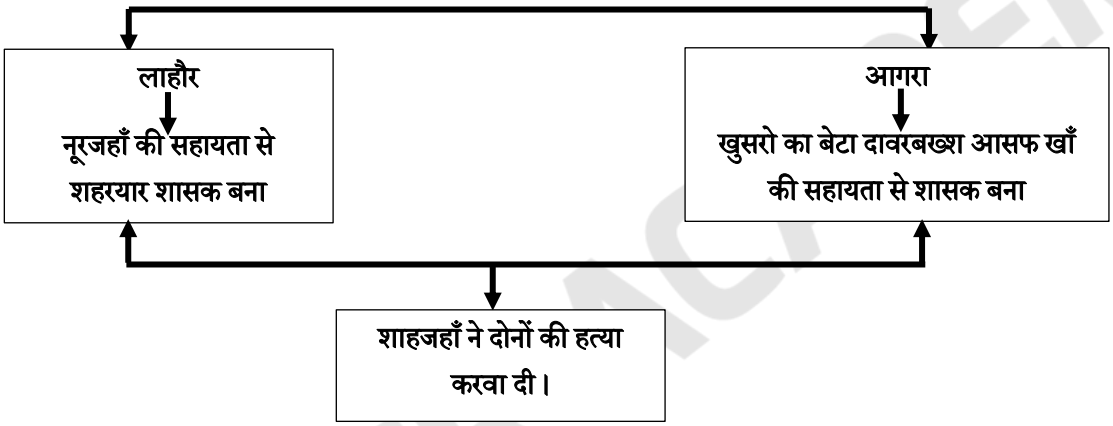

- दावरबख्श को इतिहास में **"बलि का बकरा"** कहा गया है।
- नूरजहाँ के भाई आसफ खाँ की पुत्री अर्जुमन्द बानो बेगम से विवाह हुआ। यह इतिहास में मुमताज महल के नाम से प्रसिद्ध थी।
- **मुमताज महल की 14 संताने थी उनमें केवल चार पुत्र व तीन पुत्रियाँ ही जीवित रही-**

पुत्र	पुत्रियाँ
दारा शिकोह	जहाँआरा
शूजा	रोशनआरा
मुराद	गोहन आरा
औरंगजेब	

- शाहजहाँ की मध्य एशिया नीति असफल रही। (स्थानीय लोगों का समर्थन नहीं मिलने के कारण)
- शाहजहाँ अपने शासनकाल के प्रारम्भ में धार्मिक रूप से कट्टर था लेकिन बाद में जहाँआरा व दाराशिकोह के प्रभाव से उदार हो गया।
- शाहजहाँ ने अकबर द्वारा प्रारम्भ सिजदा पैबोस प्रथा को समाप्त कर **"चहार तस्लीम"** प्रथा (अभिवादन की विधा) शुरू की। **(1636-37 ई.)**
- शाहजहाँ ने इलाही संवत् के स्थान पर हिजरी सवंत् चलाया।

- शाहजहाँ के शासनकाल का वर्णन फ्रेंच यात्री बर्नियर, ट्रेवेनियर व इटालियन यात्री मनूची ने किया।
- शाहजहाँ के शासन के समय **1630-32 ई.** के बीच गुजरात व दक्षिण में भयंकर अकाल पड़ा, जिसका वर्णन पीटर मुंडी ने किया।

❖ उत्तराधिकार युद्ध (1657-58 ई.)

- मनूची उत्तराधिकार युद्ध का प्रत्यक्षदर्शी था।
- शाहजहाँ ने दारा को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था।
- **शाहजहाँ के चार पुत्र उत्तराधिकार युद्ध के समय:-**
  - ✓ **शाहशुजा** - बंगाल का सूबेदार
  - ✓ **मुराद** - गुजरात का सूबेदार
  - ✓ **औरंगजेब** - दक्षिण का सूबेदार
  - ✓ **दारा** - पंजाब का सूबेदार

1. बहादुरगढ़ (U.P.) का युद्ध (14 फरवरी, 1658 ई.)

शुजा **v/s** दारा / शाही सेना (विजयी)

2. धरमत (M.P.) का युद्ध (15 अप्रैल, 1658 ई.)

मुराद		दारा
+	बनाम	+
औरंगजेब		जसवंत सिंह
(विजयी)		कासिम खान

3. सामूगढ़ (U.P.) का युद्ध (29 मई, 1658 ई.)

दारा बनाम औरंगजेब, मुराद → (विजयी)

- दारा ने अजमेर में शरण ली।
- औरंगजेब ने मुराद को ग्वालियर में मरवा दिया।
- औरंगजेब का सामूगढ़ में **"पहला राज्याभिषेक"** हुआ। शाहजहाँ को आगरा के किले में कैद कर दिया।

4. खजुआ (U.P.) का युद्ध (5 जनवरी, 1659 ई.)

- शूजा बनाम औरंगजेब (विजयी) ।
- शुजा भाग कर बर्मा चला गया, वहीं इसकी मृत्यु हो गई।

BOOSTER ACADEMY

5. देवराई/ दौराई (अजमेर) का युद्ध (अप्रैल, 1659 ई.)

- दारा बनाम औरंगजेब (विजयी)।
- अन्तिम व निर्णायक युद्ध, दारा ब्लूचिस्तान भाग गया, जहाँ मित्र के विश्वासघात से पकड़ा गया, इसे दिल्ली में मृत्युदण्ड दिया गया। बर्नियर मृत्युदण्ड का प्रत्यक्षदर्शी था।
- दारा को हुमायूं के मकबरे में दफनाया गया।
- इस बार औरंगजेब ने दिल्ली में दूसरी बार राज्याभिषेक करवाया।
- दारा शिकोह को **"लघु अकबर"** कहा जाता था।
- शाहजहाँ की बेटी जहाँआरा **"मख्फी"** नाम से कविताएँ लिखती थी।

❑ औरंगजेब (1658-1707)

1. आलमगीर (राज्याभिषेक के समय)
2. जिन्दापीर (धार्मिक जीवनशैली)
3. शाही दरवेश (सादगीपूर्ण जीवनशैली)

❖ औरंगजेब के समय

- मुगल काल में सर्वाधिक क्षेत्रीय विस्तार था।
- औरंगजेब बातचीत में हिन्दी की लोकप्रिय कहावतों का प्रयोग करता था।
- औरंगजेब फारसी लिपी **"नस्तालिक" व "शिकस्त"** लिखने में निपुण था।
- औरंगजेब के पास **"गंज-ए-सवाई"** नामक जलपोत था।
- गुरू तेगबहादुर द्वारा औरंगजेब की धार्मिक नीतियों का विरोध किया।
- औरंगजेब ने तेगबहादुर को मृत्युदण्ड दे दिया, वर्तमान में वहाँ शीशगंज गुरूद्वारा (दिल्ली) है।
- **औरंगजेब के सामने मराठों की चार पीढ़ियों ने संघर्ष किया-**
  1. शिवाजी **(1640 - 80 ई.)**
  2. शम्भाजी **(1680 - 89 ई.)**
  3. राजाराम **(1689 - 1700 ई.)**
  4. राजाराम की विधवा पत्नी ताराबाई **(1700-1707 ई.)**

❖ राजपूत और औरंगजेब

- मिर्जा राजा जयसिंह जहाँगीर, शाहजहाँ व औरंगजेब की सेवा में रहे। इन्हें शाहजहाँ ने **"मिर्जा राजा"** की उपाधि दी।
- मिर्जा राजा जयसिंह को औरंगजेब ने **7000 का मनसब** दिया।
- **1667 ई.** में जयसिंह की मृत्यु बुरहानपुर में हो गयी। इससे पूर्व मिर्जा राजा जयसिंह ने शिवाजी के साथ पुरन्दर की संधि की।

BOOSTER ACADEMY

- मारवाड़ के जसवन्त सिंह की 1678 ई. में जमरूद के युद्ध (अफगानिस्तान) में मृत्यु हो गयी। जसवन्त सिंह की मृत्यु पर औरंगजेब ने कहा **"आज कुफ्र का दरवाजा टूट गया।"**

❖ दक्षिण अभियान:

बीजापुर विलय	गोलकुण्डा विलय
(1686 ई.)	**(1687 ई.)**
शासक - सिकन्दर आदिलशाह	शासक - अबुल हसन

❖ औरंगजेब की धार्मिक नीति:

- औरंगजेब की धार्मिक नीति कठोर थी, उसने **"दार उल-हर्ब"** को **"दार-उल-इस्लाम"** में बदलना चाहा।
- **1663 ई.** में हिन्दुओं पर तीर्थ यात्रा कर लगाया।
- **1669 ई.** में बनारस फरमान द्वारा हिन्दु मंदिरों व पाठशालाओं को तोड़ने का आदेश दिया।
- औरंगजेब ने **"गाजी"** की उपाधि धारण की।
- **1663 ई.** में सती प्रथा पर प्रतिबन्ध लगाया।
- इसने तिलक प्रथा, तुलादान, झरोखा दर्शन बन्द कर दिए।
- औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीति उसकी मजबूरी थी वह अपने पिता को कैद कर शासक बना था। और वह मुस्लिम उलेमाओं का समर्थन चाहता था।
- उसने संगीतकरों और चित्रकारों को दरबार से निकाल दिया, जबकि औरंगजेब स्वयं एक अच्छा वीणा वादक था।
- औरंगजेब के समय मुगलकाल में सर्वाधिक मनसबदार (33 प्रतिशत) हिन्दु थे।
- मुगल साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण भी औरंगजेब की धार्मिक नीति रही।
- औरंगजेब के समय **"जागीदारी संकट"** उत्पन्न हो गया। (मनसब अधिक-जागीर कम)

❑ मुगल प्रशासन

- मुगल प्रशासन का संस्थापक अकबर था।
- मुगल प्रशासन केन्द्रीय निरंकुश प्रशासन था।
- मुगलों की राजभाषा अकबर ने फारसी को बनाया।
- आइने अकबरी (अबुल - फजल द्वारा) में मुगल राजत्व का वर्णन है। राजत्व ईश्वर कर अनुग्रह है।
- **1579 ई.** में अकबर ने **"मजहर की घोषणा"** कर बादशाह को इस्लामी कानून का अन्तिम निर्णायक घोषित किया।

BOOSTER ACADEMY

❑ मुगल राजधानियां

- आगरा - 1556 - 69 ई.
- फतेहपुर सीकरी - 1569 - 85 ई.
- लाहौर - 1585 - 98 ई.
- आगरा - 1598 - 1648 ई.
- शाहजहाँबाद - 1648 ई.
  * बुरहानपुर - दक्षिण भारत में मुगलों की राजधानी।

❑ केन्द्रीय प्रशासन

❖ वजीर (प्रधानमंत्री)

- राज्य का प्रधानमंत्री होता था।
- इसके पास सैन्य व असैन्य अधिकार दोनों थे।
- अकबर के काल में इसे **"वकील"** कहा जाने लगा।
- **अकबर ने वजीर की शक्तियों को कम करने के लिए दो अन्य पदों का सृजन किया-**
  - ✓ **दीवान - ए – कुल**
  - ✓ **सद्र - उस - सुदुर**

❖ दीवान - ए – कुल

- पद का सृजन अकबर ने किया।
- **दीवान के कार्य –**
  - ✓ राजस्व नीति का निर्माण करना।
  - ✓ राजस्व व वित्त मामलों को देखना।
- टोडरमल को अकबर ने सर्वप्रथम 1573 ई. में गुजरात का दीवान व 1582 ई. शाही दीवान नियुक्त किया।

❑ मुगल शासकों के दीवान

शासक	दीवान
अकबर	मुजफ्फर खाँ, टोडरमल, एवाज, मंसूर
जहाँगीर	एत्मांदुदौला
औरंगजेब	मीर जुमला, फजिल खाँ, जफर खाँ, असद खाँ
बहादुर शाह - I	मुनीम खाँ

BOOSTER ACADEMY

❖ मीर - ए – सामां

- इस पद की स्थापना अकबर ने की।
- बादशाह व महल की दैनिक आवश्यकता को पूरा करना।

❖ मीर बख्शी

- सैनिक विभाग का प्रमुख था।
- मुख्य सेनापति बादशाह होता था।
- **कार्यः-**
  - ✓ सैनिक भर्ती
  - ✓ हथियार आपूर्ति
  - ✓ रसद आपूर्ति
  - ✓ सैनिकों का हुलिया रखना
  - ✓ अनुशासन बनाना
  - * **सरखत -** मीर बख्शी द्वारा हस्ताक्षर किया गया पत्र जिससे सेना को वेतन मिलता था।

❖ सद्र - उस - सुदूरः-

- धार्मिक मामलों का प्रमुख था। इस पद की स्थापना अकबर ने की।
- जब यह मुख्य काजी के रूप में कार्य करता तो **"काजी - उल – कुजात"** कहा जाता था।'

❖ काजी - उल – कुजात

- न्याय विभाग का प्रमुख था।
- इसकी सहायता के लिए **"मुफ्ती"** होते थे जो कानून की व्याख्या करते थे।
- **"मीर - ए – अदली"** काजी के निर्णय को सुनाता था।

❖ मुहतसिब

- यह पद औरंगजेब ने सृजित किया।
- इसका कार्य मुस्लिम प्रजा का इस्लाम के अनुसार आचरण की देखरेख करना था।
- हिन्दू-मन्दिरों व पाठशालाओं को तोड़ने का कार्य औरंगजेब ने मुहतसिबो को दिया।

पद	कार्य
मीर आतिश	शाही तोपखाने का प्रधान
दरोगा - ए – डाक चौकी	गुप्तचर एवं डाक विभाग का प्रमुख
मीर-ए-बहर	जल सेना का प्रधान
मीर-ए-बर्र	वन विभाग प्रमुख
वाकिया - नवीस	समाचार पत्र लेखन व गुप्तचर

BOOSTER ACADEMY

मीर -ए - अर्ज	बादशाह के पास आवेदन, पत्र भेजने वाला प्रभारी
खुफिया नवीस	गुप्त रूप से महत्वपूर्ण खबरें केन्द्र को देना (गुप्तचर)
मुशरिफ	राज्य की आय - व्यय का लेखा – जोखा रखने वाला
मुस्तौफी	मुशरिफ द्वारा तैयार रिकार्ड की जॉच करने वाला
एलची	यूरोपीय राजदूत
सफीर	पड़ोसी राज्यों का राजदूत

❖ प्रान्तीय शासन

- मुगलकाल में प्रान्तीय व्यवस्था सुचारू रूप से अकबर के काल से प्रारम्भ होती है।

सूबा (प्रान्त)
सरकार (जिला)
परगना (उपखण्ड/तहसील)
गाँव

1. सूबेदार

- प्रान्त/सूबे का मुख्य प्रशासक होता था।
- इसे नाजिम व सिपहसालार भी कहा जाता था।
- सूबेदार को मनसब देने व संधियाँ करने का अधिकार नहीं था।
- अकबर ने सूबेदार की शक्तियों को कम करने के लिए **"दीवान"** पद का सृजन किया।

2. प्रान्तीय दीवान

- सूबे में वित्त व राजस्व प्रमुख होता था।
- यह प्रान्तों में दीवानी मुकदमों के निर्णय भी करता था।
- यह केन्द्रीय दीवान के प्रति उत्तरदायी था।

Note:- अकबर ने **1580 ई.** में अपने साम्राज्य को 12 सूबों में बाँट दिया। यह वर्णन आइने अकबरी में मिलता है।

- अकबर के शासनकाल के अन्त में सुबों की संख्या 15 हो गई।

शासक	सूबे	
अकबर	15	12 +3 - बरार, खानदेश, अहमदनगर
जहाँगीर	15	
शाहजहाँ	18	कश्मीर, थट्टा, उड़ीसा
औरंगजेब	20	बीजापुर, (1686 ई.) गोलकुण्डा (1687 ई.)

BOOSTER ACADEMY

जिला (सरकार) प्रशासन

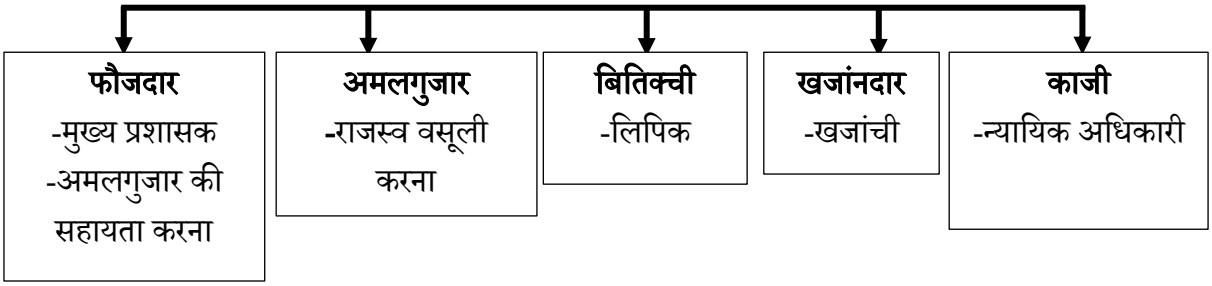

❖ परगना (तहसील) प्रशासन

1. शिकदार:-

- कानून व्यवस्था बनाना।

2. आमिल

- परगने का वित्तीय अधिकारी।
- * करोड़ी - अकबर ने 1573 ई. में 1 करोड़ दाम से अधिक राजस्व वाले परगनों में एक आमिल नियुक्त किया, जिसे करोड़ी कहते थे, अकबर ने 182 करोड़ी नियुक्त किये।

3. फोतदारः-

- यह परगने का खजांची होता था।

4. कानूनगोः-

- परगने में पटवारियों का अधिकारी था।
- यह भूमि संबंधी रिकार्ड रखता था।

5. कारकुनः-

- परगने का लिपिक होता था।
- शाहजहाँ के काल में परगना व सरकारों के बीच एक इकाई होती थी, जिसे **"चकला"** कहा जाता था।

❖ ग्राम प्रशासन:

- गाँव के मुखिया चौधरी, पटेल या खुत, मुकद्दम आदि कहा जाता था।

❑ मुगलकालीन अर्थव्यवस्था

- मुगलों ने सोने, चाँदी व ताँबे के सिक्के चलाये, आकार मुख्यतः वृत्ताकार था।
- मुद्रा प्रणाली को व्यवस्थित अकबर ने किया।
- 1577 ई. में दिल्ली में शाही टकसाल बनावाई तथा ख्वाजा **"अब्दूल स्मद"** को उसका प्रधान नियुक्त किया और उसे **"शीरी कलम"** की उपाधि दी।
- मुगलकाल का सर्वाधिक प्रचलित सिक्का मुहर है।
- अकबर ने अपने शासन के 50 वें वर्ष कुछ सिक्कों पर **"राम-सीता"** की मूर्ति व देवनागरी में **"राम सिया"** लिखाया।

BOOSTER ACADEMY

- अकबर ने **"अल्हा हो अकबर व "जिल्ले जलाले हूँ"** सिक्कों पर अंकित करवाया।
- प्रथम मुगल शासक जहाँगीर था जिसने अपनी तस्वीर के सिक्के चलाये।
- जहाँगीर के सिक्कें पर 12 राशि चक्रों का अंकन मिलता है।

शासक	सोना	चाँदी	ताँबा
बाबर		शाहरूख, बाबरी	
अकबर	मुहर, इलाही, शंसब	जलाली, रूपया	दाम
जहाँगीर	नूर अफ्शॉ, खैर काबुल, नूर अफगान	निसार	
शाहजहाँ			आना

❑ शेरशाह सूरी

- **रूपया -** चाँदी का सिक्का।
- **पैसा -** ताँबे का सिक्का।
- **आधुनिक मुद्रा का नाम –** रूपया।

❑ राजस्व प्रणाली

- अकबर ने प्रारम्भ में **जाब्ती** प्रणाली को अपनाया, कुल उत्पादन का 1/3 भाग कर लिया जाता था।
- **1569 ई.** में जाब्ती प्रणाली के स्थान पर शिहाबुद्दीन अहमद की सिफारिश पर नस्क/कनकूत/मुक्ताई व्यवस्था अपनाई गई।

1. नस्क/कनकूत

- इसमें खेती/भूमि को पैरों या रस्सी से नापकर प्रति बीघा पैदावार का अनुमान तथा पिछले वर्षों की पैदावार का अनुमान लगाकर वसूल किया जाता था।
- नस्क ठेकेदारी व्यवस्था थी।

❖ आइने दहसाला (1580 ई.)

- **1580 ई.** में **"आइने दहसाला"** व्यवस्था लागू हुई, इसका निर्माण टोडरमल ने किया, इसे लागू करने का दायित्व शाह मंसूर का था।
- इसके अन्तर्गत अलग-अलग फसलों के पिछले दस वर्षों के उत्पादन तथा उस समय उसके प्रचलित मूल्यों का औसत निकालकर उस औसत का 1/3 (एक तिहाई) कर लिया जाता था, इसे **"दस्तूर - उल – अमल"** कहा गया।
- इस प्रणाली में कर नकद लिया जाता था।
- यह एक प्रकार की जाब्ती प्रणाली थी।
- दहसाला प्रणाली एक प्रकार की रैयतवाड़ी प्रणाली थी क्योंकि इसमें कृषक सीधे सरकार को लगान देते थे।
- शाहजहाँ के समय मुर्शीद कुली खाँ ने दक्कन में इस लगान व्यवस्था को लागू किया, इसलिए इसे **"दक्कन का टोडरमल"** कहा जाता है।

BOOSTER ACADEMY

❖ गल्ला बख्शी/बंटाई/भाओली

- यह मुगलकाल में कर वसूली की सबसे पुरानी पद्धति थी।
- इससे राज्य को उपज का 1/3 भाग मिलता था।
  (A) **खेत बँटाई** - खड़ी फसल में खेत को बाँट दिया जाता था।
  (B) **लंक बँटाई** – फसल कटने के बाद गट्ठर बाँट लिये जाते थे।
  (C) **रास बँटाई** - अनाज निकालने के बाद में बाँट लिया जाता था।

❖ मुगलों में भूमि का वर्गीकरण मुखतः चार भागों में किया गयाः

A पोलज - जिस पर हर हर्ष खेती हो।
B परती - उर्वरता प्राप्ति के लिए एक वर्ष खाली छोड़ना।
C चच्चर - वह भूमि जिस पर 3-4 वर्ष खेती न हो।
D बंजर - पाँच वर्ष से अधिक तक बिना जोती भूमि।

❖ माप की इकाईयाँ

- **सिकन्दरी गज** - 39 अंगुल या 32 इंच।
- **इलाही गज (अकबर के काल में)** - 41 अंगुल या 33 इंच।
- **कोवाड़** - दक्षिणी भारत में सूती - ऊनी - वस्त्रों ने नाम की इकाई।

❖ जरीब

- सर्वप्रथम अकबर ने इसका प्रयोग किया। क्योंकि रस्सी मौसम के अनुसार सिकुड या फैल जाती थी। जिससे भूमि मापने में त्रुटि हो जाती थी।

❖ मुगलकालीन राजस्व स्त्रोत

- इस काल में भू - राजस्व के अतिरिक्त भी अनेक सामाजिक - धार्मिक एवं स्थानीय कर लिय जाते थे।
- **धार्मिक**
  - ✓ **जकात** – मुसलमानों से लिया जाने वाला कर, आय का $2\frac{1}{2}$(ढाई) प्रतिशत होता था।
  - ✓ **जजिया** – गैर – मुसलमानों से लिया जाने वाला कर।
    - **1679 ई.** औरंगजेब ने पुन: लगाया।
    - **1713 ई.** फर्रूखशियर ने पुन: हटाया।
    - **1720 ई.** मुहम्मद शाह ने अन्तिम रूप से जजिया हटा दिया।

कर	उद्देश्य
खुम्स	यह लूट का बँटवारा 1/5 राजा का व 4/5 सैनिक को।
तमगा	मुस्लिम व्यापारियों पर लगने वाला कर, जहाँगीर ने हटा दिया।
नजर	बादशाह को दी जाने वाली नकद पेशकश।
नियाज	शाहजदों द्वारा बादशाह को दिये गये उपहार।
निसार	अमीरों द्वारा बादशाहह को उपहार।
खिदमती	पराजित/ अधीनस्थ राजा द्वारा बादशाह को कर।

BOOSTER ACADEMY

❑ मुगलकालीन भूमि हस्तान्तरण

- **जागीर –**
  - ✓ वह भूमि जो मनसबदारों को उनके वेतन के बदले दी जाती थी।
  - ✓ यह हस्तान्तरित भी होती थी।
- **वतन जागीर -**
  - ✓ अधीनस्थ राजाओं को उनके क्षेत्र में दी जाने वाली भूमि।
  - ✓ यह वंशानुगत होती थी।
- **वक्फ –**
  - ✓ धार्मिक कार्यों के लिए अनुदान में दी जाने वाली भूमि।
- **खालसा-**
  - ✓ वह भूमि जिस पर आय एवं प्रबंध का सीधा अधिकार केन्द्र का होता था।
- **ददनी –**
  - ✓ कारीगरों को दिया जाने वाला अग्रिम भुगतान।
- **मोकासा -**
  - ✓ मराठा सरदारों का दिया जाने वाला भूमि अनुदान।
- **अलतमगा –**
  - ✓ विशेष कृपा प्राप्त धार्मिक व्यक्तियों को वंशानुगत रूप से दी जाने वाली थी। यह प्रथा **जहाँगीर** ने शुरू की।
- **मदद-ए- माश/सयूरगल/मिलक-**
  - ✓ यह भूमि जरूरतमंदों को अनुदान में दी जाती थी। जैसे - विधवा, गरीब, अपाहिज।
  - ✓ यह भूमि वंशानुगत होती थी।
  - ✓ इस पर कर नहीं लिया जाता था।

❑ मुगल कालीन व्यपार – वाणिज्य

- इस काल में व्यापारिक स्थिति समृद्ध थी इसमें हुड़ी, बैंक, बीमा आदि वाणिज्य पद्धतियाँ प्रचलित थी।
- **"पूरे विश्व में सोना - चाँदी चक्कर लगाने के बाद भारत में दफन हो जाता है।"**
- **बाबुल ए मक्का** - सूरत बन्दरगाह को कहते है।

❖ कृषि

- मुगलकालीन कृषि की जानकारी आइने अकबरी से मिलती है।
- **मुख्य फसलें -** गेहूँ, चावल, बाजरा, दाल।
- **नील -** बयाना व गुजरात के सरखेज व सेहान में सर्वोत्तम होती थी।
- जहाँगीर ने तम्बाकू की खेती प्रारम्भ की, तम्बाकू व मक्का पुर्तगाली भारत लाये।
- **गन्ना –** बंगाल, बिहार।
- **अफीम** - मालवा, बिहार।

BOOSTER ACADEMY

❑ कृषक वर्ग तीन भागों में विभाजित था।

1. **खुदकाश्त:-** स्वयं की भूमि पर खेती।
2. **पाहीकाश्त:-** वे किसान जो दूसरे गाँवों मे जाकर बंटाईदार के रूप में खेती करते थे।
3. **मुजारियान:-** कम भूमि होने के कारण जमीन किराये पर लेकर खेती करते थे।

- **तकावी:-** कृषि के लिए आगामी ऋण।

❖ अन्य उद्योग

- मुगल काल में सूती वस्त्र सबसे उन्नत था।
- **कैलियो -** भारतीय सूती वस्त्रों को।
- रेशम वस्त्रों को **पटोला** कहते थे।
- शोरा - बिहार व कोरोमण्डल तट में उत्पादित होता था।

❖ मुगलकालीन न्याय व्यवस्था:-

- मुगलकाल में मुख्य न्यायाधीश बादशाह होता था।
- काजी/मुफ्ती की सहायता से न्याय करता था
- **"फतवा - ए- आलमगीरी"** कानून की पुस्तक जिसका संकलन औरंगजेब ने करवाया।

शासक	न्याय का दिन
अकबर	बृहस्पतिवार/गुरूवार
जहाँगीर	मंगलवार
शाहजहाँ, औरंगजेब	बुधवार

❑ मुगलकालीन सेना

- मुगल सेना का गठन **"दशमलव पद्धति"** पर आधारित था।

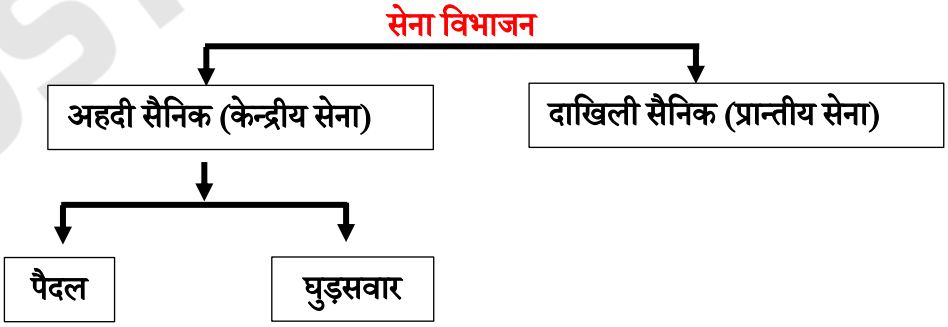

- **बारगीर:** हथियार, संसाधन राज्य से।
- **सिलेदार:** हथियार, संसाधन स्वयं के होते है, बारगीर से ज्यादा वेतन

BOOSTER ACADEMY

❖ घुड़सवारों के प्रकार –

- **यक अस्पा:** जिनके पास केवल एक घोड़ा होता था।
- **दुअस्पा:** वह घुड़सवार जिसके पास दो घोड़े थे।
- **सीह अस्पा:** वह घुड़सवार जिसके पास तीन घोड़े होते थे।
- **निम्नअस्पा:** दो घुड़सवारों के बीच एक घोड़ा।
- तोपखाने का प्रमुख **"मीर आतिश"** कहलाता था।
  तोपें -नरनाल, गजनाल, शतुरनाल, अर्राब।
  (मानव द्वारा) (हाथी द्वारा) (ऊँट द्वारा) (पहियों पर तोप)

❑ मुगलकालीन मनसबदारी व्यवस्था

- चंगेज खाँ ने मनसबदारी व्यवस्था शुरू की।
- 1575 ई. में अकबर ने मनसबदारी शुरू की।
- यह दशमलव प्रणाली पर आधारित थी।
- मनसब का अर्थ **"पद"** होता था। इसे निम्न बातों का पता चलता था।
- अधिकारी का पद क्या है।
- वेतन कितना है।
- सेना, घोडे व हथियार कितने है।

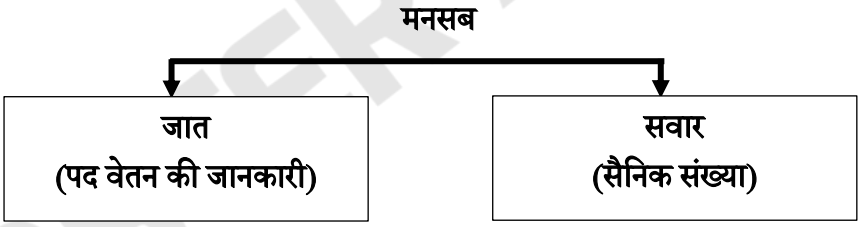

- मनसबदार को जागीर तथा नकद दोनों में भुगतान किया जाता था। जब मनसबदार को जागीर दी जाती थी तो जागीरदार कहा जाता था।
- सभी जागीरदार मनसबदार थे लेकिन सभी मनसबदार जागीरदार नहीं थे।
- अकबर ने 1595 ई. में जात व सवार नामक **"द्वैध मनसब"** प्रणाली शुरू की। अर्थात् **"जात" व "सवार"**
- **जात**
  - ✓ जात मनसब के पद को सूचित करता था।
  - ✓ जात के आधार पर वेतन निर्धारण।
- **सवार**
  - ✓ सैनिकों की संख्या को सूचित करता था।

नोट - मनसब का पद बिना सवार के हो सकता था लेकिन बिना जात के नहीं।

शासक	मनसबदार
अकबर	सलीम - 12000 मनसब मानसिंह (आमेर) - 7000 मनसब मिर्जा अजीज कोका - 7000 मनसब
जहाँगीर	परवेज: 40,000 जात 30,000 सवार
शाहजहाँ	दाराशिकोह: 60,000 जात 40,000 सवार

* मनसबदारी व्यवस्था में 1/3,1/4, 1/5 का नियम लागू किया।

1/3 का नियम-अगर मनसबदार अपने प्रान्त में नियुक्त होता था। तो उसे निर्धारित सवार पद के 1/3 घुड़सवार रखने होते थे।

1/4 का नियम-अगर अन्य प्रान्त में नियुक्त होता तो सवार के 1/4 घुड़सवार रखने होते थे।

1/5 का नियम- बल्ख या बदख्शाँ (काबुल) में नियुक्त होता तो सवार ने पाँचवें भाग के बराबर घुड़सवार रखने होते।

- जहांगीर ने मनसबदारी प्रणाली में **"दुह अस्पा" व "सीह अस्पा"** प्रथा चलाई, जिससे जात व सवार का पद बढ़ाये बिना **"घुड़सवार सैनिकों"** की संख्या क्रमशः दुगुनी या तिगुनी हो जाती थी।
- औरंगजेब ने **"मशरूत"** नामक पद का सृजन किया।
- **मशरूत:** मनसबदार को फौजदार या किलेदार का कोई पद दिया जाता था, इसमें मनसबदार की सवार रैंक में वृद्धि कर दी जाती थी, जिससे वह अधिक घुड़सवार रख सकता था, यह अस्थायी वृद्धि **मशरूत** कहलाती थी।
- इसके काल में मनसबदारों की संख्या में वृद्धि के कारण उन्हें देने के लिए जागीर नहीं थी, इससे जागीदारी संकट अथवा बेजागिरी की समस्या उत्पन्न हुई। सर्वप्रथम जागीरदार संकट का प्रतिपादन मोरलैण्ड ने किया।
- सर्वाधिक हिन्दू मनसबदार (33 प्रतिशत) औरंगजेब के समय थे।

❑ मुगलकालीन स्थापत्य कला

- मुगलकालीन स्थापत्य कला इंडो-इस्लामिक शैली का अन्तिम पड़ाव था, इसमें ईरानी, तुर्की एवं सल्तनत कालीन व भारतीय तत्त्व के साथ सम्मिलित है।
- मुगल वास्तुकला में खुरदरे, लाल व संगमरमर तीनों प्रकार के पत्थरों का इस्तेमाल हुआ।
- मुगल स्थापत्य में भव्यता, सजावट, अलंकरण, कोणदार और रंगीन मेहराब इसकी पहचान/विशेषता थी।
- मुगल वास्तुकला की शुरूआत बाबर, विकास अकबर, चरम शाहजहाँ, पतन औरंगजेब के काल में हुआ।

❖ बाबर काल की इमारतें

- पानीपत की काबुली बाग मस्जिद।
- संभल की जामा मस्जिद
- अयोध्या बाबरी मस्जिद (मीर बाकी द्वारा)

❖ हुमायूँ काल की इमारतें:

- दीनपनाह नगर (पुराना किला)
- आगरा मस्जिद
- हिसार के फतेहबाद की मस्जिद (ईरानी शैली)

❖ अकबर काल की इमारतें

- **हुमायूँ का मकबरा:** हाजी बेगम ने फारसी वास्तुकार मिर्जा ग्यास बेग की देखरेख में बनवाया। इसमें पहली बार चारदीवारी, सफेद संगमरमर व दोहरे गुम्बद, चारबाग पद्धति का प्रयोग किया गया।
- यह ताजमहल का पूर्वगामी था।

❖ आगरा का किला:

- **वास्तुकार कासिम खाँ इसमें दो दरवाजे है-**
  1. दिल्ली दरवाजा
  2. अमर सिंह दरवाजा

❖ फतेहपुर सीकर की इमारतें:

- वास्तुकार - बहाऊद्दीन
- 9 दरवाजों में से मुख्य आगरा दरवाजा था।
- **इमारतें-**
  - ✓ **दीवाने-ए-आम -** दरबार लगता एवं न्याय का कार्य किया जाता था।
  - ✓ **दीवाने-ए-खास -** अकबर का निजी भवन।
  - ✓ **जोधाबाई महल -** गुजराती शैली का प्रभाव, फतेहपुर सीकरी का सबसे बड़ा एवं सर्वश्रेष्ठ महल।
  - ✓ **तुर्की सुल्ताना का महल -** मुगल स्थापत्य कला का रतन (पर्सी ब्राऊन)।
  - ✓ मरियम का महल।
  - ✓ **पंचमहल/हवामहल –** बौद्ध शैली में निर्मित (पाँच मंजिला)।
  - ✓ बीरबल महल।
  - ✓ **जामा मस्जिद -** फतेहपुर सीकरी का गौरव कहते है।
  - ✓ **बुलन्द दरवाजा** - गुजरात विजय के उपलक्ष में (Gate of victory) (1572 ई.)।
  - ✓ इस्लाम खाँ का मकबरा।
  - ✓ **शेख सलीम चिश्ती का मकबरा -** फतेहपुर सीकरी में सर्वप्रथम संगमरमर का प्रयोग इसी इमारत में हुआ।
- अजमेर में मैग्जीन किले का निर्माण करवाया।

BOOSTER ACADEMY

❖ जहाँगीर काल की इमारतें:

- **अकबर का मकबरा (सिकन्दराबाद) -** बौद्ध शैली में निर्मित, सर्वप्रथम मुगलकालीन मकबरे में मीनारों का प्रयोग।
- **एतमादुद्दौला का मकबरा –** निर्माण – नूरजहाँ ने।
  - **प्रथम बार पित्रा** - दूरा का प्रयोग
  - यह मुगलकालीन प्रथम इमारत जो पूर्णत संगमरमर से बनी है।
- मोती मस्जिद (लाहौर)
- अब्दुर्रहीम खानखाना का मकबरा।
- **जहाँगीर का मकबरा (लाहौर)** - जहाँगीर ने स्वयं ने इसकी योजना बनाई, तथा नूरजहाँ ने इसे पूरा करवाया।
- अनारकली का मकबरा - (लाहौर) जहाँगीर द्वारा।
- **पित्रा दूराः**
  संगमरमर पत्थर पर जवाहरात, रंगीन पत्थर जड़ने का काम।

❑ शाहजहाँ के काल में मुगल स्थापत्यः-

- शाहजहाँ का शासनकाल इण्डो-इस्लामिक **"स्थापत्य के स्वर्णकाल"** के रूप में है। इसके काल में इमारतों में वृहद स्तर पर संगमरमर का उपयोग प्रारंभ हुआ और पित्राडयूरा तकनीक का स्वरूप भी निखरकर सामने आया।
- शाहजहाँ के काल में मेहराब, गुबंद, मीनार, परकोटा, आदि सभी में आदर्श संतुलन स्थापित हुआ। इसके बारे में प्रसिद्ध वास्तुविद् पर्सी ब्राउन ने लिखा हैं कि जिस प्रकार **''ऑगस्टास ने रोम को ईटों से बना पाया और संगमरमर का बनाकर छोड गया, उसी प्रकार शाहजहाँ ने मुगल भवनों को लाल पत्थर का बना पाया और संगमरमर का बनाकर छोड गया।''**

❑ शाहजहाँ कालीन इमारते

❖ लाल किलाः दिल्लीः-

- शाहजहाँ के द्वारा यमुना नदी के किनारे **"शाहजहाँनाबाद"** नामक नवीन राजधानी नगर की स्थापना की और वहां अष्ट भुजाकर लाल किले का निर्माण करवाया। दिल्ली के लाल किले के वास्तुविद् हम्मीद तथा अहमद थें, इस किले को **"किला ए मुबारक"** एवं **"भाग्यवान किला"** भी कहा जाता है इसमें शाहजहॉ द्वारा अनेक इमारतों का निर्माण करवाया।

➢ दीवान -ए-आमः-

- दीवान -ए- आम स्तंभो पर बनी इमारत है। जिसमें लहरदार मेहराब युक्त नौ द्वार बने हुय है। इस दीवान-ए-आम में **''तख्त-ए-ताउस''** रखा जाता था। और यहाँ सामान्य जनता की सुनवाई का कार्य किया जाता था।

➢ तख्त -ए-ताउस(मयूर सिंहासन):-

- शाहजहाँ के काल में इस सिंहासन का निर्माण बेबादल खां की देखरेख में करवाया गया। इस सिंहासन में सुप्रसिद्ध कोहिनूर हीरा जडा हुआ था और मयूर आकृति का होने के कारण यह मयूर सिंहासन नाम से जाना गया। 1739 ई. में नादिरशाह नामक आक्रमणकारी तख्त-ए-ताउस को लूटकर ले गया।

➢ दीवान-ए-खासः-

- इसका निर्माण शाहजहाँ ने अपने निजी कक्ष के रूप में करवाया। दीवान-ए-खास की छत चांदी की बनी हुई थी जिसे सोने एवं बहूमूल्य जवाहरतों की जडाई का कार्य हुआ था। दीवान-ए-खास की दीवारों पर लिखा हुआ था कि- **''यदि संसार में कही स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है, यहीं''** है।

➢ रंगमहलः-

- यह मुगल बादशाह का शाही हरम था।

❑ शाहजहाँ द्वारा आगरा में निर्मित इमारतेः-

❖ ताजमहल: आगराः-

- यह शाहजहाँ की पत्नी अर्जुमंदबानों बेगम (मुमताज) का मकबरा है। इसका निर्माण शाहजहाँ द्वारा किया गया था
- **मुख्य स्थापत्यकार -** उस्ताद अहमद लाहौरी एवं उस्ताद ईसा
- **अन्य-** कुरान की आयतें लिखने वाला (सुलेखक) अमान खाँ सिराजी, गुम्बद निमार्ण इस्माइल खाँ द्वारा तथा पच्चीकारी का कार्य कज्नौज के मोहनलाल ने किया था।
- **निर्माण -** 22 फीट उँचे चबूतरे पर ताजमहल का निर्माण हुआ।
- **निर्माण अवधि -** ताजमहल को पूरा करने में कुल 22 वर्ष लगे।
- सफेद संगमरमर से निर्मित इस इमारत में ईरान तथा भारत के स्थापत्य की मिश्रित विशेषताएं है। इसमें पित्राड्यूरा का भी उत्कृष्ट कार्य हुआ है। ताजमहल के चारों कोनों पर चार पतली तथा मुख्य इमारत से लंबी मीनारों का प्रयोग हुआ है।
- प्रसिद्ध वास्तुविद् हेवेल ने इसे **"भारतीय नारीत्व की साकार प्रतिमा कहा है।"** और लिखा है कि-यह ऐसा आदर्श विचार है। जो **"स्थापत्य कला का न होकर मूर्तिकला से संबंधित है।"**

❑ औरंगजेब के काल में स्थापत्यः-

- औरंगजेब के काल में मुगल अर्थव्यवस्था पर बढते दबाव एवं राजनीतिक समस्याओं के कारण स्थापत्य कला का हास हुआ।
- **औरंगजेब के काल में कुछ इमारतें बनी जैसे –**
  - ✓ दिल्ली के लाल किले में पूर्ण संमरमर से बनी मोती मस्जिद।
  - ✓ **लाहौर की बादशाही मस्जिद -** यह फिदई खाँ की देखरेख में बनी।
  - ✓ लद्दाख में पहली मुगल मस्जिद निर्माण औरंगजेब ने करवाया।
  - ✓ औरंगजेब ने अपनी प्रिय बेगम रबिया दुर्रानी की स्मृति में औरंगाबाद में एक मकबरा बनवाया, इसे **''बीबी का मकबरा''** कहा जाता है यह ताजमहल की फूहड़ नकल पर बना है इसे दक्षिण का ताजमहल/काला ताजमहल/दूसरा ताजमहल भी कहते है। इसके वास्तुकार अताउल्ला खॉ थें।

BOOSTER ACADEMY

❖ मुगल उद्यान

● आराम बाग (आगरा)	बाबर
● शालीमार बाग (श्रीनगर)	जहाँगीर
● निशात बाग (श्रीनगर)	जहाँगीर
● शालीमार बाग (लाहौर)	शाहजहाँ
● चश्मा ए शाही बाग (श्रीनगर)	शाहजहाँ
● पिंजौर बाग (हरियाणा)	औरंगजेब

❑ मुगलकालीन संगीतकला

- अकबर के दरबार में तानसेन व बाजबहादुर प्रसिद्ध संगीतकार थे।
- अबुल फजल ने अकबर के दरबार में 36 संगीतकरों का उल्लेख किया।
- अकबर बहुत अच्छा नगाड़ा बजाता था।

❖ तानसेन (रामतनुपाण्डे)

- पहले रींवा के राजा रामचन्द्र के दरबार में था।
- उपाधि- **"कण्ठाभरणवाणीविलास"** अकबर ने दी थी।
- **निम्न रागों का आविष्कार किया-**
  - ✓ मियां की टोड़ी
  - ✓ मियां की मल्हार
  - ✓ मियां की सारंग
  - ✓ दीपक राग(अकबर के दरबार में)
- संगीत गुरू-हरिदास (इनका संगीत सुनने अकबर भेष बदलकर जाता था।)
- आध्यात्मिक गुरू - मोहम्मद गौस
- जहाँगीर ने जगन्नाथ को **"पंडितराज"** की उपाधि तथा गजल गायक शौकी को **"आनन्द खाँ"** की उपाधि दी।
- औरंगजेब कुशल वीणा वादक था।
- औरंगजेब काल में फारसी भाषा में **"भारतीय शास्त्रीय संगीत"** की सर्वाधिक पुस्तकें लिखी गई।
- औरंगजेब ने 1695 ई. में संगीत को इस्लाम विरोधी बताकर इस पर पाबन्दी लगा दी।

❑ मुगलकालीन चित्रकला

- मुगल चित्रकारों को **उस्ताद** कहा जाता था।
- **मीर-मुसब्बिर:** मुख्य चित्रकार का पद था।

BOOSTER ACADEMY

❖ बाबर:

- चित्रकार-बिजहाद, शाह मुजफ्फर।
- बिजहाद फारस का प्रमुख चित्रकार था। इसे **"पूर्व का राफेल"** कहा जाता था।

❖ हुमायूँ

- हुमायूँ मुगल चित्रकला का संस्थापक था।
- **चित्रकार:**
- अब्दुस्समद उपाधि - **शीरी कलम**
- मीर सैय्यद अली। **(उपाधि – नादिर उल - असरार)**

❖ हम्जानामा:

- अमीर हमजा **(पैगम्बर मुहम्मद के चाचा)** के पौराणिक कारनामों का वर्णन है।
- यह मुगलकाल की सर्वप्रथम चित्रित पुस्तक थी।
- सभी चित्र **"लिनेन कपड़े पर चित्रित"** है।
- यह फारसी में अनुवादित काव्य है।
- प्रमुख चित्रकार - **मीर सैय्यद अली, अब्दुस्समद।**
- हुमायूँ ने इसकी शुरूआत की, अकबर ने पूर्ण किया।

❖ अकबर कालीन चित्रकला

- सर्वप्रथम अकबर ने चित्रकला विभाग का गठन किया। इसका प्रमुख **अब्दुस्समद** था।

❖ प्रमुख चित्रकार

- बसावन, मिस्किन, लाल, मुकुन्द एवं मंसूर प्रमुख चित्रकार, दसवंत, आदि।

❖ दसवन्त

- इसके चित्र केवल रज्मनामा में मिलते हैं। यह **"अग्रणी चित्रकार"** था।
- मानसिक रूप से विक्षिप्त होने के कारण इसने आत्महत्या कर ली थी।

❖ बसावन

- यह अकबर के समय **"सर्वोत्कृष्ट चित्रकार"** था।
- प्रमुख चित्र-घोडे के साथ मजनूं का चित्र।
- दैत्य के सिर पर स्त्री का चित्र।

नोट - चित्रों के साथ कलाकारों के हस्ताक्षर अंकित करना भारतीय कला में मुगलों की देन है। पहला हस्ताक्षर बसावन ने किया।

रज्मनामा: (मुहम्मद शरीफ) तके पर्यवेक्षण में महाभारत का फारसी अनुवाद है।

- अकबर ने सर्वप्रथम **भित्ति चित्रकारी** की शुरूआत हुई।
- अकबर ने सर्वप्रथम अपना रूपचित्र पोट्रेट बनवाया।
- **"मैं उन लोगों से नफरत करता हूँ जो चित्रकारी से घृणा करते हैं।"**

BOOSTER ACADEMY

❖ जहाँगीर कालीन चित्रकला

- **प्रमुख चित्रकार:-** बिसनदास, उस्ताद मंसूर, अबूल हसन, दौलत, मनोहर।
- **महिला चित्रकार-** साइफाबानों, नादिराबानों, रूकयमबानो ।
- जहाँगीर के काल में चित्रकला अपने चर्म पर थी।
- जहाँगीर के समय **"मुरक्का ए गुलशन"** चित्रावली का निर्माण हुआ।
- **मुरक्का** - चित्रों का एल्बम।
- जहाँगीर के काल में प्राकृतिक दृश्यों, पशु-पक्षियों, छविचित्र (पोट्रेट) चित्र बनाने में प्रगति हुई।
- चित्रकला का निर्माण प्रसिद्ध चित्रकार **"आकारिजा"** के नेतृत्व में हुआ।

मुगलकाल में प्रसिद्ध चित्र व चित्रकार	
घोड़े के साथ मजनूं का चित्र	बसावन
साईबेरिया का दुर्लभ सारस	उस्ताद मंसूर (नादिर-उल-अस्त्र - उपाधि)
बंगाल का एक अनोखा पुष्प	उस्ताद मंसूर (जहाँगीर)
तुजुक-ए-जहाँगीरी के मुख्य पृष्ठ का चित्र	अबुल हसन (नादिर उद्-जमा – उपाधि)
ड्यूटर के संत्तपॉल का चित्र	अबुल हसन
बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह का चित्र	फारूख बेग (जहाँगीर)

- जहाँगीर के काल में भारतीय चित्रकला पर विदेशी (फारसी) प्रभाव खत्म हो गया।
- मुगलचित्रों में प्रभामण्डल का निरूपण जहाँगीर के काल में शुरू हुआ।

❖ शाहजहाँ कालीन चित्रकला

- **प्रमुख चित्रकार -** मीर हाशिम, फकीर उल्ला, अनूप, चित्रा, विचित्रा आदि।
- सर्वाधिक छवि चित्र शाहजहाँ के काल में बनाये गए।
- सर्वाधिक प्रभामण्डल का प्रयोग हुआ।
- औरंगजेब ने चित्रकला को इस्लाम विरूद्ध मानकर इसे बन्द करवा दिया।

अन्य तथ्य

- फर्रूखशियर ने चित्रकला को पुनः संरक्षण दिया।
- यूरोपीय प्रभाव वाले चित्रों में मिशकिन सर्वश्रेष्ठ था।
- मुगल चित्रकला शैली की प्रकृति अभिजात वर्गीय थी। इसलिए सामान्य जन के चित्र नहीं बनाये।

BOOSTER ACADEMY

	शासक	ग्राही	उपाधि
1.	बाबर	बिहजाद	पूर्व का राफेल
2.	आदिलशाह	हेमू	विक्रमादित्य
3.	हुमायूँ	ख्वाजा अब्दुस्समद मीर सैय्यद	शीरी कलम नादिर उल असरार
4.	अकबर	हीर विजय सुरी जिन चन्द्र सुरी तानसेन बीरबल नरहरि चक्रवर्ती मानसिंह हरखाबाई (भारमल की पुत्र)	जगत् गुरू युग प्रधान कण्ठाभरणवाणीविलास कवि प्रिय (कविराय) महापात्र फर्जन्द (बेटा) मरियम उज्जमानी
5	जहाँगीर	उस्ताद मंसूर अबुल हसन खुर्रम जोधाबाई	नादि-उल-अस्त्र नारि-उद्: जमा शाहजहाँ जगत् गोंसाई (मोटा राजा उदयसिंह की पुत्री)
6.	शाहजहाँ	लाल (संगीतज्ञ)	गुण समुद्र

❑ मुगलकालीन शिक्षा

- मुगल काल में शिक्षा का कोई विशेष विभाग नहीं था। लेकिन मुगलों ने शिक्षा के महत्व को समझा व विद्वानों को संरक्षण दिया।
- मुगलकाल में शिक्षा **फारसी** भाषा में दी जाती थी।

- लखनऊ का फरहंगी महल मदरसा- न्याय शिक्षा के लिए।
- स्यालकोट का मदरसा - व्याकरण शिक्षा के लिए।
- बनारस हिन्दू शिक्षा का बड़ा केन्द्र था।

❑ मुगलकालीन साहित्य

❖ तुजुक - ए- बाबरी:- (तुर्की भाषा)- बाबर की आत्मकथा

Note:- श्रीमती ए. एस. बेवरिज ने तुजुके बाबरी का तुर्की भाषा से अंग्रेजी में अनुवाद किया।

- अपनी आत्मकथा में बाबर ने विभिन्न स्थानों की जलवायु एवं उस समय के राजनीतिक जीवन का उल्लेख किया है।
- बाबर लिखता है कि **''हिन्दुस्तानी सैनिक मरना जानते है लड़ना नहीं।''**

BOOSTER ACADEMY

❖ कानून - ए- हुमायूँनी :- ख्वांदामीर

- इस पुस्तक की रचना अकबर के आदेश से फारसी भाषा में की गई। इसमें हुमायूँ के प्रारम्भिक जीवन की कठिनाइयों का विवेचन किया गया है।

❖ हुमायूँनामा :- गुलबदन बेगम

- बाबर की पुत्री एवं हुमायूँ की बहिन (सौतेली) गुलबदन बेगम के द्वारा अकबर के आदेश पर फारसी भाषा में इस ग्रन्थ की रचना की।
- इस पुस्तक में बाबर हुमायूँ के चरित्र, हुमायूँ के अपने भाइयों के साथ संबंधों का विवेचन किया गया है।

❖ अकबरनामा (फारसी भाषा):- अबुल फजल

- अकबरनामा की रचना अबुल फजल के द्वारा तीन खण्डों में गई। इसके पहले खण्ड में तैमूर से हूमायूँ तक के शासन काल की घटनाओं का वर्णन किया है, इसका तीसरा खण्ड **''आइन-ए-अकबरी''** नाम से जाना जाता है, जिसमें अकबरकालीन प्रशासनिक एवं आर्थिक जीवन की जानकारी दी गई है।
- **आइन ए अकबरी पाँच भागों (दफ्तर) में विभाजित है-**

  1. **मंजिल आबादी**- शाही घर परिवार के विषय में जानकारी।
  2. **सिपह आबादी** - मनसबदारी व्यवस्था, प्रशासन का उल्लेख।
  3. **मुल्क आबादी** - 12 प्रान्तों एवं सरकारों का वर्णन।

  चौथे एवं पांचवे भागों में भारत के लोगों के मजहब, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक रीति रिवाजों का उल्लेख हुआ है। पॉचवें में अकबर के शुभ वचनों का संग्रह एंव अबुल फजल की आत्मकथा है।

❖ तुजुक -ए - जहाँगीरी:- जहांगीर

- जहाँगीर द्वारा फारसी में लिखित इसकी आत्मकथा है। इस पुस्तक में जहाँगीर ने प्रारंम्भिक शासनकाल का वर्णन किया है। लेकिन स्वास्थ्य खराब होने के कारण इस पुस्तक के लेखन का जिम्मा **"मोतमिद खाँ"** को सौंपा गया, **मुहम्मद हादी** ने इसे अन्तिम रूप से पूरा किया।

पादशाहनामा:-

- **पादशाहनामा ग्रन्थ तीन अलग-अलग लेखकों के द्वारा लिखा गया, जैसे –**
  - ✓ **मोहम्मद अमीन कजवीनी:-** इसने शाहजहाँ के प्रारंभिक शासनकाल का वर्णन किया है लेकिन शीघ्र ही इसे इतिहास लेखन के कार्य से हटा दिया गया।
  - ✓ **अब्दुल हम्मीद लाहौरी:-** इसने शाहजहाँ के शासनकाल काल की घटनाओं को लिखा।
  - ✓ **मुहम्द वारिसः-** इसने शाहजहाँकालीन सम्पूर्ण घटनाओं को अन्तिम रूप से पूर्ण किया।

❖ द्वारा शिकोहः

- फारसी अनुवाद - भगवत गीता।
  योग वशिष्ट-
- **सिर्र - ए- अकबर -** 52 उपनिषदों का फारसी अनुवाद।
- **मज्म उल – बहरीन** (दो समुद्रों का संगम) पुस्तक की रचना दारा सिकोह ने की।

❖ औरंगजेब

1. मुन्तखब उल तवारीख - खफी खाँ।

- औरंगजेब के शासन का आलोचनात्मक वर्णन।

2. खुलासत-उत-तवारीख→ **सुजानराय भण्डारी**

3. नुस्खा – ए - दिलकुशां → **भीमसेन**

4. फतवा-ए-आलमगीरी- कानूनों का संकलन

5. औरंगजेब की पुत्री जैबुन्निसा एक कवयित्री थी, उसने **"दीवान ए-मख्फी"** की रचना की।

❖ अनुदित पुस्तकेः

- अकबर ने अनुवाद विभाग की स्थापना की। फैजी अनुवाद विभाग का अध्यक्ष था।

लीलावती, वेदान्त, योग-वशिष्ठ, नल दमयंती	फैजी
अथर्ववेद	इब्राहिम सरहिन्दी
सिंहासन बत्तीसी	बंदायूँनी

Note :- पंचतंत्र (अनवार ए-सुहेली - फारसी अनुवाद) – अबुल फजल द्वारा।
पंचतंत्र (कालीला वा-दिमना - अरबी अनुवाद) इसका अनुवाद भी अबुल फजल ने किया।

BOOSTER ACADEMY

शिवाजी एवं मराठा साम्राज्य

- **विजयनगर के पतन के बाद स्थापित** – दक्षिण भारत में प्रथम हिन्दू राज्य।
- **मराठा राज्य का उत्कर्ष** – 17वीं शताब्दी में – शिवाजी के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ।

❑ शिवाजी

- **जन्म :-** 20-04-1627
- **स्थान :-** पूना के समीप – शिवनेर नामक किले में।
- **पिता :-** शाहजी भोसलें
- **माता :-** जीजाबाई
- शिवाजी के पिता शाहजी भोसले **"अहमदनगर"** के सेवा में थे, परन्तु बाद में बीजापुर चले गए। (अन्य पत्नी – तुकाबाई मोहिते)

❖ शिवाजी का प्रारंभिक जीवन :

- शिवाजी का लालन पालन माता जीजाबाई ने पूना में किया।
- **इनके संरक्षक व राजनैतिक गुरु** – दादा कोंण देव थे।
- 12 वर्ष की आयु में पूना की पैतृक जागीर प्राप्त हुई।
- 1641 ई. में प्रथम विवाह – **सईबाई निम्बालकर से – पुत्र – शम्भाजी**
- अन्यपत्नियां :-**पुतलीबाई (पुताबाई) – शिवाजी की मृत्यु के बाद सती हुई।**
  सोयरबाई – उपाधि: राजमर्हिषी – पुत्र राजाराम
- आध्यात्मिक गुरु **:- समर्थ गुरु रामदास – पुस्तक : दाबोध**
- औरंगजेब ने शिवाजी को **पहाडी चूहा, मामूली भूमियां एवं साहसी डाकू कहा।**

❖ प्रथम राज्याभिषेक :-

- **कब :-** 15-06-1674
- **स्थान :-** रायगढ़ दुर्ग
- **किसके द्वारा :-** काशी के विद्वान – गंगा भट्ट या गागभट्ट
- राज्याभिषेक के समय शिवाजी ने – छत्रपति, गौब्राह्मण व हिन्दू पादशाही की उपाधि धारण की।
- **भगवा ध्वज को अपना झंडा बनाया।**

Note :- इस राज्याभिषेक के 12 दिन बाद ही माता जीजाबाई का निधन हो गया।

BOOSTER ACADEMY

❖ दूसरा राज्याभिषेक :-

- **कब** – 04-10-1674 ई.
- **किसके द्वारा** – निश्चलपुरी गोस्वामी
- **शिवाजी ने इस अवसर पर** – ताँबें का **"शिवराई"** व सोने का **"हूण"** नामक सिक्का जारी किया।

❖ शिवाजी के अभियान :-

- **सर्वप्रथम शिवाजी ने 1646 ई.** में बीजापुर के तोरण किले पर अधिकार किया।
- **1656 ई.** में जावली (बीजापुर) किले के किलेदार **"चंद्रराव मोरे"** को मार डाला व किले पर अधिकार कर लिया। (प्रथम महत्वपूर्ण विजय)
- **अप्रैल 1656 ई.** – रायगढ़ किले को जीतकर उसे अपनी राजधानी बनाया।
- **1657 ई.** में शिवाजी ने कोंकाण पर विजय प्राप्त की, शिवाजी के दमन हेतु **"अफजल खाँ"** को नियुक्त किया परन्तु शिवाजी ने उसे मार डाला। (2 नवम्बर 1659)
- **1660 ई.** में औरंगजेब ने अपने मामा शाइस्ता खाँ को दक्षिण में शिवाजी का दमन करने हेतु भेजा।
- **1663 ई.** में शिवाजी ने शाइस्ता खाँ के महल (लाल महल) पर आक्रमण किया – शाइस्ता खाँ भाग छूटा – शिवाजी ने उसकी अंगुलियाँ काट दी। **(15 अप्रैल 1663)**
- **शाइस्ता खाँ का पुत्र** – फतेहखान शिवाजी के हाथों मारा गया।

मुख्य बिंदु :- शिवाजी ने – 10-02-1664 ई. को सूरत की प्रथम लूट की।

❑ शिवाजी एवं मिर्जा राजा जयसिंह

- 1665 ई. में औरंगजेब के आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह एवं दिलेर खाँ को शिवाजी को कुचलने के लिए नियुक्त किया।
- जयसिंह ने औरंगजेब को यह लिखा कि **"हम शिवा को एक वृत के केन्द्र की तरह बांध लेंगे।"**
- जयसिंह ने सासवाद को अपना सैनिक केन्द्र बनाया था।
- जयसिंह ने पुरन्दर को जीत लिया व रायगढ़ को घेर लिया। पुरन्दर के नीचे माची दुर्ग। (मराठो का शास्त्रागार एवं सैनिक चौकी) के किले की रक्षा के दौरान मुरारबाजी देशपाण्डे अपने 300 मावली सैनिकों के साथ जयसिंह के सहयोगी दिलेर खाँ की सेना से लड़ते हुए मारे गए।
- **अन्त में 24 जून, 1665 ई.** को शिवाजी व जयसिंह के बीच पुरन्दर की सन्धि हुई।

❖ पुरन्दर की सन्धि की शर्तें :-

- शिवाजी ने चार लाख हूण वार्षिक आय वाले तेईस किले मुगलो को सौंपे तथा शिवाजी के पास रायगढ़ सहित केवल बारह किले रहे, जिनकी वार्षिक आय एक लाख हूण थी।
- बालाघाट की जागीर शिवाजी अपने पास रख ली, लेकिन बदले में उसे **40 लाख हूण 13 किस्तों** में मुगलों को देने होंगे।

BOOSTER ACADEMY

- शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को पांच हजार का मनसबदार बनाया व शम्भाजी को 5000 घोडों के दल के साथ बादशाह की सेवा में रहना होगा। शिवाजी को मुगल दरबार में निजी उपस्थिति से मुक्त कर दिया।
- शिवाजी ने बीजापुर के विरुद्ध मुगलों को सैनिक सहायता का वचन दिया।
- औरंगजेब ने पुरन्दर सन्धि को स्वीकार कर शिवाजी के लिए फरमान व खिलअत भेज दी।

❖ शिवाजी आगरा दरबार में (22 मई, 1666 ई.)

- 1666 ई. में जयसिंह के कहने पर शिवाजी अपने पुत्र शम्भाजी के साथ दीवाने-खास में मुगल दरबार में आगरा आये, किन्तु औरंगजेब ने उन्हें पांच हजारी मनसबदारों की तीसरी पंक्ति में खड़ा कर दिया। इस अपमान से नाराज होकर शिवाजी दरबार से उठकर चले गये क्योंकि शिवाजी से हारे हुए जसवन्तसिंह 7000 मनसबदारों की पंक्ति में शिवाजी के आगे खड़े थे।
- शिवाजी को जयसिंह के पुत्र रामसिंह की देखरेख में आगरा के जयपुर भवन में कैद किया गया। परन्तु वे चतुराई से अपने सौतेले भाई हीरोजी को अपने स्थान पर लेटाकर फरार हो गये।

❖ कोंडाणा विजय (04-02-1670) :-

- 1670 ई. में मुगलों पर आक्रमण कर कोंडाणा सहित अनेक किले शिवाजी ने पुन: जीत लिए –
- कोंडाणा विजय – शिवाजी के सेनापति "तानाजी मालसेरे" ने प्राप्त की
- कोंडाणा का नाम बदलकर-शिवाजी ने – सिंहगढ रखा।

❑ सूरत की दूसरी लूट :-

- अक्टूबर 1670 ई. में
- इस लूट के दौरान शिवाजी ने वापस लौटते समय – कंचन मंचन दर्रे पर – वाणी डिंडोरी के युद्ध में मुगलों को पराजित किया।

❖ अन्य महत्वपूर्ण तथ्य :

- शिवाजी ने अपने पुत्र – शम्भाजी के व्यवहार से दु:खी होकर उसे 1678 ई. में पन्हाला के दुर्ग में बंदी रखा।
- अप्रैल – 1680 ई. में शिवाजी की मृत्यु हो गई।

❑ शिवाजी का प्रशासन

- प्रकृति : निरंकुश लोकहितवादी
- सर्वोच्च प्रशासक – राजा
- उपाधि– छत्रपति
- सेना व न्याय मे सर्वोच्च व अंतिम अधिकारी था।
- सेनापति को छोड़कर सभी मंत्री – ब्राह्मण वर्ण के होते थे।
- प्रशासन में – अष्टप्रधान नामक – आठ मंत्री होते थे।

BOOSTER ACADEMY

❖ **अष्टप्रधान**

राजा को परामर्श देने हेतु आठ मंत्री

(1)**पेशवा :-** प्रधानमंत्री के रुप में कार्य

- ✓ राजा की अनुपस्थिति में राजा के कार्यों व दायित्वों का निर्वहन
- ✓ शिवाजी का प्रथम पेशवा – शामराज नीलकंठ रोजेकर

(2)**अमात्य / मजूमदार :-** वित्त मंत्री – राज्य की आय व्यय की जांच करता था। प्रथम अमात्य बालकृष्ण हनुमंते दीक्षित थे।

(3) **मंत्री / वाकियानवीस :-**

- ✓ राज्य की दैनिक गतिविधियों को लिपिबद्ध करना।
- ✓ दरबार की प्रतिदिन की कार्यवाही को लिपिबद्ध करना।
- ✓ राजा की सुरक्षा का कार्य
- ✓ जासूसी विभाग का अध्यक्ष

(4) **सचिव / शुरूनवीस -** राजकीय पत्र व्यवहार का कार्य – इसे चिटनिस भी कहा जाता था।

(5) **दबीर / सुमन्त :** विदेश मंत्री

(6) **सेनापति / सर-ए-नौबत :-** सेना की भर्ती, संगठन व अनुशासन बनाए रखना।

(7) **पंडितराव / सदर मुहतसिब :-** धार्मिक कार्यों व अनुदानों की देखरेख।

(8) **न्यायाधीश:-** राजा के बाद मुख्य न्यायाधीश

❑ **प्रांतीय प्रशासन :-**

- **दो प्रकार के प्रांत :-**

(1) **स्वराज्य :-** ऐसे प्रांत जहाँ शिवाजी का प्रत्यक्ष शासन था, जैसे. मराठावाडा, कोंकण, कर्नाटक का ज्यादातर भाग।

(2) **मुघताई (मुल्क – ए – कदीम) :-** वह प्रांत जहाँ शिवाजी का अप्रत्यक्ष शासन था, इन क्षेत्रों से केवल- **"चौथ व सरदेशमुखी"** वसूला जाता था।

❖ **शिवाजी का राज्य :- चार प्रांतों में विभाजित था।**

- **प्रत्येक प्रांत** – सर सूबेदार के अधीन होता था।

इकाई : प्रशासक

साम्राज्य – छत्रपति (राजा)

प्रांत :- सर सूबेदार

तालुका / परगना : मामलातदार

❑ **ग्राम प्रशासन**

- **पटेल (पाटिल) :-** गांव का सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी

  कार्य :- प्रशासनिक कार्य, भू-राजस्व, न्यायिक
- **कुलकर्णी :-** पटेल से नीचे का अधिकारी।

  कार्य :- गांव की भूमि का लेखा रखने का कार्य।
- **बारहबलूते :-** गांव में मांग व व्यवसायों की पूर्ति करने वाले (विभिन्न व्यवसाय करने वाले) वंशानुगत कारीगर।
- **बारहअलूते :-** गांव के सेवक

BOOSTER ACADEMY

❑ मराठा सेना

- दो प्रकार की सेना (1) पैदल सेना (2) घुड़सवार सेना
- मराठी में सेना को **"पाइक"** कहा जाता है।
- वर्षा ऋतु के दौरान सेना छावनी में ही रहती थी। (4 माह)
- दशहरा त्योंहार के बाद सेना अभियान पर निकलती थी। गुरिल्ला (छापामार) युद्ध पद्धति में दक्ष थे।
- **घुड़सवार सेना :- दो प्रकार के सैनिक :-**
  (1) बारगीर / पागा :- ऐसे सैनिक जिन्हें घोड़े व अस्त्र राज्य की ओर से प्राप्त। यह शाही व नियमित सेना थी।
  (2) सिलेदार :- ऐसे सैनिक जो घोड़े व अस्त्र स्वंय के लेकर आते थे। अनियमित सैनिक थे। इन्हें बारगीर से ज्यादा वेतन मिलता था।

मराठा प्रशासन

❑ दुर्ग व्यवस्था

- दुर्ग शिवाजी की शक्ति का प्रमुख स्त्रोत थे।
- शिवाजी विश्वासघात से बचने हेतु समान दर्जे के तीन व्यक्तियों को संयुक्त रुप से दुर्गों का प्रभारी नियुक्त करते थे, यह तीन अधिकरी निम्न थे।
  1. हवलदार 2. सर – ए – नौबत 3. सबनिस

Note :- हवलदार व सर – ए – नौबत के पद पर मराठा की नियुक्ति होती थी, जबकि सबनिस के पद पर ब्राह्मण की नियुक्ति की जाती थी।

❖ नौसेना व्यवस्था

- शिवाजी ने कोलाबा में एक जहाजी बेड़े का निर्माण करवाया, जिसकी दो कमाने थी।
- **पहली कमान दरिया सारंग, दूसरी कमान –** नायक के अधीन थी।
- नौसेना के प्रमुख को **"सरखेल"** कहा जाता था।
- मराठों ने गुरिल्ला (छापेमार युद्ध पद्धति) अहमदनगर के **"मलिक अम्बर" (शिवाजी का अग्रगामी)** से सीखी।
- दक्षिण भारत में इस युद्ध पद्धति को **"बार्गी गिरी"** कहा जाता है।

❑ राजस्व व्यवस्था

- अहमदनगर के मलिक अम्बर की **"रैय्यतवाड़ी"** पर आधारित थी।

Note :- शिवाजी ने 1679 ई. में अन्नाजी दत्तों को आदेश देकर अपने साम्राज्य की भूमि का विस्तृत सर्वेक्षण करवाया अत: अन्नाजी दत्तो को मराठा साम्राज्य का **"टोडरमल"** कहा जाता है।

- शिवाजी ने राजस्व निर्धारण के अपने साम्राज्य को 16 प्रांतों में विभाजित किया।
- जिले के प्रमुख अधिकारी को – **"देशमुख / देशपाण्डे"** कहा जाता था।
- **मीरासदार :** ऐसे लोग जिनका भूमि पर पैतृक अधिकार हो।

BOOSTER ACADEMY

❑ चौथ व सरदेशमुखी

- **अलग** – अलग इतिहासकारों ने चौथ कर के लिए अनेक मत दिए हैं जैसे :-
  "रानाडे" – तीसरी शक्ति के आक्रमण से सुरक्षा के बदले लिया जाने वाला कर।
  "यदुनाथ सरकार" – मराठा आक्रमण से बचने के बदले वसूला जाने वाला कर
- चौथ विजित क्षेत्रों से कुल उपज का ¼ भाग वसूला जाता था।
- **सरदेशमुखी :-** आय का 10 % अतिरिक्त कर के रूप में वसूला जाता था।

❖ न्याय प्रशासन

- **सर्वोच्च न्यायधीश** – स्वंय शिवाजी
- शिवाजी न्यायाधीश व पंडितराव की सहायता से निर्णय करते थे।
- **न्यायालय को** – धर्मसभा या **"हाजिर ए – मजलिस"** कहा जाता था।
- **न्यायाधीश** – ब्राह्मण होते थे जो स्मृतियों के आधार पर न्याय करते थे।

❑ शिवाजी के उत्तराधिकारी

- **शिवाजी की दो पत्नियाँ** (1) सोयराबाई (पटरानी) पुत्र : राजाराम
  (2) सईबाई – पुत्र – शम्भाजी
- **शिवाजी की मृत्यु के बाद** – सोयराबाई ने अपने पुत्र – राजाराम को शासक बनाया परन्तु सईबाई के पुत्र – शम्भाजी – पन्हाला किले की कैद से मुक्त होकर "हम्मीराव मोहिते" की सहायता से **"राजाराम"** को गद्दी से उतार **20-07-1680 ई.** को शसक बना।

❖ शम्भाजी (1680-89 ई.

- **पत्नी :** येशुबाई
- **पुत्र :** शाहू
- **शम्भाजी का सेनापति** – हम्मीर राव मोहिते
- **सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी** – कन्नौज का ब्राह्मण कवि कलश
- **औरंगजेब के साथ संघर्ष :-**
  - ✓ औरंगजेब ने शम्भाजी को **"नारकीय पिता का नारकीय पुत्र"** कहा।
  - ✓ **शम्भाजी ने औरंगजेब के विद्रोही पुत्र** – अकबर को शरण दी (1681)
  - ✓ फरवरी 1689 ई. में मुगल अमीर **"मुकर्रब खान"** ने शम्भाजी को संगमेश्वर नामक स्थान पर गिरफ्तार कर लिया।
  - ✓ औरंगजेब शम्भाजी के सम्मुख **"इस्लाम स्वीकारने"** की बात कही, शम्भाजी ने इनकार किया।
  - ✓ औरंगजेब ने **"शम्भाजी"** व **"कवि कलश"** को यातना देकर **11-03-1689 ई. को मार डाला।**
  - ✓ शम्भाजी की पत्नी व पुत्र को रायगढ़ के दुर्ग में कैद कर लिया।
- **राजाराम (1689-1700 ई.)**
  - ✓ राजाराम स्वंय को शाहू का प्रतिनिधि मानते थे, अत: अपने आप को राजा घोषित नहीं।

BOOSTER ACADEMY

- ✓ **राज्याभिषेक :** मराठा मंत्रियों द्वारा **"रायगढ़"** के दुर्ग में।
- ✓ **1699 ई.** राजाराम ने **"सत्तारा"** को मराठों की राजधानी बनाया।
- ✓ **1689 ई. "प्रतिनिधी"** नामक नवीन पद सृजित किया, अष्टप्रधान ने मंत्रियों की संख्या बढ़कर 9 हो गई।

❖ शिवाजी द्वितीय व ताराबाई (1700 ई. 1707 ई)

- 1700 ई. राजाराम की मृत्यु – विधवा रानी **"ताराबाई"** ने अपने 4 वर्षीय पुत्र का शिवाजी II के नाम से राज्याभिषेक कर मुगलों के साथ संघर्ष जारी रखा।

❖ शाहू (1707-1749 ई.)

- **शम्भाजी का पुत्र**
- **शाहू का लालन –** पालन – औरंगजेब की पुत्री – जीनतुनिस्सा द्वारा किया गया।
- शाहू औरंगजेब को पिताजी कहकर संबोधित करता था।
- औरंगजेब ने शाहू को **"राजा"** की उपाधि तथा 7000 का मनसब प्रदान किया।
- **औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्र – "आजमशाह"** ने जुल्फीकार खाँ की सलाह पर मराठा साम्राज्य में फूट डालने हेतु **"शाहू"** को कैद से मुक्त किया।

❑ शाहू के अन्य कार्य :-

- **1708 ई.** में **सेनाकर्ते** (सेना का व्यवस्थापक) नामक नवीन पद सृजित किया व इस पद पर बालाजी विश्वनाथ को नियुक्त किया।
- **1713 ई.** में बालाजी विश्वनाथ को **"पेशवा"** के पद पर नियुक्त किया।
- **शाहू का शासनकाल –** पेशवाओं का काल कहलाता है।
- **शाहू नि:संतान था अत :-** ताराबाई के पौत्र – राजाराम II को अपना उत्तराधिकार घोषित किया – **1749 ई.**

❑ पेशवा काल

❖ बालाजी विश्वनाथ :- (1713 ई – 1720 ई.)

- **1708 :** शाहू ने बालाजी विश्वनाथ को **"सेनाकर्ते"** के पद पर नियुक्त किया।
- **1713 :** शाहू ने बालाजी विश्वनाथ को अपना प्रथम पेशवा बनाया।

❖ मराठा – मुगल संधि (दिल्ली की संधि)

- **कब :-** 1719 ई.
- **किसके मध्य :** बालाजी विश्वनाथ व मुगल सूबेदार सैय्यद हुसैन।
- **प्रभाव : मराठा –** मुगल क्षेत्राधिकार निर्धारित।
- **शर्ते :-** 1.शाहू का स्वराज्य क्षेत्र में राजस्व वसूली का अधिकार मान लिया गया।
  2. मराठों को दक्कन के 6 सूबे प्राप्त हुए।

BOOSTER ACADEMY

- स्वराज्य के बदले शाहू मुगलों की सहायता हेतु 15000 सैनिक रखेगा।
- चौथ व सरदेशमुखी के बदले मुगल क्षेत्रों में लूटमार नहीं

Note- इस संधि को मुगल बादशाह **"रफीउद्दरजात"** ने मान्यता प्रदान की।

Note- इतिहासकार **"रिचर्ड टेम्पेल ने"** **"इस मुगल-मराठा संधि को"** मराठा साम्राज्य का मैग्नाकार्टा (अधिकार पत्र) कहा।

अन्य :- (1) बालाजी विश्वनाथ ने **"मराठा राज्य संघ"** की स्थापना की।

(2) बालाजी विश्वनाथ ने अपने परिवार हेतु **"पेशवा का पद वंशानुगत"** बनाया।

❖ बाजीराव प्रथम (1720-1740 ई.)

- बालाजी विश्वनाथ के पुत्र थे।
- इन्हें **"लड़ाकू पेशवा"** कहा जाता था।
- 1720 ई. में बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के बाद शाहू ने अपना पेशवा बनाया।
- बाजीराव प्रथम का काल **"मराठा शक्ति का चरमोत्कर्ष काल"** कहलाता है।
- इन्होंने मराठा शक्ति को उत्तर भारत में विस्तार करने की नीति अपनाई।
  नारा : - **"अटक से कटक तक का भारत हमारा"**
- बाजीराव प्रथम ने मुगलों हेतु कहा कि **"हमें इस जर्जर होते वृक्ष के तने पर प्रहार करना चाहिए, शाखाएँ तो स्वयं ही गिर जाएगी।"**
- शाहू ने बाजीराव प्रथम को **"योग्य पिता का योग्य पुत्र कहा।"**
- 1739 ई. बाजीराव प्रथम ने पुर्तगालियों से साल्सेट व बसीन के क्षेत्र छीन लिया।

❖ अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- बाजीराव प्रथम ने **"हिंदू पादशाही"** का आदर्श स्थापित किया।
- **बाजीराव प्रथम की रखैल** – मस्तानी
- बाजीराव प्रथम को वृहद महाराष्ट्र की स्थापना करने का श्रेय जाता है।
- 1750 ई. तक मराठा राज्य के नेतृत्व में मराठा राज्य संघ बन गया।
- **मराठा संघ निम्न 5 सदस्य थे :-**

(1) पूना का पेशवा
(2) नागपुर के भोंसले
(3) बड़ौदा के गायकवाड़
(4) ग्वालियर के सिंधिया
(5) इंदौर के होल्कर

BOOSTER ACADEMY

❖ बालाजी बाजीराव (1740-1761 ई.)

- बाजीराव प्रथम का पुत्र था।
- बालाजी बाजीराव **"नाना साहब"** के नाम से प्रसिद्ध था, इन्हें बालाजी II भी कहा जाता था।
- मराठों का चरमोत्कर्ष काल व पतन का प्रारंभ इसी के काल को माना जाता है।

❖ मुगल – मराठा II संधि

- **कब : 1752 ई.**
- किसके मध्य :- बालाजी बाजीराव व मुगल बादशाह अहमदशाह के मध्य।
- इस संधि द्वारा मराठों को सम्पूर्ण देश में **"चौथ व सरदेशमुखी वसूली"** का अधिकार मिल गया।
- इसके बदले में पेशवा ने मुगलों को जरूरत पड़ने पर सैनिक सहायता देने का वचन।

❖ पानीपत का तृतीय युद्ध :- (अहमदशाह अब्दाली v/s मराठा)

- **कब :- 14-01-1761 ई.**
- कारण : रघुनाथराव मराठा साम्राज्य का अटक तक विस्तार करना चाहते थे।
- **नेतृत्व :- वास्तविक रूप से नेतृत्व** – सदाशिव भाऊ ने किया।
- मराठे युद्ध में पराजित हुए।
- बालाजी बाजीराव इस पराजय को सहन नही कर पाए, **23-06-1761 को उनकी मृत्यू हो गई।**
- काशीनाथ पंडित ने इस युद्ध को अपनी आँखों से देखा।

❑ माधवराव प्रथम (1761-1772)

- माधवराव बालाजी बाजीराव का अल्पवयस्क पुत्र था, जिसे अपने चाचा रघुनाथराव का संरक्षण मिला।
- यह अंतिम महान पेशवा था, जिसकी अकाल मृत्यु हो गई, इसी के साथ मराठा शक्ति दूर्बल हो गई।

❑ नारायण राव (1772-73) :-

- माधवराव का छोटा भाई।
- चाचा रघुनाथराव ने पेशवा बनने की चाह में नारायण राव की हत्या कर दी।

❑ माधवराव नारायण (1774-1796) :-

- माधवराव द्वितीय भी कहा जाता है।
- बाराभाई परिषद ने माधवराव नारायण को गद्दी पर बैठाया।
- वास्तविक शासन नाना फड़नवीस के अधीन था।
- नाना फड़नवीस को **मराठा मैक्यावली** भी कहते है।
- 1796 में नाना फड़नवीस से दु:खी हो कर माधव नारायण ने आत्महत्या कर ली।

BOOSTER ACADEMY

❑ बाजीराव द्वितीय (1796-1818) :-

- राघोबा का पुत्र तथा अन्तिम पेशवा था।
- 1802 में अंग्रेजी से बसीन की संधि की।
- अंग्रेजों ने पेशवा पद समाप्त कर इन्हें वार्षिक पेशंन देना प्रारम्भ किया।
- बाजीराव II के समय पाँच मराठा केन्द्र स्थापित हुए।
  (1) ग्वालियर – सिंधिया
  (2) बड़ौदा – गायकवाड़
  (3) इन्दौर – होल्कर
  (4) नागपुर – भौंसले
  (5) पूना – पेशवा

❑ पेशवाओं का प्रशासन

- पेशवाओं का केन्द्र पूना था।
- पूना के सचिवालय को **"हुजुर ए-दफ्तर"** कहते थे।
- प्रांत को सूबा तथा इसका प्रमुख सूबेदार होता था।
- प्रत्येक जिले में कारकून होता था जो घटनाओं की जानकारी रखता था।

❖ अन्य :-

- **मराठा इतिहास - "बखार"**
- **सभासद – आख्यायिका**
- **मराठी शौर्य कविताएं – "पावडाओ"**
- **मराठा लेखो में लिपि – "मोडी लिपि"**

आंग्ल मराठा युद्ध

❖ प्रथम आग्ल-मराठा युद्ध

- **कारण – सूरत की संधि**
- **7 मार्च 1775 ई.**
- रघुनाथराव (राघोबा) + गवर्नर होर्नबी (बंबई प्रेसीडेन्सी)
- **शर्ते-** राघोबा ने अंग्रेज सैनिक सहायता के बदले बंबई प्रसीडेन्सी को सालसेट, बसीन व थाना क्षेत्र देन का वादा किया।
- राघोबा को बम्बई प्रेसीडेन्सी की सहायता मिलने पर विरोधी (पेशवा युद्ध) नाराज हुए और अंग्रेजो के विरुद्ध युद्ध प्रारम्भ हुआ।
- कलकत्ता / बंगाल सरकार ने सूरत संधि को मान्यता नही दी।

BOOSTER ACADEMY

❖ अर्रा का युद्ध :-

- 18 मई 1775 ई.
- मराठा पेशवा गुट v/s बॉम्बे प्रेसीडेन्सी (गवर्नर कीटिंग) (पराजित)

❖ पुरन्दर की संन्धि

- 1 मार्च 1776 ई.
- नाना फड़नवीस / पेशवा गुट + कलकत्ता सरकार (वॉरेन हेस्टिगस)
  (राघोबा विरोधी गुट) दूत – कर्नल अपटन
- सालसेट कंपनी के पास रहेगा।
- कंपनी राघोबा का पक्ष नहीं लेगी।

Note:- लेकिन बॉम्बे प्रेसीडेंसी ने पुरन्दर संधि को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और राघोबा की मदद जारी रखी। इसलिए युद्ध भी जारी रहा।

❖ बड़गाँव की संधि –

- 29 जनवरी 1779 ई.
- पेशवा + बॉम्बे प्रेसीडेन्सी
- बंगाल प्रेसीडेन्सी ने संधि को मानने से इंकार कर दिया।

Note :- अंत: में 1782 ई. में महादजी सिंधिया की मदद से सालबाई की संधि हुई।

❖ सालबाई की संधि

- 17 मई 1782 ई.
- महादजी सिंधिया की मध्यस्थता
  पेशवा + बंबई प्रेसीडेन्सी (डेविड एड़रसन)
- इस संधि से प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध समाप्त हुआ।

शर्तें :-

- सालसेट व भडौंच अंग्रेजो के पास
- अंग्रेजो ने माधव नारायण को पेशवा माना व राघोबा को पेंशन देने पर सहमत हुए।
- यमुना नदी के पश्चिमी क्षेत्र में महादजी सिंधिया का नियंत्रण स्वीकार किया।

❖ द्वितीय आंग्ल – मराठा युद्ध

- 1803-1805 ई.
- दौलतराव सिंधिया तथा जसवन्तराव होल्कर दोनों पूना में अपना प्रभाव बढाने की कोशिश कर रहे थे। चूंकि पेशवा का पद कमजोर हो चुका था।
- बाजीराव II व दौलतराव सिंधिया ने मिलकर जसवन्तराव होल्कर के भाई बिठ्ठुजी की पूना में हत्या कर दी।
- जसवन्तराव होल्कर ने पूना पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया।

BOOSTER ACADEMY

❖ बसीन की संधि

- 31 दिसम्बर 1802
- पेशवा बाजीराव द्वितीय + अंग्रेज (बंबई प्रसीडेन्सी)
- अंग्रेजों का संरक्षण पेशवा ने स्वीकार किया।
- पेशवा के खर्चे पर अंग्रेजी सेना द्वारा सुरक्षा होगी।
- पेशवा की विदेश नीति अंग्रेजो के अधीन।
- ताप्ती, नर्मदा, के मध्य का क्षेत्र तथा तुंगभद्रा के आसपास का क्षेत्र अंग्रेजो को सौंप दिया।

Note :- मराठो के लिए यह अपमानजनक संधि थी जिसके कारण द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध हुआ।

अन्य संधियाँ

- देवगांव की संधि – 1803 ई. (रघुजी भौसले + अंग्रेज)
- सुरजी-अर्जन गाँव की संधि – 1803 ई. (दौलतराव सिंधिया+अंग्रेज)
- राजपुर घाट की संधि – 1805 ई. (जसवन्त राव होल्कर + जॉर्ज बार्ले)

❖ तृतीय आंग्ल – मराठा युद्ध

- 1817-1818 ई.

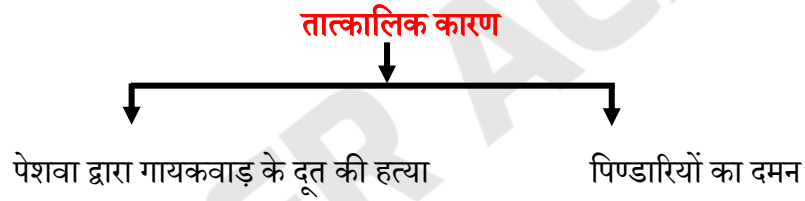

- तीसरे युद्ध में गवर्नर जनरल – लॉर्ड हेस्टिंग
- हेस्टिंग ने पिण्डारियों के दमन के लिए मराठाओं पर दबाव डाला।
- इसी कारण मराठा व अंग्रेजो के मध्य युद्ध शुरू हो गया।
- इस युद्ध में मराठे निर्णायक रूप से पराजित हुए।
- मराठा संघ को भंग कर दिया गया। पेशवा का पद समाप्त कर दिया।
- बाजीराव II को बिठुर (U.P.) की जागीर व पेंशन दी गई।
- सतारा रियासत की पुन: स्थापित की गयी तथा छत्रपति शिवाजी के वंशज प्रतापसिंह को यहाँ का राजा बनाया गया।

BOOSTER ACADEMY